REPORT RESUMES

ED 012 808 48 AA 000 168

A PREMCHAND READER.

BY- ZIDE, N.H. AND OTHERS

CHICAGO UNIV., ILL., SOUTH ASIA LANG. AND AREA CTR

REPORT NUMBER NDEA-VI-220 PUB DATE MAY 62

EDRS PRICE MF-$1.25 HC-$12.44 311P.

DESCRIPTORS- *HINDI, *SHORT STORIES, *READING MATERIALS, *CULTURAL EDUCATION, PREMCHAND

SHORT STORIES IN HINDI BY THE WRITER PREMCHAND HAVE BEEN COLLECTED INTO A VOLUME OF READINGS SUITABLE FOR 2D-YEAR STUDENT USE. THESE STORIES HAVE BEEN ARRANGED ROUGHLY IN THE ORDER OF THE DIFFICULTY OF THE UNFAMILIAR VOCABULARY CONTAINED IN THE STORIES. THE LAST STORY WAS INCLUDED IN SPITE OF THE FACT THAT IT CONTAINS A GREAT DEAL OF UNFAMILIAR AND SPECIALIZED URDU VOCABULARY. THE GLOSSARY INCLUDES ALL VOCABULARY CONSIDERED NONELEMENTARY. THESE NINE STORIES ARE IN NO SENSE REPRESENTATIVE OF PREMCHAND'S OUTPUT. THEY WERE SELECTED ON THE BASIS OF SEVERAL CONFLICTING CRITERIA--(1) THEIR LITERARY QUALITY AS JUDGED BY THE EDITORS AND BY SOME INDIAN CRITICS, (2) THEIR DEPICTION OF A VARIETY OF ASPECTS OF INDIAN LIFE, (3) TO A SMALLER DEGREE, THEIR VARIETY OF STYLE AND ATTITUDES ON THE PART OF THE NARRATOR, AND (4) THE ABSENCE OF ANY GREAT DIFFICULTY IN STYLE OR CONTENT FOR THE 2D-YEAR STUDENT. (TC)

220

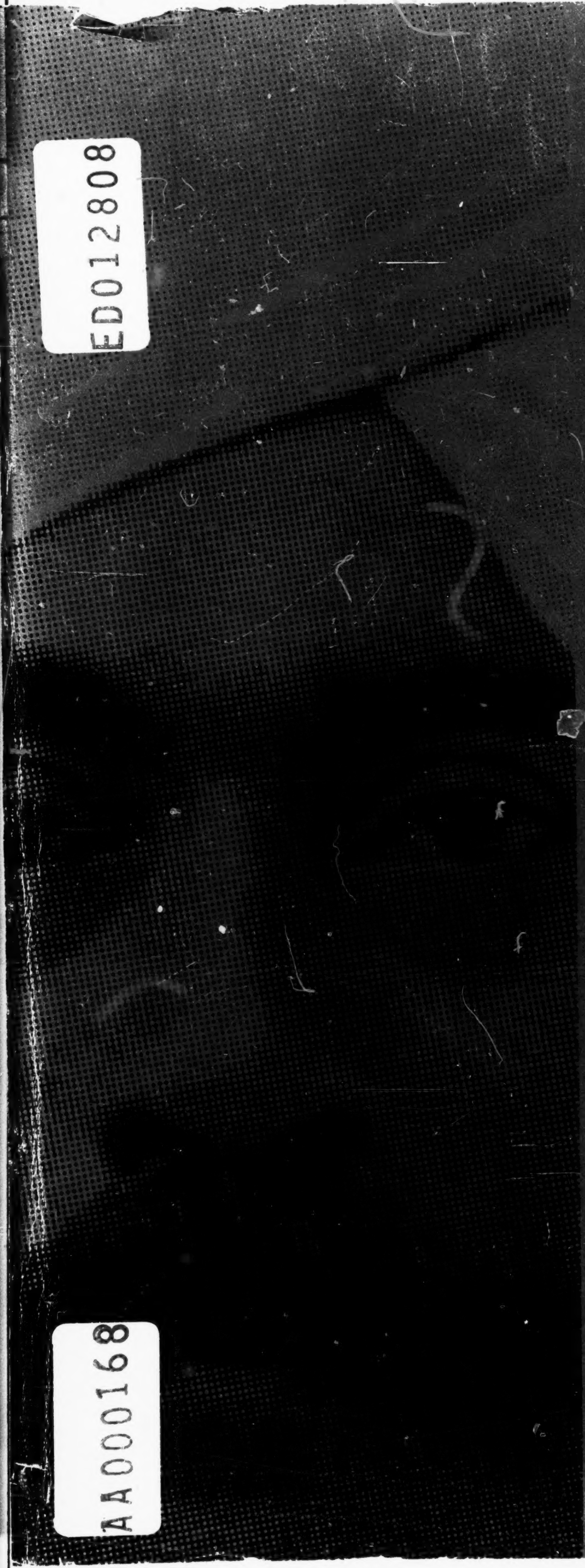

ED012808

A Premchand Reader

by Norman H. Zide, Colin P. Masica,
K. C. Bahl, and A. C. Chandola

Nine short stories arranged in order
of language difficulty, for use by
the second-year student of Hindi.

Asian Language Series

East-West Center Press – Honolulu

$5.00

AA000168

A Premchand Reader

By

N. H. ZIDE

COLIN P. MASICA

K. C. BAHL

A. C. CHANDOLA

Published for
the South Asia Language and Area Center, University of Chicago
by EAST-WEST CENTER PRESS Honolulu

This volume is one in a series of experimental language textbooks in South Asian Languages written and prepared in the South Asia Language and Area Center at the University of Chicago under contract with the Office of Education, Department of Health, Education, and Welfare, Washington, D.C. The East-West Center Press distributes these volumes for the South Asia Language and Area Center.

© Copyright by the East-West Center Press
University of Hawaii
Library of Congress Catalog Card Number: 65-27254
Printed in the United States of America

PREFACE

Premchand, probably the best short story writer of his generation in Hindi (and Urdu), was born in 1880 and died in 1936. Maansarovar (in eight volumes), the standard collection in Hindi of his short stories--which is not complete--contains about two hundred stories. It is from Maansarovar and the late collection, Kafan, that the stories in this volume are taken.

These nine stories are in no sense representative of Premchand's output; they have been selected on the basis of several conflicting criteria: their literary quality as judged by the editors and by some Indian critics, their depiction of a variety of aspects of Indian life (and, to a smaller degree, variety of style and attitudes on the part of the narrator), and the absence of any great difficulty in style or content for the second-year student.

These stories are arranged roughly in order of difficulty, i.e., difficulty because of unfamiliar vocabulary; the last story was included in spite of the fact that it contains a great deal of unfamiliar and specialized Urdu vocabulary.

The glossary includes all vocabulary considered nonelementary. Since there is no word count based on extensive and valid sampling of Hindi prose known to us, we have defined "nonelementary" arbitrarily, after an examination of the vocabulary used in this country in first-year Hindi and therefore presupposed as familiar to second-year Hindi students. Where there was any question as to whether or not a word would be familiar to second-year students, it was included in the glossary.

The stories in this volume provide the student with a good, broad sample of modern Hindi prose--in respect to literary Hindi, somewhat premodern--with a good representation of both narrative and conversational language, but with little difficult or specialised matter; Premchand was no fine or difficult stylist, and such stories as contained a good deal of dialect material have not been included.

Assistance in preparing this reader, particularly by D. P. S. Dwarikesh and C. M. Naim, by John Roberts, and by our typists, Mrs. Vimla Bahl and Miss Mira Bhandari, is gratefully acknowledged.

N. H. Zide
Colin P. Masica
K. C. Bahl
A. C. Chandola

The University of Chicago
May, 1962

CONTENTS

	Page
(१) दो बैलों की कथा	1
(२) बड़े भाई साहब	21
(३) दूध का दाम	38
(४) मिस पद्मा	58
(५) नशा	68
(६) मेरी पहली रचना	81
(७) प्रेम की होली	90
(८) कफ़न	99
(९) शतरज के खिलाड़ी	111
Introduction to the Glossary	127
List of Abbreviations	131
Glossary	133

दो बैलों की कथा

जानवरों में गधा सबसे ज्यादा बुद्धिहीन समझा जाता है । हम जब किसी आदमी को पहले दर्जे का बेवकूफ कहना चाहते हैं, तो उसे गधा कहते हैं । गधा सचमुच बेवकूफ है, या उसके सीधेपन, उसकी निरापद सहिष्णुता ने उसे यह पदवी दे दी है, इसका निश्चय नहीं किया जा सकता । गायें सींग मारती हैं, ब्यायी हुई गाय तो अनायास ही सिंहनी का रूप धारण कर लेती है । कुत्ता भी बहुत गरीब जानवर है, लेकिन कभी-कभी उसे भी क्रोध आ ही जाता है; किन्तु गधे को कभी क्रोध करते नहीं सुना, न देखा । जितना चाहो गरीब को मारो, चाहे जैसी खराब, सड़ी हुई घास सामने सामने डाल दो,[१] उसके चेहरे पर कभी असन्तोष की छाया भी न दिखायी देगी । वैशाख में चाहे एकाध बार कुलेल कर लेता हो; पर हमने तो उसे कभी खुश होते नहीं देखा । उसके चेहरे पर एक स्थायी विषाद स्थायी रूप से छाया रहता है । सुख-दु:ख, हानि-लाभ, किसी भी दशा में उसे बदलते नहीं देखा । ऋषियों-मुनियों के जितने गुण हैं, वे सभी उसमें पराकाष्ठा को पहुंच गये हैं; पर आदमी उसे बेवकूफ कहता है । सद्गुणों का इतना अनादर कहीं नहीं देखा । कदाचित् सीधापन संसार के लिए उपयुक्त नहीं है । देखिए न, भारतवासियों की अफ्रीका में क्यों दुर्दशा हो रही है ? क्यों अमेरिका में उन्हें घुसने नहीं दिया जाता ? बेचारे शराब नहीं पीते, चार पैसे कुसमय के लिए बचाकर रखते हैं, जी तोड़कर काम करते हैं, किसी से लड़ाई-झगड़ा नहीं करते, चार बातें सुनकर गम खा जाते हैं । फिर भी बदनाम हैं । कहा जाता है, वे जीवन के

आदर्श को नीचा करते हैं । अगर वे भी ईंट का जवाब पत्थर से देना सीख जाते, तो शायद सभ्य कहलाने लगते । जापान की मिसाल सामने है । एक ही विजय ने उसे संसार की सभ्य जातियों में गण्य बना दिया ।

लेकिन गधे का एक छोटा भाई और भी है, जो उससे कुछ ही कम गधा है और वह है 'बैल' । जिस अर्थ में हम गधा का प्रयोग करते हैं । कुछ उसीसे मिलते-जुलते अर्थ में[3] 'बछिया के ताऊ' का भी प्रयोग करते हैं, कुछ लोग बैल को शायद बेवकूफों में सर्वश्रेष्ठ कहेंगे; मगर हमारा विचार ऐसा नहीं है । बैल कभी-कभी मारता भी है, कभी-कभी अड़ियल बैल भी देखने में आता है । और भी कई रीतियों से वह अपना असंतोष प्रकट कर देता है; अतएव उसका स्थान गधे से नीचा है[3] ।

झूरी काछी के दोनों बैलों के नाम थे हीरा और मोती । दोनों पछाईं जाति के थे--देखने में सुन्दर, काम में चौकस, डील ऊंचे । बहुत दिनों साथ रहते-रहते दोनों में भाई चारा हो गया था । दोनों आमने-सामने या आस-पास बैठे हुए एक दूसरे से मूक-भाषा में विचार-विनिमय करते थे । एक दूसरे के मन की बात कैसे समझ जाता था, हम नहीं कह सकते । अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी, जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करनेवाला मनुष्य वंचित है । दोनों एक दूसरे को चाटकर और सूंघकर अपना प्रेम प्रकट करते, कभी-कभी दोनों सींग भी मिला लिया करते थे--विग्रह के भाव से नहीं, केवल विनोद के भाव से, आत्मीयता के भाव से, जैसे दोस्तों में घनिष्ठता होते ही धौल-धप्पा होने लगता है । इस के बिना दोस्ती कुछ फुसफुसी, कुछ हलकी सी रहती है, जिसपर ज्यादा विश्वास नहीं किया जा सकता । जिस वक्त ये दोनों बैल हल या गाड़ी में जोत दिये जाते और गरदन हिला-हिलाकर चलते, उस वक्त हरएक की यही चेष्टा होती कि ज्यादा-से-ज्यादा बोझ मेरी ही गरदन पर रहे । दिन-भर के बाद[4] दोपहर या सन्ध्या को दोनों खुलते, तो एक दूसरे को चाट-चूटकर अपनी थकन मिटा लिया करते । नांद में खली भूसा पड़

जाने के बाद दोनों साथ उठते, साथ नांद में मुंह डालते और साथ ही बैठते थे । एक मुंह हटा लेता, तो दूसरा भी हटा लेता था ।

संयोग की बात, झूरी ने एक बार गोईं को ससुराल भेज दिया । बैलों को क्या मालूम, वे क्यों भेजे जा रहे हैं । समझे मालिक ने हमें बेच दिया[५] । अपना यों बेचा जाना उन्हें अच्छा लगा या बुरा, कौन जाने, पर झूरी के साले गया को घर तक गोईं ले जाने में दांतों[६] पसीना आ गया । पीछे से हांकता तो दोनो दायें-बायें भागते ; पगहिया पकड़कर आगे से खींचता तो दोनों पीछे को जोर लगाते । मारता, तो दोनों सींग नीचे करके हुंकारते । अगर ईश्वर ने उन्हें वाणी दी होती, तो झूरी से पूछते--तुम हम गरीबों को क्यों निकाल रहे हो ? हमने तो तुम्हारी सेवा करने में कोई कसर नहीं उठा रखी । अगर इतनी मेहनत से काम न चलता था और काम ले लेते[७] । हमें तो तुम्हारी चाकरी में मर जाना कबूल था । हमने कभी दाने-चारे की शिकायत नहीं की । तुमने जो कुछ खिलाया, वह सिर झुकाकर खा लिया, फिर तुमने हमें इस जालिम के हाथ[८] क्यों बेच दिया ?

सन्ध्या-समय दोनों बैल अपने नये स्थान पर पहुंचे । दिन-भर के भूखे थे ; लेकिन जब नांद में लगाये गये, तो एक ने भी उसमें मुंह न डाला । दिल भारी हो रहा था । जिसे उन्होंने अपना घर समझ रखा था, वह आज उनसे छूट गया था । यह नया घर, नया गांव, नये आदमी, उन्हें बेगाने-से लगते थे ।

दोनों ने अपनी मूक-भाषा में सलाह की, एक दूसरे को कनखियों से देखा और लेट गये । जब गांव में सोता पड़ गया, तो दोनों ने जोर मारकर पगहे तुड़ा डाले और घर की तरफ चले । पगहे बहुत मजबूत थे । अनुमान न हो सकता था कि कोई बैल उन्हें तोड़ सकेगा ; पर इन दोनों में इस समय दूनी शक्ति आ गयी थी । एक-एक झटके में रस्सियां टूट गयीं ।

झूरी प्रात:काल सोकर उठा[९], तो देखा कि दोनों बैल चरनी पर खड़े हैं । दोनों की गरदनों

में आधा-आधा गरांव लटक रहा है । घुटनों तक पांव कीचड़ से भरे हैं और दोनों की आंखों में विद्रोहमय स्नेह झलक रहा है ।

झूरी बैलों को देखकर स्नेह से गद्‌गद्‌ हो गया । दौड़कर उन्हें गले लगा लिया । प्रेमालिंगन और चुम्बन का वह दृश्य बड़ा ही मनोहर था ।

घर और गाव के लड़के जमा हो गये और तालियां बजा-बजाकर उनका स्वागत करने लगे । गांव के इतिहास में यह घटना अभूत-पूर्व न होने पर भी महत्त्वपूर्ण थी । बाल-सभा ने निश्चय किया दोनों पशु-वीरों को अभिनन्दनपत्र देना चाहिये । कोई अपने घर से रोटियां लाया, कोई गुड़, कोई चोकर, कोई भूसी ।

एक बालक ने कहा--ऐसे बैल किसी के पास न होंगे ।

दूसरे ने समर्थन किया--इतनी दूर से दोनों अकेले चले आये ।

तीसरा बोला--बैल नहीं हैं वे, उस जनम के आदमी हैं ।

इसका प्रतिवाद करने का किसी को साहस न हुआ ।

झूरी की स्त्री ने बैलों को द्वार पर देखा, तो जल उठी । बोली-- कैसे नमकहराम बैल हैं कि एक दिन वहां काम न किया ; भाग खड़े हुए ।

झूरी अपने बैलों पर यह आक्षेप सुन न सका -- नमकहराम क्यों हैं ? चारा दाना न दिया होगा, तो क्या करते ?

स्त्री ने रोब के साथ कहा--बस, तुम्हीं तो बैलों को खिलाना जानते हो और तो सभी पानी पिला-पिलाकर रखते हैं[१०] ।

झूरी ने चिढ़ाया--चारा मिलता तो क्यों भागते ?

स्त्री चिढ़ी--भागे इसलिए कि वे लोग तुम जैसे बुद्धुओं की तरह बैलों को सहलाते नहीं ।

खिलाते हैं, तो रगड़कर जोतते भी हैं । ये दोनों ठहरे कामचोर, भाग निकले[११] । अब देखूं, कहां से खली और चोकर मिलता है । सूखे भूसे के सिवा कुछ न दूंगी, खायें चाहे मरें[१२] ।

वही हुआ । मजूर को कड़ी ताकीद कर दी गई कि बैलों को खाली सूखा भूसा दिया जाय ।

बैलों ने नांद में मुंह डाला, तो फीका-फीका । न कोई चिकनाहट, न कोई रस क्या खायं[१३] ? आशा-भरी आंखों से द्वार की ओर ताकने लगे ।

झूरी ने मजूर से कहा--थोड़ी-सी खली क्यों नहीं डाल देता बे ?

‘मालकिन मुझे मार ही डालेंगी[१४] ।’

‘चुराकर डाल आ ।’

‘ना दादा, पीछे से तुम भी उन्हीं की सी कहोगे[१५] ।’

२

दूसरे दिन झूरी का साला फिर आया और बैलों को ले चला । अबकी उसने दोनों को गाड़ी में जोता ।

दो-चार बार मोती ने गाड़ी को सड़क की खाई में गिराना चाहा पर हीरा ने संभाल लिया । वह ज्यादा सहनशिल था ।

संध्या-समय घर पहुंचकर उसने दोनों को मोटी रस्सियों से बांधा, और कल की शरारत का मजा चखाया । फिर वही सूखा भूसा डाल दिया । अपने दोनों बैलों को खली, चूनी सब कुछ दी ।

दोनों बैलों का ऐसा अपमान कभी न हुआ था । झूरी इन्हें फूल की छड़ी से भी न छूता था । उसकी टिटकार पर दोनों उड़ने लगते थे । यहां मार पड़ी । आहत-सम्मान की व्यथा तो थी ही, उसपर[१६] सूखा भूसा नांद की तरफ आंखें तक न उठायी[१७] ।

दूसरे दिन गया ने बैलों को हल में जोता, पर इन दोनों ने जैसे पांव उठाने की कसम खा ली

थी । वह मारते-मारते थक गया ; पर दोनों ने पांव न उठाया । एक बार जब उस निर्दयी ने हीरा की नाक में खूब डण्डे जमाये, तो मोती का गुस्सा काबू के बाहर हो गया । हल लेकर भागा। हल, रस्सी, जुआ, जोत, सब टूट-टाटकर बराबर हो गया[१८] । गले में बड़ी-बड़ी रस्सियां न होतीं, तो दोनों पकड़ाई में न आते ।

हीरा ने मूक-भाषा में कहा--भागना व्यर्थ है ।

मोती ने उत्तर दिया--तुम्हारी तो इसने जान ही ले ली थी[१९] ।

'अबकी बड़ी मार पड़ेगी ।'

'पड़ने दो, बैल का जन्म लिया है, तो मार से कहां तक बचेंगे ?'

'गया दो आदमियों के साथ दौड़ा आ रहा है । दोनों के हाथों में लाठियां हैं ।'

मोती बोला--कहो तो दिखा दूं कुछ मजा मैं भी[२०] । लाठी लेकर आ रहा है ।

हीरा ने समझाया--नहीं भाई! खड़े हो जाओ[२१] ।

'मुझे मारेगा, तो मैं भी एक-दो को गिरा दूंगा !'

'नहीं । हमारी जाति का यह धर्म नहीं है ।'

मोती दिल में ऐंठकर रह गया । गया आ पहुंचा और दोनों को पकड़कर ले चला । कुशल हुई कि उसने इस वक्त मारपीट न की, नहीं तो मोती भी पलट पड़ता । उसके तेवर देखकर गया और उसके सहायक समझ गये कि इस वक्त टाल जाना ही मसलहत है ।

आज दोनों के सामने फिर वही सूखा भूसा लाया गया । दोनों चुपचाप खड़े रहे । घर के लोग भोजन करने लगे । उस वक्त छोटी-सी लड़की दो रोटियां लिये निकली, और दोनों के मुंह में देकर चली गयी । उस एक रोटी से इनकी भूख तो क्या शान्त होती ; पर दोनों के हृदय को मानो भोजन मिल गया । यहां भी किसी सज्जन का वास है । लड़की भैरो की थी । उसकी मां

मर चुकी थी । सौतेली मां उसे मारती रहती थी, इसलिए इन बैलों से उसे एक प्रकार की आत्मीयता हो गयी थी ।

दोनों दिन-भर जोते जाते, डण्डे खाते, अड़ते । शाम को थान पर बांध दिये जाते, और रात को वही बालिका उन्हें दो रोटियां खिला जाती । प्रेम के इस प्रसाद की वह बरकत थी कि[२२] दो-दो गाल सूखा भूसा खाकर भी दोनों दुर्बल न होते थे, मगर दोनों की आंखों में, रोम-रोम में विद्रोह भरा हुआ था ।

एक दिन मोती ने मूक-भाषा में कहा--अब तो नहीं सहा जाता, हीरा!

'क्या करना चाहते हो ?'

'एकाध को सींगों पर उठाकर फेंक दूंगा ।'

'लेकिन जानते हो, वह प्यारी लड़की, जो हमें रोटियां खिलाती है, उसी की लड़की है, जो इस घर का मालिक है । वह बेचारी अनाथ न हो जायगी ?'

'तो मालकिन को न फेंक दूं । वही तो उस लड़की को मारती है ।'

'लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूल जाते हो ।'

'तुम तो किसी तरह निकलने ही नहीं देते । तो बताओ, आज तुड़ाकर भाग चलें ।'

'हां, यह मैं स्वीकार करता, लेकिन इतनी मोटी रस्सी टूटेगी कैसे ?'

'इसका एक उपाय है । पहले रस्सी को थोड़ा-सा चबा लो । फिर एक झटके में जाती है ।'

रात को जब बालिका रोटियां खिलाकर चली गयी, तो दोनों रस्सियां चबाने लगे, पर मोटी रस्सी मुंह में न आती थी । बेचारे बार-बार जोर लगाकर रह जाते थे ।

सहसा घर का द्वार खुला और वही लड़की निकली दोनों सिर झुकाकर उसका हाथ चाटने लगे । दोनों की पूंछें खड़ी हो गयीं । उसने उनके माथे सहलाये और बोली--खोले देती हूं । चुपके

से भाग जाओ, नहीं तो यहां लोग मार डालेंगे । आज घर में सलाह हो रही है कि इनकी नाकों में नाथ डाल दी जाय ।

उसने गरांव खोल दिया, पर दोनों चुपचाप खड़े रहे ।

मोती ने अपनी भाषा में पूछा--अब चलते क्यों नहीं ?

हीरा ने कहा--चलें तो ; लेकिन कल इस अनाथ पर आफत आयेगी । सब इसी पर संदेह करेंगे । सहसा बालिका चिल्लायी--दोनों फूफावाले बैल भागे जा रहे है । ओ दादा! दादा! दोनों बैल भागे जा रहे हैं जल्दी दौड़ो ।

गया हड़बड़ाकर भीतर से निकला और बैलों को पकड़ने चला । वे दोनों भागे । गया ने पीछा किया । और भी तेज हुए । गया ने शोर मचाया । फिर गांव के कुछ आदमियों को भी साथ लेने के लिए लौटा । दोनों मित्रों को भागने का मौका मिल गया । सीधे दौड़ते चले गये । यहां तक कि मार्ग का ज्ञान न रहा[२३] । जिस परिचित मार्ग से आये थे, उसका यहां पता न था[२४] । नये-नये गांव मिलने लगे । तब दोनों एक खेत के किनारे खड़े होकर सोचने लगे, अब क्या करना चाहिए ।

हीरा ने कहा--मालूम होता है, राह भूल गये ।

'तुम भी बेतहाशा भागे । वहीं उसे मार गिराना था ।'

'उसे मार गिराते, तो[२५] दुनिया क्या कहती ? वह अपना धर्म छोड़ दे ; लेकिन हम अपना धर्म क्यों छोड़ें ?'

दोनों भूख से व्याकुल हो रहे थे । खेत में मटर खड़ी थी । चरने लगे रह-रहकर आहट ले लेते थे,[२६] कोई आता तो नहीं हैं ।

जब पेट भर गया, दोनों ने आजादी का अनुभव किया, तो मस्त होकर उछलने-कूदने लगे ।

पहले दोनों ने डकार ली । फिर सींग मिलाये और एक दूसरे को ठेलने लगे । मोती ने हीरा को कई कदम पीछे हटा दिया, यहां तक कि वह खाई में गिर गया । तब उसे भी क्रोध आया[२७] । संभलकर उठा और फिर मोती से भिड़ गया । मोती ने देखा--खेल में झगड़ा हुआ चाहता है, तो किनारे हट गया[२८] ।

३

अरे! यह क्या ? कोई सांड़ डौंकता चला आ रहा है । हां, सांड़ ही है । वह सामने आ पहुंचा । दोनों मित्र बगलें झांक रहे हैं[२९] । सांड़ पूरा हाथी है । उससे भिड़ना जान से हाथ धोना है; लेकिन भिड़ने पर भी तो जान बचती नहीं नजर आती । इन्हीं की तरफ आ भी रहा है । कितनी भंयकर सूरत है !

मोती ने मूक-भाषा में कहा--बुरे फंसे[३०] । जान बचेगी ? कोई उपाय सोचो ।

हीरा ने चिन्तित स्वर में कहा--[३१]अपने घमंड में भूला हुआ है । आरजू विनती न सुनेगा ।

'भाग क्यों न चलें ?'

'भागना कायरता है ।'

'तो फिर यहीं मरो । बन्दा तो नौ-दो ग्यारह होता[३२] ।'

'और जो दौड़ाये[३३] ?'

'तो फिर कोई उपाय सोचो जल्द !'

'उपाय यही है कि उस पर दोनों जनें एक साथ चोट करें ? मैं आगे से रगेदता हूं, तुम पीछे से रगेदो, दोहरी मार पड़ेगी, तो भाग खड़ा होगा । मेरी ओर झपटे, तुम बगल से उसके पेट में सींग घुसेड़ देना । जान जोखिम है; पर दूसरा उपाय नहीं ।'

दोनों मित्र जान हथेलियों पर लेकर लपके । सांड़ को भी संगठित शत्रुओं से लड़ने का तजरबा

न था । वह तो एक शत्रु से मल्लयुद्ध करने का आदी था । ज्योंही हीरा पर झपटा, मोती ने पीछे से दौड़ाया । सांड़ उसकी तरफ मुड़ा, तो हीरा ने रगेदा । सांड़ चाहता था कि एक-एक करके दोनों को गिरा ले ; पर ये दोनों भी उस्ताद थे । उसे यह अवसर न देते थे । एक बार सांड़ झल्लाकर हीरा का अन्त कर देने के लिए चला कि मोती ने बगल से आकर पेट में सींग भोंक दी । सांड़ क्रोध में आकर पीछे फिरा तो हीरा ने दूसरे पहलू में सींग चुभा दिया । आखिर बेचारा जख्मी होकर भागा, और दोनों मित्रों ने दूर तक उसका पीछा किया । यहां तक कि सांड़ बेदम होकर गिर पड़ा । तब दोनों ने उसे छोड़ दिया ।

दोनों मित्र विजय के नशे में झूमते चले जाते थे ।

मोती ने अपनी सांकेतिक भाषा में कहा--मेरा जी तो चाहता था कि बचा को मार डालूं ।

हीरा ने तिरस्कार किया--गिरे हुए बैरी पर सींग न चलाना चाहिए ।

'यह सब ढोंग है । बैरी को ऐसा मारना चाहिए कि फिर न उठे ।'

'अब घर कैसे पहुंचेंगे, यह सोचो ।'

'पहले कुछ खा लें, तो सोचें ।'

सामने मटर का खेत था ही[३४] । मोती उसमें घुस गया । हीरा मना करता रहा, पर उसने एक न सुनी[३५] । अभी दो ही चार ग्रास खाये थे कि[३६] दो आदमी लाठियां लिये दौड़ पड़े, और दोनों मित्रों को घेर लिया । हीरा तो मेड़ पर था, निकल गया । मोती सींचे हुए खेत में था । उसके खुर कीचड़ में धंसने लगे । न भाग सका । पकड़ लिया गया । हीरा ने देखा, संगी संकट में है, तो लौट पड़ा । फंसेंगे तो दोनों साथ फंसेंगे । रखवालों ने उसे भी पकड़ लिया ।

प्रात:काल दोनों मित्र कांजीहौस में बन्द कर दिये गये ।

४

दोनों मित्रों को जीवन में पहली बार ऐसा साबका पड़ा कि सारा दिन बीत गया और खाने को एक तिनका भी न मिला। समझ ही में न आता था, यह कैसा स्वामी है। इससे तो गया फिर अच्छा था[३७]। यहां कई भैंसें थीं, कई बकरियां, कई घोड़े; कई गधे; पर किसी के सामने चारा न था; सब जमीन पर मुरदों की तरह पड़े थे। कई तो इतने कमजोर हो गये थे कि खड़े भी न हो सकते थे। सारा दिन दोनों मित्र फाटक की ओर टकटकी लगाये ताकते रहे[३८]; पर कोई चारा लेकर आता दिखाई न दिया। तब दोनों ने दीवार की नमकीन मिट्टी चाटनी शुरू की; पर इससे क्या तृप्ति होती[३९] ?

रात को भी जब कुछ भोजन न मिला, तो हीरा के मन में विद्रोह की ज्वाला दहक उठी। मोती से बोला--अब तो नहीं रहा जाता मोती[४०] !

मोती ने सिर लटकाये हुए जवाब दिया--मुझे तो मालूम होता है, प्राण निकल रहे हैं।

'इतनी जल्द हिम्मत न हारो भाई! यहां से भागने का कोई उपाय निकालना चाहिए'

'आओ दीवार तोड़ डालें।'

'मुझसे तो अब कुछ न होगा[४०]।'

'बस इसी बूते पर अकड़ते थे[४१]!'

'सारी अकड़ निकल गयी।'

बाड़े की दीवार कच्ची थी। हीरा मजबूत तो था ही, अपने नुकीले सींग दीवार में गड़ा दिये और जोर मारा, तो मिट्टी का एक चिप्पड़ निकल आया। फिर तो उसका साहस बढ़ा। उसने दौड़-दौड़कर दीवार पर चोटें कीं और हर चोट में थोड़ी-थोड़ी मिट्टी गिराने लगा।

उसी समय कांजीहौस का चौकीदार लालटेन लेकर जानवरों की हाजिरी लेने आ निकला।

हीरा का यह उजड्डपन देखकर उसने उसे कई डंडे रसीद किये और मोटी-सी रस्सी से बांध दिया ।

'मोती ने पड़े-पड़े कहा--आखिर मार खायी, क्या मिला ?[४२]'

'अपने बूते-भर जोर तो मार लिया[४३] ।'

'ऐसा जोर मारना किस काम का कि और बंधन पड़ गये ।'

'जोर तो मारता ही जाऊंगा, चाहे कितने ही बंधन पड़ते जायं ।'

'जान से हाथ धोना पड़ेगा '

'कुछ परवाह नहीं । यों भी तो मरना ही है । सोचो, दीवार खुद जाती तो कितनी जानें बच जातीं । इतने भाई यहां बंद हैं । किसी की देह में जान नहीं है । दो-चार दिन और यही हाल रहा, तो सब मर जायंगे ।'

'हां, यह बात तो है । अच्छा, तो लो, फिर मैं भी जोर लगाता हूं ।'

मोती ने भी दीवार में उसी जगह सींग मारा । थोड़ी सी मिट्टी गिरी और हिम्मत बढ़ी । फिर तो वह दीवार में सींग लगाकर इस तरह जोर करने लगा, मानो किसी द्वन्द्वी से लड़ रहा है । आखिर कोई दो-घण्टे की जोर-आजमाई के बाद दीवार ऊपर से लगभग एक हाथ गिर गयी । उसने दूनी शक्ति से दूसरा धक्का मारा, तो आधी दीवार गिर पड़ी ।

दीवार का गिरना था कि अधमरे-से पड़े हुए सभी जानवर चेत उठे । तीनों घोड़ियां सरपट दौड़ निकलीं । फिर बकरियां निकलीं । इसके बाद भैंसें भी खिसक गयीं; पर गधे अभी तक ज्यों-के-त्यों खड़े थे ।

हीरा ने पूछा--तुम दोनों क्यों नहीं भाग जाते ?

एक गधे ने कहा--जो कहीं[४४] फिर पकड़ लिये जायं ।

'तो क्या हरज है । अभी तो भागने का अवसर है ।'

'हमें तो डर लगता है । हम यहीं पड़े रहेंगे[४५] ।'

आधी रात से ऊपर जा चुकी थी[४६] । दोनों गधे अभी तक खड़े सोच रहे थे कि भागें या न भागें, और मोती अपने मित्र की रस्सी तोड़ने में लगा हुआ था[४७] । जब वह हार गया तो हीरा ने कहा--तुम जाओ, मुझे यहीं पड़ा रहने दो । शायद कहीं भेंट हो जाए ।

मोती ने आंखों में आंसू लाकर कहा--तुम मुझे इतना स्वार्थी समझते हो, हीरा ? हम और तुम इतने दिनों एक साथ रहे हैं । आज तुम विपत्ति में पड़ गये, तो मैं तुम्हें छोड़कर अलग हो जाऊं?

हीरा ने कहा--बहुत मार पड़ेगी । लोग समझ जायंगे, यह तुम्हारी शरारत है ।

मोती गर्व से बोला--जिस अपराध के लिए तुम्हारे गले में बंधन पड़ा, उसके लिए अगर मुझपर मार पड़े, तो क्या चिन्ता । इतना तो हो ही गया कि नौ-दस प्राणियों की जान बच गयी । वे सब तो आशीर्वाद देंगे ।

यह कहते हुए मोती ने दोनों गधों को सींगों से मार-मारकर बाड़े के बाहर निकाला और तब अपने बन्धु के पास आकर सो रहा ।

भोर होते ही मुंशी और चौकीदार तथा अन्य कर्मचारियों में कैसी खलबली मची, इसके लिखने की जरूरत नहीं । बस, इतना ही काफी है कि मोती की खूब मरम्मत हुई और उसे भी मोटी रस्सी से बांध दिया गया ।

५

एक सप्ताह तक दोनों मित्र वहां बंधे पड़े रहे । किसी ने चारे का एक तृण भी न डाला । हां, एक बार पानी दिखा दिया जाता था । यही उनका आधार था । दोनों इतने दुबले हो गये थे कि उठा तक न जाता था; ठठरियां निकल आयी थीं ।

एक दिन बाड़े के सामने डुग्गी बजने लगी और दोपहर होते-होते वहां पचास-साठ आदमी

जमा हो गये । तब दोनों मित्र निकाले गये और उनकी देख-भाल होने लगी । लोग आ-आकर उनकी सूरत देखते और मन फीका करके चले जाते ऐसे मृतक बैलों का कौन खरीददार होता ?

सहसा एक दढ़ियल आदमी, जिसकी आँखें लाल थीं और मुद्रा अत्यन्त कठोर, आया और दोनो दोनों मित्रों के कूल्हों में उंगली गोदकर मुन्शीजी से बातें करने लगा । उसका चेहरा देखकर अन्तर्ज्ञान से दोनों मित्रों के दिल कांप उठे । वह कौन है और उन्हें क्यों टटोल रहा है, इस विषय में उन्हें कोई सन्देह न हुआ । दोनों ने एक दूसरे को भीत नेत्रों से देखा और सिर झुका लिया ।

हीरा ने कहा--गया के घर से नाहक भागे । अब जान न बचेगी ।

मोती ने अश्रद्धा के भाव से उत्तर दिया--कहते हैं, भगवान् सबके ऊपर दया करते हैं । उन्हें हमारे ऊपर क्यों दया नहीं आती ?

'भगवान् के लिए हमारा मरना-जीना दोनों बराबर है । चलो, अच्छा ही है, कुछ दिन उनके पास तो रहेंगे । एक बार भगवान् ने उस लड़की के रूप में हमें बचाया था । क्या अब न बचायेंगे ?'

'यह आदमी छुरी चलायेगा । देख लेना ।'

'तो क्या चिन्ता है ? मांस, खाल, सींग, हड्डी सब किसी-न-किसी काम आ जायंगी[४८] ।'

नीलाम हो जाने के बाद दोनों मित्र उस दढ़ियल के साथ चले । बोटी-बोटी कांप रही थी । बेचारे पांव तक न उठा सकते थे; पर भय के मारे गिरते-पड़ते भागे जाते थे[४९]; क्योंकि वह जरा भी चाल धीमी हो जाने पर जोर से डंडा जमा देता था ।

राह में गाय-बैलों का एक रेवड़ हरे-हरे हार में चरता नजर आया । सभी जानवर प्रसन्न थे, चिकने, चपल । कोई उछलता था, कोई आनन्द से बैठा पागुर करता था । कितना सुखी जीवन था इनका; पर कितने स्वार्थी हैं सब । किसी को चिन्ता नहीं कि उनके दो भाई बधिक के हाथ पड़े

कैसे दु:खी हैं ।

सहसा दोनों को ऐसा मालूम हुआ कि यह परिचित राह है । हां, इसी रास्ते से गया उन्हें ले गया था । वही खेत, वही बाग, वही गांव मिलने लगे । प्रतिक्षण उनकी चाल तेज होने लगी । सारी थकन, सारी दुर्बलता गायब हो गयी । आह! यह लो! अपना ही हार आ गया । इसी कुएं पर हम पुर चलाने आया करते थे; हां, यही कुआं है ।

मोती ने कहा--हमारा घर नगीच आ गया ।

हीरा बोला--भगवान् की दया है ।

'मैं तो अब घर भागता हूं ।'

'इसे मैं मार गिराता हूं ।'

'नहीं-नहीं, दौड़कर थान पर चलो । वहां से हम आगे न जायगे ।'

दोनों उन्मत होकर बछड़ों की भांति कुलेले करते हुए घर की ओर दौड़े । वह हमारा थान है । दोनों दौड़कर अपने थान पर आये और खड़े हो गये । दढ़ियल भी पीछे-पीछे दौड़ा चला आता था ।

झूरी द्वार पर बैठा धूप खा रहा था । बैलों को देखते ही दौड़ा और उन्हें बारी-बारी से गले लगाने लगा । मित्रों की आंखों से आनन्द के आंसू बहने लगे । एक झूरी का हाथ चाट रहा था ।

दढ़ियल ने जाकर बैलों की रस्सियां पकड़ लीं ।

झूरी ने कहा--मेरे बैल हैं ।

'तुम्हारे बैल कैसे ? मैं मवेशिखाने से नीलाम लिये आता हूं ।'

'मैं तो समझता हूं चुराये लिये आते हो । चुपके से चले जाओ । मेरे बैल हैं । मैं बेचूंगा तो

बिकेंगे । किसी को मेरे बैल नीलाम करने का क्या अख्तियार है ?'

'जाकर थाने में रपट कर दूंगा ।'

'मेरे बैल हैं । इसका सबूत यह है कि मेरे द्वार पर खड़े हैं ।'

दढ़ियल झल्लाकर बैलों को जबरदस्ती पकड़ ले जाने के लिए बढ़ा । उसी वक्त मोती ने सींग चलाया । दढ़ियल पीछे हटा । मोती ने पीछा किया । दढ़ियल भागा । मोती पीछे दौड़ा । गांव के बाहर निकल जाने पर वह रुका,खड़ा दढ़ियल का रास्ता देख रहा था । दढ़ियल दूर खड़ा धमकियां दे रहा था, गालियां निकाल रहा था, पत्थर फेंक रहा था । और मोती विजयी शूर की भांति उसका रास्ता रोके खड़ा था । गांव के लोग यह तमाशा देखते थे और हंसते थे ।

जब दढ़ियल हारकर चला गया, तो मोती अकड़ता हुआ लौटा ।

हीरा ने कहा--मैं डर रहा था कि कहीं तुम गुस्से में आकर मार न बैठो ।

'अगर वह मुझे पकड़ता, तो मैं बे-मारे न छोड़ता[५०] ।'

'अब न आयेगा ।'

'आयेगा तो दूर ही से खबर लूंगा । देखूं, कैसे ले जाता है ।'

'जो गोली मरवा दे ?'

'मर जाऊंगा; पर उसके काम तो न आऊंगा ।'

'हमारी जान को कोई जान ही नहीं समझता ।'

'इसीलिए कि हम इतने सीधे होते हैं ।'

जरा देर में नांदों में खली, भूसा, चोकर और दाना भर दिया गया और दोनों मित्र खाने लगे । झूरी खड़ा दोनों को सहला रहा था और बीसों लड़के तमाशा देख रहे थे । सारे गांव में उछाह-सा मालूम होता था ।

उसी समय मालकिन ने आकर दोनों के माथे चूम लिये ।

Notes on दो बैलों की कथा

1. चाहे जैसी खराब सड़ी हुई घास सामने डाल दो "Throw any kind of rotten old grass before him you care to."

2. जिस अर्थ में... कुछ उसी से मिलते-जुलते अर्थ में... "In the sense that ... more or less correspondingly we ... "

3. ... उसका स्थान गधे से नीचा है : i.e., his rank is lower than that of the ass (in the ranking of the greatest fools).

4. दिन-भर के बाद "after their day's work was over"

5. बैलों को क्या... बेच दिया "what did it mean to the oxen? They didn't know why they were being sent. They thought, "The master has sold us.""

6. दांतों = दांतों तक "Gayā had all he could do to get them home."

7. अगर इतनी मेहनत से काम न चलता था तो और काम लेते "If this much labor wasn't enough, you could have assigned more."

8. इस जालिम के हाथ = इस जालिम के हाथ (में)

9. झूरी प्रातःकाल सोकर उठा... "When Jhūrī got up, early in the morning ..."

10. बस तुम्हीं तो बैलों को खिलाना जानते हो, और सभी पानी पिला-पिलाकर रखते हैं । "Hmph! as if you are the only one who knows how to feed oxen, and everybody else just gives them water to eat."

11. यह दोनों ठहरे कामचोर, भाग निकले "These two are goldbrickers, they ran off."

12. खायें चाहे मरें "I don't care whether they eat it or starve."

13. क्या खायें "It wasn't worth eating."

14. मालकिन मुझे मार ही डालेंगी "The mistress would be certain to kill me."

15. ..., उन्हीं की-सी कहोगे "you will take her part ... "

16. ... तो थी ही, उस पर... "not only was there ..., (but) on top of it ... "

17. ... आँखें तक न उठायीं "even", not the postpsition "up to, until"; the preceding noun is therefore not in the oblique form.

18. सब टूट-टाटकर बराबर हो गया "Everything was completely pulverized."

19. तुम्हारी तो इसने जान ही लेली थी "He had almost killed you."

20. कहो तो दिखा दूं कुछ मजा मैं भी "say the word, and I'll give them something to taste too."

21. खड़े हो जाओ "Stay where you are."

22. प्रेम के इस प्रसाद की वह बरकत थी कि... "This gift of love has such a good effect that ... "

23. यहां तक कि मार्ग का ज्ञान न रहा "Finally they didn't know where they were any longer."

24. उसका यहां पता न था "There was no trace here of ... "

25. वहीं उसे मार गिराना था। उसे मार गिराते, तो... "It would have been better if you had killed him right there." "If we had killed him ... "

26. रह-रहकर आहट ले लेते थे "They stoped and listened from time to time for the sound of anyone coming."

27. तब उसे भी क्रोध आया "Then he lost his temper". The here has a meaning something like "finally"; it does not mean "too" ("he too"). This usage is not uncommon.

28. मोती ने देखा---खेल मे झगड़ा हुआ चाहता है, तो किनारे हट गया "Moti saw that the game was about to turn into a quarrel, so he withdrew to the side."

29. (idiom) बगले झांक रहे हैं "They want to escape."

30. बुरे फंसे "what a fix we are in!"

31. अपने... : The subject is he (the bull).

32. बन्दा तो नौ-दो ग्यारह होता (idiom) "I want to disappear."

33. और जो दौड़ाये "and suppose he chases you?"

34 सामने मटर का खेत था ही "There before them lay the pea-field."

35. पर उसने एक न सुनी "But he didn't hear him at all."

36. अभी दो ही चार ग्रास खाये थे कि... "He had just eaten a couple of mouthfuls when ... "

37. इससे तो गया फिर भी अच्छा था "Even Gayā was better than he."

38. टकटकी लगाये ताकते रहे "kept staring expectantly."

39. पर इससे क्या तृप्ति होती "What satisfaction could this give them?"

40. अब तो नहीं रहा जाता मोती । "It's impossible to bear this Moti!"

40*. मुझसे तो अब कुछ न होगा "I can't do anything more."

41. बस, इसी बूते पर अकड़ते थे । "So, what strength was it you were just so proud of."

42. क्या मिला ? "What did you gain?"

43. अपने भूते-भर जोर तो मार लिया । "at least I used what strength I had!"

44. जो कहीं "and suppose that ... "

45. हम यहीं पड़े रहेंगे "We will just stay right here."

46. आधी रात से ऊपर जा चुकी थी "It was already past midnight."

47. अपने मित्र की रस्सी तोड़ने में लगा हुआ था "He was applying himself to the business of breaking his friend's rope."

48. सब किसी-न-किसी काम आ जायगी "All of them will serve this or that purpose".

49. पर भय के मारे गिरते-पड़ते भागे जाते थे "but they stumbled on as a result of fear."

50. तो बे-मारे न छोड़ता "I would not have left without beating him."

बड़े भाई साब

मेरे भाई साहब मुझसे पांच साल बड़े थे; लेकिन केवल तीन दरजे आगे । उन्होंने भी उसी उम्र में पढ़ना शुरू किया था, जब मैंने शुरू किया; लेकिन तालीम जैसे महत्त्व के मामले में वह जल्दीबाज़ी से काम लेना पसन्द न करते थे । इस भवन की बुनियाद ख़ूब मजबूत डालना चाहते थे, जिस पर आलीशान महल बन सके । एक साल का काम दो साल में करते थे । कभी-कभी तीन साल भी लग जाते थे । बुनियाद ही पुख़्ता न हो, तो मकान कैसे पायेदार बने !

मैं छोटा था, वह बड़े थे । मेरी उम्र नौ साल की, वह चौदह साल के थे । उन्हें मेरी तम्बीह और निगरानी का पूरा और जन्मसिद्ध अधिकार था । और मेरी शालीनता इसी में थी कि उनके हुक्म को क़ानून समझूं ।

वह स्वभाव से बड़े अध्ययनशील थे । हरदम किताब खोले बैठे रहते । और शायद दिमाग़ को आराम देने के लिए कभी कापी पर, कभी किताब के हाशियों पर चिड़ियों, कुत्तों, बिल्लियों की तसवीरें बनाया करते थे । कभी-कभी एक ही नाम या शब्द या वाक्य दस-बीस बार लिख डालते । कभी एक शेर को बार-बार सुन्दर अक्षरों से नक़ल करते । कभी ऐसी शब्द-रचना करते, जिसमें न कोई अर्थ होता, न कोई सामंजस्य ! मसलन् एक बार उनकी कापी पर मैंने यह इबारत देखी-स्पेशल, अमीना, भाइयों-भाइयों, दर-असल, भाई-भाई, राधे-श्याम, श्रीयुत राधेश्याम, एक घंटे तक[१] -- इसके बाद एक आदमी का चेहरा बना हुआ था । मैंने बहुत चेष्टा की कि इस पहेली का कोई अर्थ

निकालूं; लेकिन असफल रहा और उनसे पूछने का साहस न हुआ । वह नवीं जमात में थे, मैं पांचवीं में । उनकी रचनाओं को समझना मेरे लिए छोटा मुंह बड़ी बात थी[२] ।

मेरा जी पढ़ने में बिलकुल न लगता था । एक घंटा भी किताब लेकर बैठना पहाड़ था । मौक़ा पाते ही होस्टल से निकलकर मैदान में आ जाता, और कभी कंकरियां उछालता, कभी कागज़ की तितलियां उड़ाता, और कहीं कोई साथी मिल गया, तो पूछना ही क्या[३] । कभी चारदीवारी पर चढ़कर नीचे कूद रहे हैं, कभी फाटक पर सवार[४], उसे आगे-पीछे चलाते हुए मोटरकार का आनन्द उठा रहे हैं, लेकिन कमरे में आते ही भाई साहब का वह रुद्र-रूप देखकर प्राण सूख जाते । उनका पहला सवाल होता--'कहां थे ?' हमेशा यही सवाल, इसी ध्वनि में हमेशा पूछा जाता था और इसका जवाब मेरे पास केवल मौन था । न जाने मुंह से यह बात क्यों न निकलती कि ज़रा बाहर खेल रहा था । मेरा मौन कह देता था कि मुझे अपना अपराध स्वीकार है और भाई साहब के लिए इसके सिवा और कोई इलाज न था कि रोष से मिले हुए शब्दों में मेरा सत्कार करें ।

'इस तरह अंग्रेजी पढ़ोगे, तो ज़िन्दगी-भर पढ़ते रहोगे और एक हर्फ़ न आयेगा[५] । अंग्रेजी पढ़ना कोई हंसी-खेल नहीं है कि जो चाहे, पढ़ ले; नहीं ऐरा-गैरा नत्थू-खैरा सभी अंग्रेजी के विद्वान् हो जाते[६] । यहां रात-दिन आंखें फोड़नी पड़ती हैं, और खून जलाना पड़ता है, तब कहीं यह विद्या आती है । और आती क्या है, हां, कहने को आ जाती है[७] । बड़े-बड़े विद्वान् भी शुद्ध अंग्रेजी नहीं लिख सकते, बोलना तो दूर रहा[८] । और मैं कहता हू, तुम कितने घोंघा हो कि मुझे देखकर भी सबक़ नही लेते । मैं कितनी मेहनत करता हूं, यह तुम अपनी आंखों देखते हो, अगर नहीं देखते, तो यह तुम्हारी आंखों का क़ुसूर है, तुम्हारी बुद्धि का क़ुसूर है । इतने मेले-तमाशे होते हैं, मुझे तुमने कभी देखने जाते देखा है ? रोज़ ही[६] क्रिकेट और हाकी मैच होते हैं । मैं पास नही फटकता[१०] । हमेशा पढ़ता रहता हूं; उस पर भी एक-एक दरजे में दो-दो, तीन-तीन साल पड़ा

रहता हूं[११] ; फिर तुम कैसे आशा करते हो कि तुम यों खेल-कूद मे वक्त गंवाकर पास हो जाओगे ? मुझे तो दो-ही-तीन साल लगते हैं, तुम उम्र-भर इसी दरजे में पड़े सड़ते रहोगे! अगर तुम्हें इस तरह उम्र गंवानी है, तो बेहतर है, घर चले जाओ और मजे से गुल्ली-डंडा खेलो[१२] । दादा की गाढ़ी कमाई के रुपये क्यों बरबाद करते हो ?'

मैं यह लताड़ सुनकर आंसू बहाने लगता । जवाब ही क्या था । अपराध तो मैंने किया, लताड़ कौन सहे[१३] ? भाई साहब उपदेश की कला में निपुण थे । ऐसी-ऐसी लगती बातें कहते[१४] , ऐसे-ऐसे सूक्ति-बाण चलाते, कि मेरे जिगर के टुकड़े-टुकड़े हो जाते और हिम्मत छूट जाती । इस तरह जान तोड़कर मेहनत करने की शक्ति मैं अपने में न पाता था और निराशा में ज़रा देर के लिए मैं सोचने लगता क्यों न घर चला जाऊं । जो काम मेरे बूते के बाहर है, उसमें हाथ डालकर क्यों अपनी जिन्दगी खराब करूं ? मुझे अपना मूर्ख रहना मंजूर था; लेकिन उतनी मेहनत से मुझे तो चक्कर आ जाता था । लेकिन घंटे-दो-घंटे के बाद निराशा के बादल फट जाते और मैं इरादा करता कि आगे से खूब जी लगाकर पढ़ूंगा । चटपट एक टाइम-टेबिल बना डालता । बिना पहले से नक्शा बनाये, कोई स्कीम तैयार किये काम कैसे शुरू करूं ? टाइम-टेबिल में खेल-कूद की मद बिलकुल उड़ जाती । प्रात:काल उठना, छ: बजे मुंह हाथ धो, नाश्ता कर, पढ़ने बैठ जाना । छ: से आठ तक अंग्रेजी, आठ से नौ तक हिसाब, नौ से साढ़े नौ तक इतिहास, फिर भोजन और स्कूल । साढ़े तीन बजे स्कूल से वापस होकर आध घंटा आराम, चार से पांच तक भूगोल, पांच से छ: तक ग्रामर, आध घंटा होस्टल के सामने टहलना, साढ़े छ: से सात तक अंग्रेजी कम्पोज़ीशन, फिर भोजन करके आठ से नौ तक अनुवाद, नौ से दस तक हिन्दी, दस से ग्यारह तक विविध-विषय, फिर विश्राम ।

मगर टाइम-टेबिल बना लेना एक बात है, उस पर अमल करना दूसरी बात । पहले ही दिन

से उसकी अवहेलना शुरू हो जाती । मैदान की वह सुखद हरियाली, हवा के वह हल्के-हल्के झोंके, फुटबाल की वह उछल-कूद, कबड्डी के वह दांव-घात, वाली-बाल की वह तेज़ी और फुरती मुझे अज्ञात और अनिवार्य रूप से खींच ले जाती और वहां जाते ही मैं सब कुछ भूल जाता । वह जान-लेवा टाइम-टेबिल, वह आंखफोड़ पुस्तकें, किसी की याद न रहती, और फिर भाई साहब को नसीहत और फजीहत का अवसर मिल जाता । मैं उनके साये से भागता, उनकी आंखों से दूर रहने की चेष्टा करता, कमरे में इस तरह दबे पांव आता कि उन्हें खबर न हो। उनकी नज़र मेरी ओर उठी और मेरे प्राण: निकले[१५] । हमेशा सिर पर एक नंगी तलवार-सी लटकती मालूम होती । फिर भी जैसे मौत और विपत्ति के बीच में भी आदमी मोह और माया के बन्धन में अकड़ा रहता है, मैं फटकार और घुड़कियां खाकर भी खेल-कूद का तिरस्कार न कर सकता[१६] ।

(२)

सालाना इम्तहान हुआ । भाई साहब फ़ेल हो गये, मैं पास हो गया और दरजे में प्रथम आया । मेरे और उनके बीच केवल दो साल का अन्तर रह गया । जी में आया, भाई साहब को आड़े हाथों लूं--आपकी वह घोर तपस्या कहां गयी ? मुझे देखिए, मज़े से खेलता भी रहा और दरजे में अव्वल भी हूं । लेकिन वह इतने दु:खी और उदास थे कि मुझे उनसे दिली हमदर्दी हुई और उनके घाव पर नमक छिड़कने का विचार ही लज्जास्पद जान पड़ा । हां, अब मुझे अपने ऊपर कुछ अभिमान हुआ और आत्माभिमान भी बढ़ा । भाई साहब का वह रोब मुझ पर न रहा । आज़ादी से खेल-कूद में शरीक होने लगा । दिल मज़बूत था[१७] । अगर उन्होंने फिर मेरी फजीहत की, तो साफ कह दूंगा--आपने अपना खून जलाकर कौन-सा तीर मार लिया । मैं तो खेलते-कूदते दरजे में अव्वल आ गया । ज़बान से यह हेकड़ी जताने का साहस न होने पर भी मेरे रंग-ढंग से साफ़ ज़ाहिर होता था कि भाई साहब का वह आतक मुझ पर नहीं है । भाई साब ने इसे

भांप लिया--उनकी सहज बद्धि बड़ी तीव्र थी और एक दिन जब मैं भोर का सारा समय गुल्ली-डण्डे की भेंट करके ठीक भोजन के समय लौटा तो भाई साहब ने मानो तलवार खींच ली और मुझ पर टूट पड़े--देखता हूं, इस साल पास हो गये और दरजे में अव्वल आ गये, तो तुम्हें दिमाग़ हो गया है ; मगर भाईजान, घमंड तो बड़े-बड़ों का नहीं रहा, तुम्हारी क्या हस्ती है ? इतिहास में रावण का हाल तो पढ़ा ही होगा । उसके चरित्र से तुमने कौन-सा उपदेश लिया ? या यों ही पढ़ गये[१८] ? महज़ इम्तहान पास कर लेना कोई चीज नहीं, असल चीज़ है बुद्धि का विकास । जो कुछ पढ़ो, उसका अभिप्राय समझो । रावण भूमण्डल का स्वामी था । ऐसे राजाओं को चक्रवर्ती कहते हैं । आजकल अंग्रेजों के राज्य का विस्तार बहुत बढ़ा हुआ है; पर इन्हें चक्रवर्ती नहीं कह सकते ! संसार में अनेकों राष्ट्र अंग्रेज़ों का आधिपत्य स्वीकार नहीं करते । बिलकुल स्वाधीन हैं । रावण चक्रवर्ती राजा था, संसार के सभी महीप उसे कर देते थे । बड़े-बड़े देवता उसकी गुलामी करते थे । आग और पानी के देवता भी उसके दास थे; मगर उसका अन्त क्या हुआ ? घमण्ड ने उसका नाम-निशान तक मिटा दिया, कोई उसे एक चिल्लू पानी देनेवाला भी[१९] न बचा । आदमी और जो कुकर्म चाहे करे; पर अभिमान न करे, इतराये नहीं । अभिमान किया, और दीन-दुनिया दोनों से गया[२०] । शैतान का हाल भी पढ़ा ही होगा[२१] । उसे यह अभिमान हुआ था कि ईश्वर का उससे बढ़कर सच्चा भक्त कोई है ही नहीं । अंत में यह हुआ कि स्वर्ग से नरक में ढकेल दिया गया । शाहेरूम ने भी एक बार अहंकार किया था । भीख मांग-मांगकर मर गया । तुमने तो अभी केवल एक दरजा पास किया है, और अभी से तुम्हारा सिर फिर गया, तब तो तुम आगे बढ़ चुके[२२] । यह समझ लो कि तुम अपनी मेहनत से नहीं पास हुए, अन्धे के हाथ बटेर लग गयी[२३] । मगर बटेर केवल एक बार हाथ लग सकती है, बार-बार नहीं लग सकती । कभी-कभी गुल्ली-डण्डे में भी अन्धाचोट निशाना पड़ जाता है । इससे कोई सफल खिलाड़ी नहीं हो जाता । सफल

खिलाड़ी वह है, जिसका कोई निशाना खाली न जाय[२४]। मेरे फेल होने पर न जाओ। मेरे दरजे में आओगे, तो दाँतों पसीना आयगा, जब अलजबरा और जामेट्री के लोहे के चने चबाने पड़ेंगे, और इंगलिस्तान का इतिहास पढ़ना पड़ेगा। बादशाहों के नाम याद रखना आसान नहीं। आठ-आठ हेनरी हो गुजरे हैं। कौन-सा कांड किस हेनरी के समय हुआ, क्या यह याद कर लेना आसान समझते हो? हेनरी सातवें की जगह, हेनरी आठवां लिखा और सब नम्बर ग़ायब[२५]! सफ़ाचट! सिफ़र भी न मिलेगा, सिफ़र भी! हो किस ख़्याल में[२६]। दरजनों तो जेम्स हुए हैं, दरजनों विलियम, कोड़ियों चार्ल्स, दिमाग चक्कर खाने लगता है। आंधी रोग हो जाता है। इन अभागों को नाम भी न जुड़ते थे। एक ही नाम के पीछे दोयम, तेयम, चहारम, पंचम लगाते चले गये। मुझसे पूछते तो, दस लाख नाम बता देता[२७]। और जामेट्री तो बस ख़ुदा की पनाह[२८]! अ ब ज की जगह अ ज ब लिख दिया और सारे नम्बर कट गये[२९]। कोई इन निर्दयी मुमतहिनों से नहीं पूछता कि आखिर अ ब ज और अ ज ब में क्या फ़र्क है, और व्यर्थ की बात के लिए क्यों छात्रों का ख़ून करते हो? दाल-भात-रोटी खायी या भात-दाल-रोटी खायी, इसमें क्या रखा है; मगर इन परीक्षकों को क्या परवाह! वह तो वही देखते हैं, जो पुस्तक में लिखा है[३०]। चाहते हैं कि लड़के अक्षर-अक्षर[३१] रट डालें। और इसी रटन्त का नाम शिक्षा रख छोड़ा है और आख़िर इन बे-सिर-पैर की बातों के पढ़ने से फायदा? इस रेखा पर वह लम्ब गिरा दो, तो आधार लम्ब से दुगना होगा। पूछिए, इससे प्रयोजन? दुगना नहीं, चौगुना हो जाय, या आधा ही रहे, मेरी बला से; लेकिन परीक्षा में पास होना है, तो यह सब ख़ुराफ़ात याद करनी पड़ेगी। कह दिया--समय की पाबन्दी पर एक निबन्ध लिखो, जो चार पन्नों से कम न हो। अब आप कापी सामने खोले, क़लम हाथ में लिये, उसके नाम को रोइए[३२]। कौन नहीं जानता कि समय की पाबन्दी बहुत अच्छी बात है, इससे आदमी के जीवन में संयम आ जाता है, दूसरों का उस पर

स्नेह होने लगता है[३३] और उसके कारोबार में उन्नति होती है; लेकिन ज़रा-सी बात पर चार पन्ने कैसे लिखें ? जो बात एक वाक्य में कही जा सके, उसे चार पन्नों में लिखने की ज़रूरत ? मैं तो इसे हिमाक़त समझता हूं । यह तो समय की किफ़ायत नहीं, बल्कि उसका दुरुपयोग है कि व्यर्थ में किसी बात को ठूंस दिया । हम चाहते हैं आदमी को जो कुछ कहना हो चटपट कह दे और अपनी राह ले । मगर नहीं, आपको चार पन्ने रंगने पड़ेंगे, चाहे जैसे लिखिए और पन्ने भी पूरे फुल्सकेप आकार के । यह छात्रों पर अत्याचार नहीं तो और क्या है ? अनर्थ तो यह है कि कहा जाता है, संक्षेप में लिखो । समय की पाबन्दी पर संक्षेप में एक निबन्ध लिखो, जो चार पन्ने से कम न हो । ठीक ! संक्षेप में तो चार पन्ने हुए, नहीं शायद सौ-दो सौ पन्ने लिखवाते । तेज़ भी दौड़िए और धीरे-धीरे भी । है उलटी बात या नहीं ? बालक भी इतनी-सी बात समझ सकता है लेकिन इन अध्यापकों को इतनी तमीज़ भी नहीं । उस पर दावा है कि हम अध्यापक हैं[३४] । मेरे दरजे में आओगे लाला, तो ये सारे पापड़ बेलने पड़ेंगे[३५] और तब आटे-दाल का भाव मालूम होगा। इस दरजे में अव्वल आ गये हो, तो ज़मीन पर पांव नहीं रखते ! इसलिए मेरा कहना मानिए । लाख फेल हो गया हूं[३६], लेकिन तुमसे बड़ा हूं, संसार का मुझे तुमसे ज़्यादा अनुभव है । जो कुछ कहता हूं, उसे गिरह बांधिए[३७], नहीं पछताइएगा ।

स्कूल का समय निकट था, नहीं ईश्वर जाने यह उपदेश-माला कब समाप्त होती । भोजन आज मुझे निस्स्वाद-सा लग रहा था । जब पास होने पर यह तिरस्कार हो रहा है, तो फ़ेल हो जाने पर शायद प्राण ही ले लिये जायं । भाई साहब ने अपने दरजे की पढ़ाई का जो भयंकर चित्र खींचा था, उसने मुझे भयभीत कर दिया । कैसे स्कूल छोड़कर घर नहीं भागा, यही ताज्जुब है; लेकिन इतने तिरस्कार पर भी पुस्तकों में मेरी अरुचि ज्यों-की-त्यों बनी रही । खेल-कूद का कोई अवसर हाथ से न जाने देता । पढ़ता भी था; मगर बहुत कम । बस इतना कि रोज़ का

टास्क पूरा हो जाय और दरजे में ज़लील न होना पड़े । अपने ऊपर जो विश्वास पैदा हुआ था, वह फिर लुप्त हो गया और फिर चोरों का-सा जीवन कटने लगा ।

(३)

फिर सालाना इम्तहान हुआ, और कुछ ऐसा संयोग हुआ कि मैं फिर पास हुआ और भाई साहब फिर फ़ेल हो गये । मैंने बहुत मेहनत न की; पर न जाने कैसे दरजे में अव्वल आ गया । मुझे खुद अचरज हुआ । भाई साहब ने प्राणान्तक परिश्रम किया था[३८] । कोर्स का एक-एक शब्द चाट गये थे, दस बजे रात तक इधर, चार बजे भोर से उधर, छः से साढ़े नौ तक स्कूल जाने के पहले । मुद्रा कान्तिहीन हो गयी थी; मगर बेचारे फेल हो गये । मुझे उन पर दया आती थी । नतीजा सुनाया गया, तो वह रो पड़े और मैं भी रोने लगा । अपने पास होने की खुशी आधी हो गयी । मै भी फ़ेल हो गया होता, तो भाई साहब को इतना दु:ख न होता; लेकिन विधि की बात कौन टाले ?

मेरे और भाई साहब के बीच में अब केवल एक दरजे का अन्तर और रह गया । मेरे मन में एक कुटिल भावना उदय हुई कि कहीं भाई साहब एक साल और फ़ेल हो जायं, तो मैं उनके बराबर हो जाऊं, फिर वह किस आधार पर मेरी फ़जीहत कर सकेंगे; लेकिन मैंने इस कमीने विचार को दिल से बलपूर्वक निकाल डाला । आखिर वह मुझे मेरे हित के विचार से ही तो डांटते हैं[३९] । मुझे इस वक्त अप्रिय लगता है अवश्य; मगर यह शायद उनके उपदेशों का ही असर हो कि मैं दनादन पास हो जाता हूं और इतने अच्छे नम्बरों से ।

अबकी भाई साहब बहुत-कुछ नर्म पड़ गये थे । कई बार मुझे डांटने का अवसर पाकर भी उन्होंने धीरज से काम लिया[४०] । शायद अब वह समझने लगे थे कि मुझे डांटने का अधिकार उन्हें नहीं रहा, या रहा, तो बहुत कम । मेरी स्वच्छन्दता भी बढ़ी । मैं उनकी सहिष्णुता का

अनुचित लाभ उठाने लगा । मुझे कुछ ऐसी धारणा हुई कि मैं तो पास हो ही जाऊंगा, पढ़ूं या न पढ़ूं, मेरी तक़दीर बलवान है[४१]; इसलिए भाई साहब के डर से जो थोड़ा बहुत पढ़ लिया करता था, वह भी बन्द हुआ । मुझे कनकौए उड़ाने का नया शौक़ पैदा हो गया था और अब सारा समय पतंगबाजी ही की भेंट होता था; फिर भी मैं भाई साहब का अदब करता था, और उनकी नज़र बचा कर कनकौए उड़ाता था । मांझा देना, कन्ने बांधना, पतंग टूरनामेंट की तैयारियां आदि समस्याएं सब गुप्त रूप से हल की जाती थीं । भाई साहब को यह सन्देह न करने देना चाहता था कि उनका सम्मान और लिहाज़ मेरी नज़रों में कम हो गया है ।

एक दिन सन्ध्या समय होस्टल से दूर मैं एक कौआ लूटने बेतहाशा दौड़ा जा रहा था । आखें आसमान की ओर थीं और मन उस आकाशगामी पथिक की ओर, जो मन्द गति से झूमता पतन की ओर चला आ रहा था, मानो कोई आत्मा स्वर्ग से निकलकर विरक्त मन से नये संस्कार ग्रहण करने जा रही हो । बालकों की एक पूरी सेना लग्गे और झाड़दार बांस लिये उनका स्वागत करने को दौड़ी आ रही थी । किसी को अपने आगे-पीछे की खबर न थी[४२] । सभी मानो उस पतंग के साथ ही आकाश में उड़ रहे थे, जहां सब कुछ समतल है, न मोटरकारें हैं, न ट्राम, न गाड़ियां ।

सहसा भाई साहब से मेरी मुठभेड़ हो गयी, जो शायद बाज़ार से लौट रहे थे । उन्होंने वहीं मेरा हाथ पकड़ लिया और उग्र भाव से बोले--इन बाज़ारी लौंडों के साथ धेले के कनकौए के लिए दौड़ते तुम्हें शर्म नहीं आती ? तुम्हें इसका भी कुछ लिहाज नहीं कि अब नीची जमात में नहीं हो; बल्कि आठवीं जमात में आ गये हो और मुझसे केवल एक दरजा नीचे हो । आखिर आदमी को कुछ तो अपने पोज़ीशन का ख़्याल करना चाहिए । एक ज़माना था कि लोग आठवां दरजा पास करके नायब तहसीलदार हो जाते थे । मैं कितने ही मिडलचियों को जानता हूं, जो

आज अव्वल दरजे के डिप्टी मैजिस्ट्रेट या सुपरिंटेंडेंट हैं । कितने ही आठवीं जमाअत वाले हमारे लीडर और समाचारपत्रों के सम्पादक हैं । बड़े-बड़े विद्वान् उनकी मातहती में काम करते हैं और तुम उसी आठवें दरजे में आकर बाज़ारी लौंडों के साथ कनकौए के लिए दौड़ रहे हो । मुझे तुम्हारी इस कमअक्ली पर दुःख होता है । तुम ज़हीन हो, इसमें शक नहीं, लेकिन वह ज़ेहन किस काम का[४३], जो हमारे आत्म-गौरव की हत्या कर डाले । तुम अपने दिल में समझते होगे, मैं भाई साहब से महज एक दरजा नीचे हूं और अब उन्हें मुझको कुछ कहने का हक़ नहीं हैं; लेकिन यह तुम्हारी ग़लती है । मैं तुमसे पांच साल बड़ा हूं और चाहे आज तुम मेरी ही जमाअत में आ जाओ--और परीक्षकों का यही हाल है[४४], तो निस्सन्देह अगले साल तुम मेरे समकक्ष हो जाओगे, और शायद एक साल बाद मुझसे आगे भी निकल जाओ--लेकिन मुझमे और तुममें जो पांच साल का अन्तर है, उसे तुम क्या[४५], ख़ुदा भी नहीं मिटा सकता । मैं तुमसे पांच साल बड़ा हूं और हमेशा रहूंगा । मुझे दुनिया का और ज़िन्दगी का जो तजरबा है, तुम उसकी बराबरी नहीं कर सकते, चाहे तुम एम॰ए॰ और डी॰ लिट्॰, और डी॰ फिल्॰ ही क्यों न हो जाओ । समझ किताबें पढ़ने से नहीं आती है । हमारी अम्मां ने कोई दरजा नहीं पास किया, और दादा भी शायद पांचवीं जमाअत के आगे नहीं गये, लेकिन हम दोनों चाहे सारी दुनिया की विद्या पढ़ लें, अम्मां और दादा को हमें समझाने और सुधारने का अधिकार हमेशा रहेगा । केवल इसलिए नहीं कि वे हमारे जन्मदाता हैं; बल्कि इसलिए कि उन्हें दुनिया का हमसे ज़्यादा तजरबा है और रहेगा । अमेरिका में किस तरह की राज्य-व्यवस्था है, और आठवें हेनरी ने कितने ब्याह किये और आकाश में कितने नक्षत्र हैं, यह बातें चाहे उन्हें न मालूम हों, लेकिन हज़ारों ऐसी बातें हैं, जिनका ज्ञान उन्हें हमसे और तुमसे ज़्यादा है । दैव न करे, आज मैं बीमार हो जाऊं, तो तुम्हारे हाथ-पांव फूल जायंगे[४६] । दादा को तार देने के सिवा तुम्हें और कुछ न सूझेगा[४७]; लेकिन तुम्हारी जगह

पर दादा हों, तो किसी को तार न दें, न घबरायें, न बदहवास हों। पहले ख़ुद मरज़ पहचानकर इलाज करेंगे, उसमें सफल न हुए; तो किसी डाक्टर को बुलायेंगे। बीमारी तो ख़ैर बड़ी चीज़ है। हम-तुम तो इतना भी नहीं जानते कि महीने-भर का ख़र्च महीना-भर कैसे चले[४८]। जो कुछ दादा भेजते हैं, उसे हम बीस-बाइस तक ख़र्च कर डालते हैं, और फिर पैसे-पैसे को मुंहताज हो जाते हैं। नाश्ता बन्द हो जाता है, घोबी और नाई से मुंह चुराने लगते हैं, लेकिन जितना आज हम और तुम ख़र्च कर रहे हैं[४९], उसके आधे में दादा ने अपनी उम्र का बड़ा भाग इज्ज़त और नेकनामी के साथ निभाया है और एक कुटुम्ब का पालन किया है जिसमें सब मिलाकर नौ आदमी थे। अपने हेडमास्टर साहब ही को देखो। एम० ए० हैं कि नहीं[५०]; और यहां के एम० ए० नहीं, आक्सफोर्ड के। एक हज़ार रुपये पाते हैं; लेकिन उनके घर का इन्तज़ाम कौन करता है? उनकी बूढ़ी मां। हेडमास्टर साहब की डिग्री यहां बेकार हो गयी है। पहले ख़ुद घर का इन्तज़ाम करते थे। ख़र्च पूरा न पड़ता था[५१]। करज़दार रहते थे। जब से उनकी माताजी ने प्रबन्ध अपने हाथ में ले लिया है; जैसे घर में लक्ष्मी आ गयी हैं। तो भाईजान, यह ग़ुरूर दिल से निकाल डालो कि तुम मेरे समीप आ गये हो और अब स्वतन्त्र हो। मेरे देखते तुम बेराह न चलने पाओगे[५२]। अगर तुम यों न मानोगे तो मैं (थप्पड़ दिखाकर) इसका प्रयोग भी कर सकता हूं। मैं जानता हूं, तुम्हें मेरी बातें ज़हर लग रही हैं[५३]।

मैं उनकी इस नयी युक्ति से नत-मस्तक हो गया। मुझे आज सचमुच अपनी लघुता का अनुभव हुआ और भाई साहब के प्रति मेरे मन में श्रद्धा उत्पन्न हुई। मैंने सजल आंखों से कहा--हरगिज़ नहीं। आप जो कुछ फ़रमा रहे हैं, वह बिलकुल सच है और आपको कहने का अधिकार है।

भाई साहब ने मुझे गले लगा लिया और बोले--कनकौए उड़ाने को मना नहीं करता। मेरा जी भी ललचता है; लेकिन क्या करूं, ख़ुद बेराह चलूं, तो तुम्हारी रक्षा कैसे करूं? यह कर्तव्य भी

तो मेरे सिर है !

संयोग से उसी वक्त एक कटा कनकौआ हमारे ऊपर से गुज़रा । उसकी डोर लटक रही थी । लड़कों का एक गोल पीछे-पीछे दौड़ा चला आता था । भाई साहब लम्बे हैं ही, उछलकर उसकी डोर फकड़ ली और बेतहाशा होस्टल की तरफ़ दौड़े । मैं पीछे-पीछे दौड़ रहा था ।

Notes on बड़े भाई साहब

1. स्पेशल.... घंटे तक   largely nonsense

2. मेरे लिए... बात थी   "for me was small mouth, big thing", i.e, beyond me.

3. तो पूछना ही क्या   "what could be better".

4. फाटक पर सवार   "swinging on the gate".

5. एक हर्फ़ न आयेगा   "you won't know even one word".

6. नहीं... हो जाते   "otherwise every Tom, Dick and Harry would become a scholar in English".

7. हां, कहने को आ जाती है   "only enough to say, "Yes, I know some".

8. बोलना तो दूर रहा   "not to mention speaking it".

9. रोज़ ही   "Every day there are..."

10. मैं पास नहीं फटकता   "I never go near them even by chance".

11. ... पड़ा रहता हूं   "I'm stuck in ..."

12. मजे से गुल्ली-डंडा खेलो   "Play gullii-DanDaa as much as you want to".

13. अपराध... सहे   "I did do wrong, but who can stand being railed at?"

14. ऐसी-ऐसी लगती बातें कहते "He said things that stung me so sharply."

15. उनकी नज़र... निकले "No sooner did he look at me than I "died"".

16. फिर भी... तिरस्कार न कर सकता "Nevertheless, I could not manage to stop playing even when .. just as man ... "

17. दिल मज़बूत था "I had courage".

18. या यों ही पढ़ गये ? "Or did you just read it perfunctorily?"

19. एक चिल्लू... भी "i.e., to perform the ritual duty of the next-of-kin in offering him a drink of water at his death, and also in offering water to him and the other pitaras in his family line after his death in the srāddha ceremony.

20. दीन-दुनिया दोनों से गया "and he has lost everything in this world and the next."

21. शैतान... होगा "you must have read about Satan also."

22. तब तो तुम आगे बढ़ चुके "(already) ... then you will no doubt go far" (sarcastic).

23. अन्धे... लग गयी "a quail flew into a blind man's hand", i.e., it was purely accidental.

24. जिसका कोई... खाली न जाय "who never misses a shot."

25. और सब नम्बर ग़ायब "you got a zero"

26. हो किस ख़्याल में "what a wrong notion you must have!"

27. इन अभागों को.... बता देता "They didn't even give those unfortunate fellows names. They just took one single name and added II, III, IV, V after it. It they had asked me, I could have thought up a milion names."

28. और जामेट्री... पनाह "and as for geometry, God is the only refuge!"

29. और सारे नम्बर कट गये "and the whole problem is counted wrong."

30. मगर... लिखा है "But what do these examiners care! They see only what is written in the book."

31. अक्षर-अक्षर "every letter"

32. उसके नाम को रोइए "you curse it bitterly under your breath."

33. दूसरों... लगता है "others begin to like him."

34. उस पर दावा... हैं "Nevertheless they claim that they are teachers."

35. तो ये सारे पापड़ बेलने पड़ेंगे... "Then you'll have to roll out all these paapaRs, and you'll know the price of flour and pulses", i.e., you will really have to work and then you will know what the score is in life.

36. लाख फ़ेल हो गया हूं "It is true that I have failed."

37. उसे गिरह बांधिए i.e., "see that you don't ever forget it."

38. भाई साहब... परिश्रम किया था "My brother nearly killed himself working."

39. आख़िर वह... डांटते हैं "after all, it is with my good in mind that he scolds me."

40. उन्होंने धीरज से काम लिया "He dealt with the situation patiently."

41. मेरी... बलवान है "I was always just lucky."

42. किसी को... खबर न थी "Nobody know who was in front of him or behind him."

43. किस काम का "What is it good for?"

44. और परीक्षकों का यहीं हाल है "and the examiners act the same way as they did before."

45. तुम क्या "not to speak of you"

46. तो तुम्हारे हाथ-पांव फूल जायगे "you wouldn't know what to do/you'd be helpless."

47. ... और कुछ न सूझेगा "The only thing you'd be able to think of/ that would occur to you/would be ..."

48. बीमारी.... कैसे चले "sickness, of course, is a very serious thing; but you and I don't even know how to make a month's money last a whole month."

49. लेकिन... ख़र्च कर रहे हैं "But Dad subsisted a great part of his life ... on half of what we are spending."

50. एम० ए० हैं कि नहीं "He's an M.A., isn't he."

51. ख़र्च पूरा न पड़ता था "The money wouldn't stretch to cover all the expenditures."

52. मेरे... चलने पाओ "as long as I am watching, you won't go astray."

53. तुम्हें मेरी... रही हैं "what I am saying is stinging you."

दूध का दाम

अब बड़े-बड़े शहरों में दाइयां, नर्सें और लेडी डाक्टर, सभी पैदा हो गयी हैं[१] ; लेकिन देहातों में जच्चेखानों पर अभी तक भगिंनों का ही प्रभुत्व है और निकट-भविष्य में इसमें कोई तब्दीली होने की आशा नहीं । बाबू महेशनाथ अपने गांव के जमींदार थे, शिक्षित थे और जच्चेखानों में सुधार की आवश्यकता को मानते थे ; लेकिन इसमें जो बाधाएं थीं, उन पर कैसे विजय पाते[२] ? कोई नर्स देहात में जाने पर राजी न हुई और बहुत कहने-सुनने से राजी भी हुई, तो इतनी लम्बी-चौड़ी फीस मांगी कि बाबू साहब को सिर झुकाकर चले आने के सिवा और कुछ न सूझा । लेडी डाक्टर के पास जाने की उन्हें हिम्मत न पड़ी । उसकी फीस पूरी करने के लिए तो शायद बाबू साहब को अपनी आधी जायदाद बेचनी पड़ती ; इसलिए जब तीन कन्याओं के बाद चौथा लड़का पैदा हुआ, तो फिर वही गूदड़ था और वही गूदड़ की बहू । बच्चे अक्सर रात ही को पैदा होते हैं । एक दिन आधीरात को चपरासी ने गूदड़ के द्वार पर ऐसी हांक लगायी कि पास-पड़ोस में भी जाग पड़ गयी[३] । लड़की न थी कि मरी आवाज से पुकारता[४] ।

गूदड़ के घर में इस शुभ अवसर के लिए महीनों से तैयारी हो रही थी । भय था तो यही कि फिर बेटी न हो जाय[५], नहीं तो वही बंधा हुआ एक रुपया और एक साड़ी मिलकर रह जायगी[६] । इस विषय में स्त्री-पुरुष में कितने ही बार झगड़ा हो चुका था, शर्त लग चुकी थी । स्त्री कहती थी--अगर अब की बेटा न हो, तो मुंह न दिखाऊं ; हां-हां, मुंह न दिखाऊं, सारे

सारे लच्छन बेटे के हैं[७] । और गूदड़ कहता था--देख लेना, बेटी होगी और बीच खेत बेटी होगी । बेटा निकले तो मूछें मुंड़ा लूं, हां-हां, मूछें मुड़ा लूं । शायद गूदड़ समझता था कि इस तरह अपनी स्त्री में पुत्र-कामना बलवान् करके वह बेटे की अवाई के लिए रास्ता साफ कर रहा है ।

भूंगी बोली--अब मूंछ मुंड़ा ले दाढ़ीजार कहती थी, बेटा होगा । सुनता ही न था । अपनी रट लगाये जाता था[८] । मैं आप तेरी मूंछें मूंडूंगी, खूंटी तक तो रखूंगी ही नहीं ।

गूदड़ ने कहा--अच्छा मूंड़ लेना भलीमानस । मूछें क्या फिर निकलेंगी ही नहीं ? तीसरे दिन देख लेना, फिर ज्यों-की-त्यों हैं, मगर जो कुछ मिलेगा, उसमें आधा रखा लूंगा[९], कहे देता हूं ।

भूंगी ने अंगूठा दिखाया और अपने तीन महीने के बालक को गूदड़ के सुपुर्द कर सिपाही के साथ चल खड़ी हुई ।

गूदड़ ने पुकारा--अरी सुन तो, कहां भागी जाती है ? मुझे भी बधाई बजाने जाना पड़ेगा उसे कौन संभालेगा ?

भूंगी ने दूर ही से[१०] कहा--इसे वहीं धरती पर सुला देना । मैं आके दूध पिला जाऊंगी ।

(२)

महेशनाथ के यहां अब की भूंगी की खूब खातिरदारियां होने लगीं । सबेरे हरीरा मिलती, दोपहर को पूरियां और हलवा, तीसरे पहर को फिर और रात को फिर और गूदड़ को भी भरपूर परोसा मिलता था । भूंगी अपने बच्चे को दिन-रात में एक-दो बार से ज्यादा न पिला सकती थी । उसके लिए ऊपर के दूध का प्रबन्ध था । भूंगी का दूध बाबूसाहब का भाग्यवान बालक पीता था । और यह सिलसिला बारहवें दिन[११] भी न बन्द हुआ । मालकिन मोटी-ताजी देवी थीं; पर अब की कुछ ऐसा संयोग कि उन्हें दूध हुआ ही नहीं[१२] । तीनों लड़कियों की बार[१३] इतने इफरात से दूध होता था कि लड़कियों को बदहजमी हो जाती थी । अब की एक बूंद नहीं ।

मूंगी दाई भी थी और दूध-पिलाई भी ।

मालकिन कहतीं--मूंगी, हमारे बच्चे को पाल दे, फिर जब तक तू जिये, बैठी खाती रहना[१४] । पांच बीघे माफी दिलवा दूंगी । नाती-पोते तक चैन करेंगे ।

और मूंगी का लाड़ला ऊपर का दूध हजम न कर सकने के कारण बार-बार उलटी करता और दिन-दिन दुबला होता जाता था[१५] ।

मूंगी कहती--बहूजी, मूंडन में चूड़े लूंगी, कहे देती हूं ।

बहूजी उत्तर देतीं--हां हां, चूड़े लेना भाई[१६], धमकाती क्यों है ? चांदी के लेगी या सोने के ?

'वाह बहूजी चांदी के चूड़े पहन के किसे मुंह दिखाऊंगी और किसकी हंसी होगी[१७] ?'

'अच्छा, सोने के लेना भाई, कह तो दिया ।'

'और ब्याह में[१८] कण्ठा लूंगी और चौधरी (गूदड़) के लिए हाथों के तोड़े ।'

'वह भी लेना, भगवान् वह दिन तो दिखावे[१९] ।'

घर में मालकिन के बाद मूंगी का राज्य था । महरियां, महाराजिन, नौकर चाकर सब उसका रोब मानते थे । यहां तक कि खुद बहूजी भी उससे दब जाती थीं । एक बार तो उसने महेशनाथ को भी डांटा था । हंसकर टाल गये । बात चली थी भंगियों की[२०] । महेशनाथ ने कहा था--दुनिया में और चाहे जो कुछ हो जाय, भंगी भंगी ही रहेंगे । इन्हें आदमी बनाना कठिन है[२१] ।

इस पर मूंगी ने कहा था--मालिक, भंगी तो बड़ों-बड़ों को आदमी बनाते हैं[२२], उन्हें कोई क्या आदमी बनाये ।

यह गुस्ताखी करके किसी दूसरे अवसर पर भला मूंगी के सिर के बाल बच सकते थे[२३] ? लेकिन

लेकिन आज बाबूसाहब ठठाकर हंसे और बोले--भंगी बात बड़े पते की कहती है[२४]।

(३)

भूंगी का शासनकाल साल-भर से आगे न चल सका । देवताओं ने बालक के भंगिन का दूध पीने पर आपत्ति की, मोटेराम शास्त्री तो प्रायश्चित्त का प्रस्ताव कर बैठे । दूध तो छुड़ा दिया गया[२५]; लेकिन प्रायश्चित्त की बात हंसी में उड़ गयी । महेशनाथ ने फटकारकर कहा--प्रायश्चित्त की खूब कही शास्त्रीजी, कल तक उसी भंगिन का खून पी कर पला, अब उसमें छूत घुस गयी । वाह रे आपका धर्म[२६]

शास्त्रीजी शिखा फटकारकर बोले--यह सत्य[२७] है, वह कल तक भंगिन का रक्त पीकर पला । मांस खाकर पला[२८], यह भी सत्य है; लेकिन कल की बात कल थी, आज की बात आज । जगन्नाथपुरी[२९] में तो छूत-अछूत सब एक पंगत में खाते हैं; पर यहां तो नहीं खा सकते । बीमारी में तो हम भी कपड़े पहने खा लेते हैं[30], खिचड़ी तक खा लेते हैं बाबूजी; लेकिन अच्छे हो जाने पर तो नेम का पालन करना ही पड़ता है । आप द्धर्म की बात न्यारी है ।

तो इसका यह अर्थ है कि धर्म बदलता रहता है--कभी कुछ, कभी कुछ ?

और क्या ! राजा का धर्म अलग, प्रजा का धर्म अलग, अमीर का धर्म अलग, गरीब का धर्म अलग राजे महराजे जो चाहें खायं, जिसके साथ चाहें खायं, जिसके साथ चाहें शादी-ब्याह करें, उनके लिए कोई बन्धन नहीं । समर्थ पुरुष हैं । बन्धन तो मध्यवालों के लिए है ।

प्रायश्चित्त तो न हुआ लेकिन भंगी को गद्दी से उतरना पड़ा । हां, दान दक्षिणा इतनी मिली कि वह अकेले ले न जा सकी, और सोने के चूड़े भी मिले । एक की जगह दो नयी, सुन्दर साड़ियां--मामूली नैनसुख की नहीं, जैसी लड़कियों की बार मिली थी ।

(४)

इसी साल प्लेग ने जोर बांधा[३१] और गूदड़ पहले ही चपेट में आ गया । मूंगी अकेली रह गयी; पर गृहस्थी ज्यों-की-त्यों चलती रही । लोग ताक लगाये बैठे थे कि मूंगी अब गयी । फंला भंगी से बातचीत हुई, फंला चौधरी आये, लेकिन मूंगी न कहीं आयी, न कहीं गयी, यहां तक कि पांच साल बीत गये और उसका मंगल, दुर्बल और सदा रोगी रहने पर भी, दौड़ने लगा । सुरेश के सामने पिद्दी-सा लगता था ।

एक दिन मूंगी महेशनाथ के घर का परनाला साफ कर रही थी । महीनों से गलीज जमा हो रहा था । आंगन में पानी भरा रहने लगा था । परनाले में एक लम्बा मोटा बांस डालकर जोर से हिला रही थी । पूरा दाहिना हाथ परनाले के अन्दर था कि एकाएक उसने चिल्लाकर हाथ बाहर निकाल लिया और उसी वक्त एक काला सांप परनाले से निकलकर भागा । लोगों ने दौड़कर उसे मार तो डाला, लेकिन मूंगी को न बचा सके । समझे; पानी का सांप है, विषैला न होगा, इसलिए पहले कुछ गफलत की गयी । जब विष देह में फैल गया और लहरें आने लगीं, तब पता चला[३२] कि वह पानी का सांप नहीं, गेहुंवन था ।

मंगल अब अनाथ था । दिन-भर महेशबाबू के द्वार पर मंडलाया करता[३३] । घर में जूठन इतना बचता था कि ऐसे-ऐसे दस-पांच बालक पल सकते थे[३४] । खाने की कोई कमी न थी । हां, उसे तब बुरा जरूर लगता था, जब उसे मिट्टी के सकोरों में ऊपर से[३५] खाना दिया जाता था । सब लोग अच्छे-अच्छे बरतनों में खाते हैं, उसके लिए मिट्टी के सकोरे !

यों उसे इस भेद-भाव का बिलकुल ज्ञान न होता था[३६], लेकिन गांव के लड़के चिढ़ा-चिढ़ाकर उसका अपमान करते रहते थे । कोई उसे अपने साथ खेलाता भी न था । यहां तक कि जिस टाट पर वह सोता था, वह भी अछूत था । मकान के सामने एक नीम का पेड़ था । इसी के नीचे

मंगल का डेरा था । एक फटा-सा टाट का टुकड़ा, दो मिट्टी के सकोरे और एक धोती, जो सुरेशबाबू की उतारन थी । जाड़ा गरमी बरसात हरेक मौसम में वह जगह एक-सी आरामदेह थी, और भाग्य का बली मंगल झुलसती हुई लूं, गलते हुए जाड़े और मूसलधार वर्षा में भी जिन्दा और पहले से कहीं स्वस्थ था[३७] । बस, उसका कोई अपना था, तो गांव का एक कुत्ता, जो अपने सहवर्गियों के ज़ुल्म से दुखी होकर[३८] मंगल की शरण आ पड़ा था । दोनों एक ही खाना खाते, एक ही टाट पर सोते, तबीयत भी दोनों की एक-सी थी, और दोनों एक दूसरे के स्वभाव को जान गये थे । कभी आपस में झगड़ा न होता ।

गांव के धर्मात्मा लोग बाबूसाहब की इस उदारता पर आश्चर्य करते । ठीक द्वार के सामने--पचास हाथ भी न होगा[३९] मंगल का पड़ा रहना उन्हें सोलहों आने धर्म-विरुद्ध जान पड़ता । छि: ! यही हाल रहा, तो थोड़े ही दिनों में धर्म का अन्त ही समझो[४०] । भंगी को भी भगवान् ने ही रचा है, यह हम भी जानते हैं । उनके साथ हमें किसी तरह का अन्याय न करना चाहिए, यह किसे नहीं मालूम ? भगवान् का तो नाम ही पतित-पावन है; लेकिन समाज की मर्यादा भी कोई वस्तु है[४१] ! उस द्वार पर जाते हुए संकोच होता है । गांव के मालिक हैं, जाना तो पड़ता ही है; लेकिन बस यही समझ लो कि घृणा होती है[४२] ।

मंगल और टामी में गहरी छनती थी । मंगल कहता--देखो भाई टामी, जरा और खिसककर सोओ । आखिर मैं कहां लेटूं ? सारा टाट तो तुमने घेर लिया ।

टामी कूं-कूं करता, दुम हिलाता और खिसक जाने के बदले और ऊपर चढ़ आता एवं मंगल का मुंह चाटने लगता ।

शाम को वह एक बार रोज अपना घर देखने और थोड़ी देर रोने[४३] जाता । पहले साल फूस का छप्पर गिर पड़ा, दूसरे साल एक दीवार गिरी और अब केवल आधी-आधी दीवारें खड़ी थीं,

जिनका ऊपरी भाग नोकदार हो गया था । यही उसे स्नेह की सम्पत्ति मिली थी । वही स्मृति, वही आकर्षण, वही प्यास उसे एक बार उस ऊजड़ में खींच ले जाती थी और टामी सदैव उसके साथ होता था । मंगल नोकदार दीवार पर बैठ जाता और जीवन के बीते और आने वाले स्वप्न देखने लगता और टामी बार-बार उछल कर उसकी गोद में आ बैठने की असफल चेष्टा करता ।

(५)

एक दिन कई लड़के खेल रहे थे । मंगल भी पहुंच कर दूर खड़ा हो गया । या तो सुरेश को उस पर दया आयी, या खेलनेवालों की जोड़ी पूरी न पड़ती थी, कह नहीं सकते । जो कुछ भी हो, उसने तजवीज की कि आज मंगल को भी खेल में शरीक कर लिया जाय । यहां कौन देखने आता है । क्या रे मंगल, खेलेगा[४४] ?

मंगल बोला--ना भैया, कहीं मालिक देख लें[४५], तो मेरी चमड़ी उधेड़ दी जाय । तुम्हें क्या, तुम तो अलग हो जाओगे ।

सुरेश ने कहा--तो यहां कौन आता है देखने वे ? चल, हम लोग सवार-सवार खेलेंगे । तू घोड़ा बनेगा, हम लोग तेरे ऊपर सवारी करके दौड़ायेंगे ।

मंगल ने शंका की--मैं बराबर घोड़ा ही रहूंगा, कि सवारी भी करूंगा ? यह बता दो[४६] ।

यह प्रश्न टेढ़ा था । किसी ने इस पर विचार न किया था । सुरेश ने एक क्षण विचार करके कहा--तुझे कौन अपनी पीठ पर बिठायेगा, सोच ? आखिर तू भंगी है कि नहीं ?

मंगल भी कड़ा हो गया । बोला--मैं कब कहता हूं कि मैं भंगी नहीं हूं, लेकिन तुम्हें मेरी ही मां ने अपना दूध पिला कर पाला है । जब तक मुझे भी सवारी करने को न मिलेगी, मैं घोड़ा न बनूंगा । तुम लोग बड़े चघड़ हो । आप तो मजे से सवारी करोगे और मैं घोड़ा ही बना रहूंगा ।

सुरेश ने डांट कर कहा, तुझे घोड़ा बनना पड़ेगा और मंगल को पकड़ने दौड़ा । मंगल भागा ।

सुरेश ने दौड़ाया । मंगल ने कदम और तेज किया । सुरेश ने भी जोर लगाया; मगर वह बहूत खा-खाकर थलथल हो गया था और दौड़ने में उसकी सांस फूलने लगती थी ।

आखिर उसने रुककर कहा--आकर घोड़ा बनो मंगल, नहीं तो कभी पा जाऊंगा, तो बुरी तरह पीटूंगा ।

'तुम्हें भी घोड़ा बनना पड़ेगा ।'

'अच्छा हम भी बन जायेंगे ।'

'तुम पीछे से निकल जाओगे । पहले तुम घोड़ा बन जाओ । मै सवारी कर लूं, फिर मैं बनूंगा ।'

सुरेश ने सचमुच चकमा देना चाहा था । मंगल का यह मुतालबा सुनकर साथियों से बोला--देखते हो इसकी बदमाशी[४७], भंगी है न ।

तीनो ने मंगल को घेर लिया और उसे जबरदस्ती घोड़ा बना दिया । सुरेश ने चटपट उसकी पीठ पर आसन जमा लिया और टिकटिक करके बोला--चल घोड़े, चल ।

मंगल कुछ दूर तक तो चला, लेकिन उस बोझ से उसकी कमर टूटी जाती थी । उसने धीरे से पीठ सिकोड़ी और सुरेश की रान के नीचे से सरक गया[४८] । सुरेश महोदय लद से गिर पड़े और भोंपू बजाने लगे ।

मां ने सुना, सुरेश कहीं रो रहा है । सुरेश कहीं रोये, तो उनके तेज कानों में जरूर भनक पड़ जाती थी और उसका रोना भी बिलकुल निराला होता था, जैसे छोटी लाइन के इंजन की आवाज ।

महरी से बोली--देख तो, सुरेश कहीं रो रहा है, पूछ तो किसने मारा है ?

इतने में सुरेश खुद आंखें मलता हुआ आया । उसे जब रोने का अवसर मिलता था, तो मां

के पास फरियाद लेकर जरूर आता था । मां मिठाई या मेवे देकर आंसू पोंछ देती थी । आप थे तो आठ साल के[४९]; मगर थे बिलकुल गावदी । हद से ज्यादा प्यार ने उसकी बुद्धि के साथ वही किया था, जो हद से ज्यादा भोजन ने उसकी देह के साथ ।

मां ने पूछा--क्यों रोता है सुरेश, किसने मारा ?

सुरेश ने रोकर कहा--मंगल ने छू दिया ।

मां को विश्वास न आया[५०] । मंगल इतना निरीह था कि उससे किसी तरह की शरारत की शंका न होती थी; लेकिन जब सुरेश कसमें खाने लगा, तो विश्वास करना लाजिम हो गया । मंगल को बुलवाकर डांटा--क्यो रे मंगल अब तुझे बदमाशी सूझने लगी । मैंने तुझसे कहा था, सुरेश को कभी मत छूना, याद है कि नहीं, बोल !

मंगल ने दबी आवाज से कहा--याद क्यों नहीं है ।

'तो फिर तूने उसे क्यों छुआ ?'

'मैंने नहीं छुआ ।'

'तूने नहीं छुआ, तो वह रोता क्यों था ?'

'गिर पड़े, इससे रोने लगे ।'

चोरी और सीनाजोरी[५१] ! देवीजी दांत पीसकर रह गयीं । मारतीं, तो[५२] उसी दम स्नान करना पड़ता । छड़ी तो हाथ में लेनी ही पड़ती[५३] और छूत का विद्युत्-प्रवाह इस छड़ी के रास्ते उनकी देह में पैवस्त हो जाता, इसलिए जहां तक गालियां दे सकीं, दीं और हुक्म दिया कि अभी-अभी यहां से निकल जा । फिर जो इस द्वार पर तेरी सूरत नजर आयी, तो खून ही पी जाऊंगी । मुफ्त की रोटियां खा-खाकर शरारत सूझती है; आदि[५४] ।

मंगल में गैरत तो क्या थी, हां, डर था[५५] । चुपके से अपने सकोरे उठाये, टाट का टुकड़ा

बगल में दबाया, धोती कन्धे पर रखी और रोता हुआ वहां से चल पड़ा । अब वह यहां कभी न आयेगा । यही तो होगा कि भूखों मर जायगा । क्या हरज है ? भंगी को कौन पनाह देता ? उसी खंडहर की ओर चला, जहां भले दिनों की स्मृतियां उसके आंसू पोंछ सकती थीं, और खूब फूटफूटकर रोया ।

उसी क्षण टामी भी उसे ढूंढ़ता हुआ पहुंचा और दोनों फिर अपनी व्यथा भूल गये ।

(६)

लेकिन ज्यों-ज्यों दिन का प्रकाश क्षीण होता जाता था, मंगल की ग्लानि भी गायब होती जाती थी । बचपन की बेचैन करने वाली भूख देह का रक्त पी-पीकर और भी बलवान् होती जाती थी । आंखें बार-बार सकोरों की ओर उठ जातीं । वहां अब तक सुरेश की जूठी मिठाइयां मिल गयी होतीं । यहां क्या धूल फांके ?

उसने टामी से सलाह की--खाओगे क्या टामी ? मैं तो भूखा लेट रहूंगा ।

टामी ने कूं-कूं करके शायद कहा--इस तरह का अपमान तो जिन्दगीभर सहना है । यों हिम्मत हारोगे, तो कैसे काम चलेगा ? मुझे देखो न, कभी किसी ने डण्डा मारा, चिल्ला उठा, फिर जरा देर बाद दुम हिलाता हुआ उसके पास जा पहुंचा । हम-तुम दोनों इसीलिए बने हैं भाई !

मंगल ने कहा--तो तुम जाओ, जो कुछ मिले खा लो, मेरी परवाह न करो ।

टामी ने अपनी श्वान-भाषा में कहा--अकेला नहीं जाता, तुम्हें साथ लेकर चलूंगा ।

'मैं नहीं जाता ।'

'तो मैं नहीं जाता ।'

'भूखों मर जाओगे ।'

'तो क्या तुम जीते रहोगे ?'

'मेरा कौन बैठा है, जो रोयेगा[५६] ?'

'यहां भी वही हाल है भाई[५७], क्वार में जिस कुतिया से प्रेम किया था, उसने बेवफाई की और अब कल्लू के साथ है । खैरियत यही हुई कि अपने बच्चे लेती गयी, नहीं तो मेरी जान गाढ़े में पड़ जाती । पांच-पांच बच्चों को कौन पालता ?'

एक क्षण के बाद भूल ने एक दूसरी युक्ति सोच निकाली ।

'मालकिन हमें खोज रही होगी, क्यों टामी ?'

'और क्या ? बाबजी और सुरेश खा चुके होंगे । कहार ने उनकी थाली से जठन निकाल लिया होगा और हमें पुकार रहा होगा ।'

'बाबूजी और सुरेश दोनो की थालियों में घी खूब रहता है, और वह मीठी-मीठी चीज-- हां मलाई !'

'सब-का-सब घूरे पर डाल दिया जायगा ।'

'देखें, हमें खोजने कोई आता है ?'

खोजने कौन आयेगा; क्या कोई पुरोहित हो ? एक बार मंगल-मंगल होगा और बस[५८], थाली परनाले में उड़ेल दी जायगी ।

'अच्छा, तो चलो चलें । मगर मैं छिपा रहूंगा, अगर किसी ने मेरा नाम लेकर न पुकारा; तो मैं लौट जाऊंगा । यह समझ लो ।'

दोनों वहा से निकले और आकर महेशनाथ के द्वार पर अंधेरे में दबककर खड़े हो गये; मगर टामी को सब्र कहां ? वह धीरे से अन्दर घुस गया । देखा, महेशनाथ और सुरेश थाली पर बैठ गये हैं । बरोठे में धीरे से बैठ गया; मगर डर रहा था कि कोई डंडा न मार दे ।

नौकर में बातचीत हो रही थी । एक ने कहा--आज मंगलवा नहीं दिखायी देता । मालकिन ने डांटा था, इससे भागा है साइत ।

दूसरे ने जवाब दिया--अच्छा हुआ, निकाल दिया गया । सबेरे-सबेरे भंगी का मुंह देखना पड़ता था ।

मंगल और अंधेरे में खिसक गया आशा गहरे जल में डूब गयी ।

महेशनाथ थाली से उठ गये । नौकर हाथ धुला रहा है[५९] । अब हुक्का पीयेंगे और सोयेंगे । सुरेश अपनी मां के पास बैठा कोई कहानी सुनता-सुनता सो जायगा । गरीब मंगल की किसे चिन्ता है ? इतनी देर हो गयी, किसी ने भूल से भी[६०] न पुकारा ।

कुछ देर तक निराश-सा वहां खड़ा रहा, फिर एक लम्बी सांस खींचकर जाना ही चाहता था कि [६१] कहार पत्तल में थाली का जूठन ले जाता नजर आया ।

मंगल अंधेरे से निकलकर प्रकाश में आ गया । अब मन को कैसे रोके ?

कहार ने कहा--अरे, तू यहां था ? हमने समझा कि कहीं चला गया । ले, खा ले; मैं फेंकने ले जा रहा था ।

मंगल ने दीनता से कहा--मैं तो बड़ी देर से यहां खड़ा था ।

'तो बोला क्यों नहीं ?'

'मारे डर के ।'

'अच्छा, ले खा ले ।'

उसने पत्तल को ऊपर उठाकर मंगल के फैले हुए हाथों में डाल दिया[६२] । मंगल ने उसकी ओर ऐसी आंखों से देखा, जिसमें दीन कृतज्ञता भरी हुई थी ।

टामी भी अन्दर से निकल आया था । दोनों वहीं नीम के नीचे पत्तल में खाने लगे ।

मंगल ने एक हाथ से टामी का सिर सहलाकर कहा देखो, पेट की आग ऐसी होती है यह लात की मारी हुई रोटियां भी न मिलतीं, तो क्या करते ?

टामी ने दुम हिला दी ।

'सुरेश को अम्मां ने पाला था ।'

टामी ने फिर दुम हिलायी ।

'लोग कहते हैं, दूध का दाम कोई नहीं चुका सकता[६३] और मुझे दूध का यह दाम मिल रहा है ।'

टामी ने फिर दुम हिलायी ।

Notes on दूध का दाम

1. सभी पैदा हो गई हैं "all are to be found"

2. लेकिन इसमें... विजय पाते "But how could he overcome the obstacles to this?"

3. कि पास पड़ोस में भी जाग पड़ गयी ! " ... that the whole neighborhood woke up too."

4. लड़की न थी कि मरी आवाज़ से पुकारता । "It wasn't a girl this time that he should call in a dainty voice."

5. भय था तो यही कि फिर बेटी न हो जाय, "What they were afraid of was that there would be another daughter"; Note the use of न with "afraid of".

6. नहीं तो (see note 5) ... रह जायगी ।"If there were, it would be the same old allotted rupee-note and sari again and nothing more (as a present to the midwife for assisting)."

7. सारे लच्छन बेटे के हैं । "All the signs are that a son will be born."

8. अपनी ही रट लगाये जाता था "just go on talking"

9. उसमें आधा रखा लूंगा " ... I will claim half of it."

10. दूर ही से... "from where she was ... "

11. बारह्वें दिन In the caste-community of Maheshnāth and his wife, the name-giving ceremony is performed on the twelfth day. Until then the mother is considered impure and convalescing. (The pollution associated with childbirth is what makes it possible for the Untouchable woman to serve her during this period.)

12. पर अबकी ... हुआ ही नहीं "But for some reason this time she had no milk at all."

13. तीनों लड़कियों की बार "the times when she had the three girls"

14. ... फिर जब तक ... रहता "then you can just sit and eat for the rest of your life (you won't have to work)."

15. ... दिन दिन दुबला होता जाता था । "each day he kept getting thinner"

16. माई One woman can use this in addressing another.

17. चांदी के ... किसकी हंसी होगी ? "If I put on silver bracelets, who am I going to show, and who do you think they are going to laugh at"; i.e., "People are going to laugh at you, not at me."

18. ब्याह में "at his wedding": Custom would accord a consideration

to a wet-nurse even on such a remote occasion.

19. भगवान् वह दिन तो दिखावें "But God grant that we reach that point first."

20. बात चली थी भंगियों की "The talk was about Bhangis."

21. दुनिया में... कठिन है "Whatever else may happen in this world, a Bhangi will remain a Bhangi. It is hard to civilize them."

22. ... बनाते हैं Refers to the fact that the Bhangis, in their traditional role as sweepers and removers of waste, make the clean and ordered life of others possible.

23. ... भला भूंगी... बच सकते थे "Could the hair of Bhungi's head have been saved?": i.e., no, they would have pulled it all out.

24. भूंगी बात बड़े पते की कहती है "Bhungi's remarks are always full of wisdom."

25. दूध तो छुड़ा दिया गया, "The breast-feeding was stopped."

26. वाह रे ! आपका धर्म "What a wonderful religion you have!"

27. सत्य (- सच : Note the sanskritized speech of the priest - also रक्त instead of खून , etc.)

28. मांस खा कर पला "He has been nourished by eating meat; he has been brought up on meat", i.e., not by actually eating meat himself, but by drinking Bhungi's milk."

29. जगन्नाथपुरी The two great festivals held at Puri in Orissa in honor of Jagannath in the months of jeTh and asaRh

30. कपड़े पहने खा लेते हैं The orthodox Brahman wears no clothing except a घोती (dhoti)

31. ... प्लेग ने जोर बांधा "... there was an epidemic of plague"

32. पता चला "... they came to know..."; "...found out."

33. ... द्वार पर मंडलाया करता । "...kept hovering around the door."

34. ... कि ऐसे-ऐसे दस-पांच बालक पल सकते थे "...that five to ten children like that could be brought up on it"

35. ऊपर से i.e., dropped from above so that the serving spoon does not touch the contaminating bowl.

36. यों उसे इस मेद-भाव का बिल्कुल ज्ञान न होता था "He might not have noticed this discrimination at all."

37. पहले से कहीं स्वस्थ था । "...he was stronger than ever."

38. अपने सहवर्गियों के जुल्म से दुखी होकर "tired of being picked on by his fellow (dog)s"

39. पचास हाथ मी न होगा "It could't have been even fifty 'cubits'."

40. यही हाल रहा , ... घर्म का अन्त ही समझो । "If this sort of thing were to continue, in a very few days one could consider the end of all religion to be at hand."

41. ... कोई वस्तु है " ... is something to be considered"

42. लेकिन बस ... घृणा होती है । "But just understand that it is something one finds disgusting."

43. ... देखने ... रोने inflected infinitive of purpose = " ... to see and to cry ... "

44. क्यों रे मंगल, खेलेगा ? "Will you play, Mangal?"; "How about it, Mangal, will you play?"

45. कहीं मालिक देख लें "If somehow the master should see me ... "

46. मैं बराबर घोड़ा ही रहूंगा, कि सवारी भी करूंगा ? यह बता दो । "Tell me this, will I remain always the horse, or will I later be a rider too?"

47. देखते हो इसकी बदमाशी "You see his deviltry ... "

48. ... और सुरेश की रान से नीचे सरक गया । "and slipped out from between Suresh's thighs"

49. आप थे तो आठ साल के "He WAS eight years old ... "

50. ... मंगल ने छू दिया । मां को विश्वास न आया । "'Mangal touched me.' His mother couldn't believe it." As an Untouchable Mangal was not to touch anyone under any circumstances, let alone the young master of the house.

51. चोरी और सीनाजोरी ! Common expression, lit. "theft and obstinacy

(सीना "chest" + जोर "strong"); cf. "adding insult to injury".

52. मारतीं, तो... "If she were to beat him ... "

53. छड़ी तो हाथ में लेनी ही पड़ती "She would have had to take a stick in her hand, at least ... "

54. मुफ्त की रोटियां खा-खाकर शरारत सूझती है; आदि "You get all this free food so that's why you think of mischief (you don't have to work for it)." The आदि is not part of her statement, but refers to the fact that she went on and on making other similar statements.

55. मंगल में गैरत तो क्या थी, हां, डर था। "It is doubtful that Mangal had a sense of shame (because he had known nothing but humiliation in life anyway) but fear did have a hold on him."

56. मेरा कौन बैठा है, जो रोयेगा "Nobody is here to weep for me."

57. यहां भी वही हाल है भाई! "My situation is exactly the same."

58. एक बार 'मंगल-मंगल' होगा और बस "They will probably just call 'Mangal! Mangal!' once and no more."

59. ... हाथ धुला रहा है After eating, a servant pours water on one's hands to clean them. (धुलाना Caus. of धोना)

60. भूल से भी "even forgetfully; absentmindedly (by force of habit)"

61. ... जाना ही चाहता था कि "he was just about to go when ... "

62. उसने पत्तल को... डाल दिया "He lifted up the leaf-dish and dropped it into Mangal's outstretched hands." Cf. Note 35.

63. लोग कहते हैं... सकता "People say that no one can ever fully repay the price of a mother's milk ... "

मिस पद्मा

कानून में अच्छी सफलता प्राप्त कर लेने के बाद मिस पद्मा को एक नया अनुभव हुआ, वह था जीवन का सूनापन । विवाह को उन्होंने एक अप्राकृतिक बंधन समझा था और निश्चय कर लिया था कि स्वतंत्र रहकर जीवन का उपभोग करूंगी । एम० ए० की डिग्री ली, फिर कानून पास किया और प्रैक्टिस शुरू कर दी । रूपवती थी, युवती थी, मृदुभाषिणी थी और प्रतिभाशालिनी भी थी । मार्ग में कोई बाधा न थी । देखते-देखते वह अपने साथी नौजवान-मर्द वकीलों को पीछे छोड़कर आगे निकल गयी और अब उसकी आमदनी कभी-कभी एक हजार से भी ऊपर बढ़ जाती । अब उतने परिश्रम और सिर-मगजन की आवश्यकता न रही ; मुकदमे अधिकतर वही होते थे, जिनका उसे पूरा अनुभव हो चुका था, उनके विषय में किसी तरह की तैयारी की उसे जरूरत न मालूम होती । अपनी शक्तियों पर कुछ विश्वास भी हो गया था । कानून में कैसे विजय मिल सकती है, इसके कुछ लटके भी उसे मालूम हो गये थे; इसलिए उसे अब बहुत अवकाश मिलता था और इसे वह किस्से-कहानियां पढ़ने, सैर करने, सिनेमा देखने, मिलने-मिलाने[१] में खर्च करती थी । जीवन को सुखी बनाने के लिए किसी व्यसन की जरूरत को वह खूब समझती थी । उसने फूल-पौधे लगाने का व्यसन पाल लिया था । तरह-तरह के बीज और पौधे मंगाती और उन्हें उगते-बढ़ते, फूलते-फलते देखकर खुश होती; मगर फिर भी जीवन में सूने पन का अनुभव होता रहता था । यह बात न थी कि उसे पुरुषों से विरक्ति हो । नहीं, उसके प्रेमियों की कमी न

थी । अगर उसके पास केवल रूप और यौवन होता, तो भी उपासकों का अभाव न रहता; मगर यहां तो रूप और यौवन केसाथ धन भी था । फिर रसिक-वृन्द क्यों चूक जाते ? पद्मा को विलास से तो घृणा थी नहीं, घृणा थी पराधीनता से, विवाह को जीवन का व्यवसाय बनाने से । जब स्वतंत्र रहकर भोग-विलास का आनन्द उड़ाया जा सकता है, तो फिर क्यों न उड़ाया जाय ? भोग में उसे कोई नैतिक बाधा न थी, इसे वह केवल देह की एक भूख समझती थी । इस भूख को किसी साफ-सुथरी दूकान से भी शान्त किया जा सकता है । और पद्मा को साफ-सुथरी दूकान की हमेशा तलाश रहती थी । ग्राहक दूकान में वही चीज लेता है, जो उसे पसन्द आती है । पद्मा भी वही चीज चाहती थी । यों उसके दर्जनों आशिक थे--कई वकील, कई प्रोफेसर, कई डाक्टर, कई रईस । मगर ये सब-के-सब ऐयाश थे--बेफ़िक्र केवल भौंरे की तरह रस लेकर उड़ जानेवाले । ऐसा एक भी न था, जिस पर वह विश्वास कर सकती । अब उसे मालूम हुआ कि उसका मन केवल भोग नहीं चाहता, कुछ और भी चाहता है । वह चीज क्या थी ? पूरा आत्म-समर्पण, और यह उसे न मिलती थी ।

उसके प्रेमियों में एक मि० प्रसाद था--बड़ा ही रूपवान् और धुरन्धर विद्वान् । एक कालेज में प्रोफेसर था । वह भी मुक्त भोग के आदर्श का उपासक था और पद्मा उसपर फिदा थी । चाहती थी उसे बांधकर रखे, सम्पूर्णतः अपना बना ले; लेकिन प्रसाद चंगुल में न आता था ।

सन्ध्या हो गयी थी पद्मा सैर करने जा रही थी कि प्रसाद आ गये सैर करना मुल्तबी हो गया । बातचीत में सैर से कहीं ज्यादा आनन्द था और पद्मा आज प्रसाद से कुछ दिल की बात कहनेवाली थी । कई दिन के सोच-विचार के बाद आज उसने कह डालने ही का निश्चय किया था ।

उसने प्रसाद की नशिली आंखों में आंखें मिलाकर कहा--तुम यहीं मेरे बंगले में आकर क्यों

नहीं रहते ?

प्रसाद ने कुटिल-विनोद के साथ कहा--नतीजा यह होगा कि दो-चार महीने में यह मुलाकात भी बन्द हो जायगी ।

' मेरी समझ में नहीं आया, तुम्हारा क्या आशय है ।'

' आशय वही है, जो मैं कह रहा हूं ।'

' आखिर क्यों ? '

' मैं अपनी स्वतन्त्रता न खोना चाहूंगा, तुम अपनी स्वतन्त्रता न खोना चाहोगी । तुम्हारे पास तुम्हारे आशिक आयेंगे, मुझे जलन होगी । मेरे पास मेरी प्रेमिकाएं आयेंगी, तुम्हें जलन होगी । मन-मुटाव होगा, फिर वैमनस्य होगा और तुम मुझे घर से निकाल दोगी । घर तुम्हारा है ही । मुझे बुरा लगेगा ही, फिर यह मैत्री कैसे निभेगी ? '

दोनों कई मिनट तक मौन रहे । प्रसाद ने परिस्थिति को इतने स्पष्ट, बेलाग, लट्ठमार शब्दों में खोलकर रख दिया था कि कुछ कहने की जगह न मिलती थी ।

आखिर प्रसाद ही को नुकता सूझा । बोला--जब तक हम दोनों यह प्रतिज्ञा न कर लें कि आज से मैं तुम्हारा हूं और तुम मेरी हो, तब तक एक साथ निर्वाह नहीं हो सकता ।

' तुम यह प्रतिज्ञा करोगे ? '

' पहले तुम बतलाओ । '

' मैं करूंगी ।'

' तो मैं भी करूंगा । '

' मगर इस एक बात के सिवा मैं और सभी बातों में स्वतंत्र रहूंगी '। ' और मैं भी इस एक बात के सिवा हर बात में स्वतंत्र रहूंगा । '

'मंज़ूर ।'

'मंज़ूर ।'

'तो कब से ?'

'जब से तुम कहो ।'

'मैं तो कहती हूं, कल ही से ।'

'तय है; लेकिन अगर तुमने विरुद्ध आचरण किया तो ?'

'और तुमने किया तो ?'

'तुम मुझे घर से निकाल सकती हो; लेकिन मैं तुम्हें क्या सजा दूंगा ?'

'तुम मुझे त्याग देना, और क्या करोगे ?'

'जी, नहीं, तब इतने से चित्त को शान्ति न मिलेगी । तब मैं चाहूंगा तुम्हें जलील करना; बल्कि तुम्हारी हत्या करना ।'

'तुम बड़े निर्दयी हो, प्रसाद ।'

'जब तक हम दोनों स्वाधीन हैं, हमें किसी को कुछ कहने का हक नहीं; लेकिन एक बार प्रतिज्ञा में बंध जाने के बाद फिर न मैं उसकी अवज्ञा सह सकूंगी, न तुम सह सकोगी । तुम्हारे पास दण्ड का साधन है, मेरे पास नहीं हैं । कानून मुझे कोई भी अधिकार नहीं देता । मैं तो केवल अपने पशुबल से प्रतिज्ञा का पालन कराऊंगा और तुम्हारे इतने नौकरों के सामने मैं अकेला क्या कर सकूंगा ?

'तुम तो चित्र का श्याम पक्ष ही देखते हो । जब मैं तुम्हारी हो रही हूं, तो यह मकान, नौकर-चाकर और जायदाद सब कुछ तुम्हारा है । हम-तुम दोनों जानते हैं कि ईर्ष्या से ज्यादा घृणित कोई सामाजिक पाप नहीं हैं । तुम्हें मुझसे प्रेम है या नहीं, मैं नहीं कह

सकती ; लेकिन तुम्हारे लिए मैं सब कुछ सहने, सब कुछ करने को तैयार हूं ।'

'दिल से कहती हो पद्मा ?'

'सच्चे दिल से ।'

'मगर न-जाने क्यों तुम्हारे ऊपर विश्वास नहीं आ रहा है ?'

'मैं तो तुम्हारे ऊपर विश्वास कर रही हूं ।'

'यह समझ लो, मैं मेहमान बनकर तुम्हारे घर में न रहूंगा । स्वामी बनकर रहूंगा ।'

'तुम घर के स्वामी ही नहीं, मेरे स्वामी बनकर रहोगे । मैं तुम्हारी स्वामिनी बनकर रहूंगी ।'

(२)

प्रो० प्रसाद और मिस पद्मा दोनों साथ रहते हैं और प्रसन्न हैं । दोनों ही ने जीवन का जो आदर्श मन में स्थिर कर लिया था, वह सत्य बन गया है । प्रसाद को केवल दो सौ रुपये वेतन मिलता है; मगर अब वह अपनी आमदनी का दुगुना भी खर्च कर दे तो परवाह नहीं । पहले वह कभी-कभी शराब पीता था, अब रात-दिन शराब में मस्त रहता है । अब उसके लिए अलग अपनी कार है, अलग अपने नौकर है, तरह-तरह की बहुमूल्य चीजें मंगवाता रहता है और पद्मा बड़े हर्ष से उसकी सारी फजूल-खर्चियां बर्दाश्त करती है । नहीं, बर्दाश्त करने का प्रश्न नहीं है । वह खुद उसे अच्छे-अच्छे सूट पहनाकर, अच्छे-से-अच्छे ठाठ में रखकर प्रसन्न होती है । जैसी घड़ी इस वक्त प्रो० प्रसाद के पास है, शहर के बड़े-से-बड़े रईस के पास न होगी और पद्मा जितना ही उससे दबती है, प्रसाद उतना ही उसे दबाता है । कभी-कभी उसे नागवार भी लगता है ;पर वह किसी अज्ञात कारण से अपने को उसके वश में पाती है । प्रसाद को जरा भी उदास या चिन्तित देखकर उसका मन चंचल हो जाता है । उस पर आवाजें कसी जाती हैं, फबतियां चुस्त की जाती

हैं । जो उसके पुराने प्रेमी थे, वे उसे जलाने और कुढ़ाने का प्रयास भी करते हैं; पर वह प्रसाद के पास आते ही सब कुछ भूल जाती है । प्रसाद ने उस पर पूरा आधिपत्य पा लिया है, और उसे इसका ज्ञान है । पद्मा को उसने बारीक आंखों से पढ़ा है और उसका आसन अच्छी तरह पा गया है ।

मगर जैसे राजनीति के क्षेत्र में अधिकार दुरुपयोग की ओर जाता है, उसी तरह प्रेम के क्षेत्र में भी वह दुरुपयोग की ओर जाता है, और जो कमजोर है, उसे तावान देना पड़ता है । आत्माभिमानिनी पद्मा अब प्रसाद की लौंडी थी और प्रसाद उसकी दुर्बलता का फायदा उठाने में क्यों चूकता ? उसने कील की पतली नोक चुभा ली थी और बड़ी कुशलता से उत्तरोत्तर उसे अन्दर ठोंकता जाता था । यहां तक कि उसने रात को देर में घर आना शुरू किया । पद्मा को अपने साथ न ले जाता, उससे बहाना करता कि मेरे सिर में दर्द है, और जब पद्मा घूमने चली जाती, तो अपनी कार निकाल लेता और उड़ जाता । दो साल गुजर गये थे, और पद्मा को गर्भ था । वह स्थूल भी हो चली थी । उसके रूप में पहले की-सी नवीनता और मादकता न रह गयी थी । वह घर की मुर्गी थी साग बराबर[२] ।

एक दिन इसी तरह पद्मा लौटकर आयी, तो प्रसाद गायब थे । वह झुंझला उठी । इधर कई दिन से वह प्रसाद का रंग बदला हुआ देख रही थी । आज उसने कुछ स्पष्ट बाते कहने का साहस बटोरा । दस बज गये, ग्यारह बज गये, बारह बज गये, पद्मा उसके इन्तजार में बैठी थी । भोजन ठण्ढा हो गया, नौकर-चाकर सो गये । वह बार-बार उठती, फाटक पर जाकर नजर दौड़ाती । बारह-एक बजे के करीब प्रसाद घर आये ।

पद्मा ने साहस तो बहुत बटोरा था; पर प्रसाद के सामने जाते ही उसे अपनी कमजोरी मालूम हुई । फिर भी उसने जरा कड़े स्वर में पूछा--आज आप इतनी रात तक कहां थे ? कुछ

खबर हैं, कितनी रात गयी ?

प्रसाद को वह इस वक्त असुन्दरता की मूर्ति-सी लगी । वह एक विद्यालय की छात्रा के साथ सिनेमा देखने गया था । बोला--तुमको आराम से सो जाना चाहिये था । तुम जिस दशा में हो, उसमें तुम्हें जहां तक हो सके आराम से रहना चाहिये ।

पद्मा का साहस कुछ प्रबल हुआ--तुमसे मैं जो पूछती हूं, उसका जवाब दो । मुझे जहन्नुम में भेजो!

' तो तुम भी मुझे जहन्नुम में जाने दो ।'

' मैं इधर कई दिन से तुम्हारा मिजाज बदला हुआ देख रही हूं ।'

' तुम्हारी आंखों की ज्योति कुछ बढ़ गयी होगी ।'

' तुम मेरे साथ दगा कर रहे हो, यह मैं साफ देख रही हूं ।'

' मैंने तुम्हारे हाथ अपने को बेचा नहीं हैं । अगर तुम्हारा जी मुझसे भर गया हो, तो मैं आज जाने को तैयार हूं ।'

' तुम जाने की धमकी क्या देते हो! यहां तुमने आकर कोई बड़ा त्याग नहीं किया है ।'

' मैंने त्याग नहीं किया है ? तुम यह कहने का साहस कर रही हो । मैं देखता हूं, तुम्हारा मिजाज बिगड़ रहा है । तुम समझती हो, मैंने इसे अपंग कर दिया[3] । मगर मैं इसी वक्त तुम्हें ठोकर मारने को तैयार हूं । इसी वक्त, इसी वक्त! '

पद्मा का साहस जैसे बुझ गया था । प्रसाद ट्रंक संभाल रहा था । पद्मा ने दीन-भाव से कहा--मैंने तो ऐसी कोई बात नहीं कही, जो तुम इतना बिगड़ उठे। मैं तो केवल तुमसे पूछ रही थी, कहां थे । क्या तुम मुझे इतना भी अधिकार देना नहीं चाहते ? मैं कभी तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध कोई काम नहीं करती और तुम मुझे बात-बात पर डांटते रहते हो । तुम्हें मुझ पर

जरा भी दया नहीं आती! मुझे तुमसे कुछ भी तो सहानुभूति मिलनी चाहिए । मैं तुम्हारे लिए क्या कुछ करने को तैयार नहीं हूं ? और आज जो मेरी यह दशा हो गयी है, तो तुम मुझसे आखें फेर लेते हो..... ।

उसका कण्ठ रुंध गया और वह मेज पर सिर रखकर फूट-फूटकर रोने लगी ।

प्रसाद ने पूरी विजय पायी ।

(३)

पद्मा के लिए मातृत्व अब बड़ा ही अप्रिय प्रसंग था । उस पर एक चिन्ता मंड़राती रहती । कभी-कभी वह भय से कांप उठती और पछताती । प्रसाद की निरंकुशता दिन-दिन बढ़ती जाती थी । क्या करे, क्या न करे । गर्भ पूरा हो गया था, वह कोर्ट न जाती थी । दिन-भर अकेली बैठी रहती । प्रसाद सन्ध्या समय आते, चाय-वाय पीकर फिर उड़ जाते, तो ग्यारह-बारह बजे के पहले न लौटते । वह कहां जाते हैं; यह भी उससे छिपा न था । प्रसाद को जैसे उसकी सूरत से नफरत थी[४] । पूर्ण गर्भ, पीला मुख, चिन्तित, सशंक, उदास; फिर भी वह प्रसाद को श्रृंगार और आभूषणों से बांधने की चेष्टा से बाज न आती थी; मगर वह जितना ही प्रयास करती, उतना ही प्रसाद का मन उसकी ओर से फिरता था । इस अवस्था में श्रृंगार उसे और भी भद्दा लगता ।

प्रसव-वेदना हो रही थी । प्रसाद का पता नहीं । नर्स मौजूद थी, लेडी डाक्टर मौजूद थी; मगर प्रसाद का न रहना पद्मा की प्रसव-वेदना को और भी दारुण बना रहा था ।

बालक को गोद में देखकर उसका कलेजा फूल उठा; मगर फिर प्रसाद को सामने न पाकर उसने बालक की ओर से मुंह फेर लिया । मीठे फल में जैसे कीड़े पड़ गये हों ।

पांच दिन सौर-गृह में काटने के बाद जैसे पद्मा जेलखाने से निकली---नंगी तलवार बनी

हुई । माता बन कर वह अपने में एक अद्भुत शक्ति का अनुभव कर रही थी ।

उसने चपरासी को चेक देकर बैंक भेजा । प्रसव-सम्बन्धी कई बिल अदा करने थे । चपरासी खाली हाथ लौट आया ।

पद्मा ने पूछा--रुपए ?

' बैंक के बाबू ने कहा, रुपए सब प्रसाद बाबू निकाल ले गये । '

पद्मा को गोली लग गयी । बीस हजार रुपए प्राणों की तरह संचित कर रखे थे, इसी शिशु के लिए! हाय! सौर से निकलने पर मालूम हुआ, प्रसाद विद्यालय की एक बालिका को लेकर इंगलैंड की सैर करने चले गये । झल्लायी हुई घर में आयी, प्रसाद की तसवीर उठाकर जमीन पर पटक दी और उसे पैरों से कुचला । उसका जितना सामान था, उसे जमा करके दियासलाई लगा दी और उसके नाम पर थूक दिया ।

एक महीना बीत गया था । पद्मा अपने बंगले के फाटक पर शिशु को गोद में लिये खड़ी थी । उसका क्रोध अब शोकमय निराशा बन चुका था । बालक पर कभी दया आती, कभी प्यार आता, कभी घृणा आती । उसने देखा, सड़क पर एक यूरोपियन लेडी अपने पति के साथ अपने बालक को बच्चों की गाड़ी में बिठाये लिये चली जा रही थी । उसने हसरत-भरी आंखों से खुशनसीब जोड़े को देखा और उसकी आखें सजल हो गयीं ।

Notes on मिस पद्मा

1. मिलना-मिलाना "to participate in social activities."

2. घर की मुर्गी साग बराबर "a chicken (a great delicacy) in the house (always available) is like vegetables (the cheap daily staple).

3. मैंने in मैंने इसे अपंग कर दिया refers to Padmā, and means 'this (man)' i.e., Parasād. Here Parasād is quoting her words.

4. उसकी सूरत से नफरत थी "he hated the very sight of her"

नशा

ईश्वरी एक बड़े ज़मींदार का लड़का था और मैं एक ग़रीब क्लर्क का, जिसके पास मेहनत-मजूरी के सिवा और कोई जायदाद न थी । हम दोनों में परस्पर बहसें होती रहती थीं । मैं ज़मींदारों की बुराई करता, उन्हें हिंसक पशु और खून चूसने वाली जोंक और वृक्षों की चोटी पर फूलनेवाला बंझा कहता । वह ज़मींदारोंका पक्ष लेता पर स्वभावत: उसका पहलू कुछ कमज़ोर होता था; क्योंकि उसके पास ज़मींदारों के अनुकूल कोई दलील न थी । यह कहना कि सभी मनुष्य बराबर नहीं होते, छोटे-बड़े हमेशा होते रहते हैं और होते रहेंगे, लचर दलील थी । किसी मानुषीयया नैतिक नियम से इस व्यवस्था का औचित्य सिद्ध करना कठिन था । मैं इस वाद-विवाद की गर्मा-गर्मी में अक्सर तेज हो जाता और लगनेवाली बात कह जाता; लेकिन ईश्वरी हारकर भी मुस्कराता रहता था मैंने उसे कभी गर्म होते नहीं देखा । शायद इसका कारण यह था कि वह अपने पक्ष की कमज़ोरी समझता था । नौकरों से वह सीधे मुंह बात न करता था । अमीरों में जो एक बेदर्दी और उद्दण्डता होती है, इसमें उसे भी प्रचुर भाग मिला था । नौकर ने बिस्तर लगाने में ज़रा भी देर की, दूध जरूरत से ज़्यादा गर्म या ठण्डा हुआ , साइकिल अच्छी तरह साफ़ नहीं हुई तो वह आपे से बाहर हो जाता! सुस्ती या बदतमीजी की उसे जरा भी बरदाशत न थी; पर दोस्तों से और विशेषकर मुझसे उसका व्यवहार सौहार्द और नम्रता से भरा हुआ था । शायद उसकी जगह मैं होता तो मुझमें भी वही कठोरताएं पैदा हो जातीं, जो उसमें

थीं; क्योंकि मेरा लोक-प्रेम सिद्धान्तों पर नहीं, निजी दशाओं पर टिका हुआ था; लेकिन वह मेरी जगह होकर भी शायद अमीर ही रहता; क्योंकि वह प्रकृति से ही विलासी और ऐश्वर्य-प्रिय था।

अबकी दशहरे की छुट्टियों में मैंने निश्चय किया कि घर न जाऊंगा। मेरे पास किराये के लिए रुपये न थे और न मैं घरवालों को तकलीफ देना चाहता था। मैं जानता हूं, वे मुझे जो कुछ देते हैं वह उनकी हैसियत से बहुत ज्यादा है। इसके साथ ही परीक्षा का भी ख़याल था। अभी बहुत कुछ पढ़ना बाकी था और घर जाकर कौन पढ़ता है। बोर्डिंग हाउस में भूत की तरह अकेले पड़े रहने को भी जी न चाहता था। इसलिए जब ईश्वरी ने मुझे अपने घर चलने का नेवता दिया, तो मैं बिना आग्रह के[१] राजी हो गया। ईश्वरी के साथ परीक्षा की तैयारी खूब हो जायगी। वह अमीर होकर भी मेहनती और जहीन है।

उसने इसके साथ ही कहा--लेकिन भाई, एक बात का ख़याल रखना। वहां अगर जमींदारों की निन्दा की तो मुआमला बिगड़ जायगा और मेरे घरवालों को बुरा लगेगा। वह लोग तो असामियों पर इसी दावे से शासन करते हैं कि ईश्वर ने असामियों को उनकी सेवा के लिए ही पैदा किया है। असामी भी समझता है। अगर उसे सुझा दिया जाय कि जमींदार और असामी में कोई मौलिक भेद नहीं है, तो जमींदारों का कहीं पता न लगे।

मैंने कहा--तो क्या तुम समझते हो कि मैं वहां जाकर कुछ और हो जाऊंगा?

'हां, मैं तो यही समझता हूं।'

'तुम गलत समझते हो।'

ईश्वरी ने इसका कोई जवाब न दिया। कदाचित् उसने इस मुआमले को मेरे विवेक पर छोड़ दिया। और बहुत अच्छा किया। अगर वह अपनी बात पर अड़ता तो मैं भी जिद पकड़

लेता ।

(२)

सेकण्ड क्लास तो क्या, मैंने कभी इण्टर क्लास में भी सफ़र न किया था[२] अबकी सेकण्ड क्लास में सफ़र का सौभाग्य प्राप्त हुआ । गाड़ी तो नौ बजे रात को आती थी; पर यात्रा के हर्ष में हम शाम को ही स्टेशन जा पहुंचे । कुछ देर इधर-उधर सैर करने के बाद रिफ्रेशमेण्ट-रूम में जाकर हम लोगों ने भोजन किया । मेरी वेष-भूषा और रंग-ढंग से पारखी खानसामों को यह पहचानने में देर न लगी कि मालिक कौन है और पिछलग्गू कौन; लेकिन न जाने क्यों मुझे उनकी गुस्ताख़ी बुरी लग रही थी । पैसे ईश्वरी के जेब से गये । शायद मेरे पिता को जो वेतन मिलता है, उससे ज्यादा इन ख़ानसामों को इनाम-इकराम में मिल जाता हो । एक अठन्नी तो चलते समय ईश्वरी ही ने दी । फिर भी मैं उन सभों से उसी तत्परता और विनय की प्रतीक्षा करता था, जिससे वे ईश्वरी की सेवा कर रहे थे । क्यों ईश्वरी के हुक्म पर सब-के-सब दौड़ते हैं; लेकिन मैं कोई चीज मांगता हूं तो उतना उत्साह नहीं दिखाते! मुझे भोजन में कुछ स्वाद न मिला । यह भेद मेरे ध्यान को सम्पूर्ण रूप से अपनी ओर खीचे हुए था ।

गाड़ी आयी, हम दोनों सवार हुए । ख़ानसामों ने ईश्वरी को सलाम किया । मेरी ओर देखा भी नहीं ।

ईश्वरी ने कहा--कितने तमीजदार हैं ये सब! एक हमारे नौकर हैं कि कोई काम करने का ढंग नहीं ।

मैंने खट्टे मन से कहा--इसी तरह अगर तुम अपने नौकरों को भी आठ आने रोज इनाम दिया करो तो शायद इससे ज़्यादा तमीजदार हो जायं ।

'तो क्या तुम समझते हो, यह सब केवल इनाम के लालच से इतना अदब करते हैं ?'

'जी नहीं, कदापि नहीं! तमीज और अदब तो इनके रक्त में मिल गया है!'

गाड़ी चली । डाक थी । प्रयाग से चली तो प्रतापगढ़ जाकर रुकी । एक आदमी ने हमारा कमरा खोला । मैं तुरन्त चिल्ला उठा--दूसरा दरजा है--सेकण्ड क्लास है ।

उस मुसाफिर ने डब्बे के अन्दर आकर मेरी ओर एक विचित्र उपेक्षा की दृष्टि से देखकर कहा--जी हां, सेवक भी इतना समझता है, और बीचवाले बर्थ पर बैठ गया । मुझे कितनी लज्जा आयी, कह नहीं सकता ।

भोर होते-होते हम लोग मुरादाबाद पहुंचे । स्टेशन पर कई आदमी हमारा स्वागत करने के लिए खड़े थे । दो भद्र पुरुष थे । पांच बेगार । बेगारों ने हमारा लगेज उठाया । दोनों भद्र पुरुष पीछे-पीछे चले । एक मुसलमान था, रियासत अली; दूसरा ब्राह्मण था, रामहरख । दोनों ने मेरी ओर अपरिचित नेत्रों से[३] देखा । मानो कह रहे हैं, तुम कौवे होकर हंस के साथ कैसे ?

रियासत अली ने ईश्वरी से पूछा--यह बाबू साहब क्या आपके साथ पढ़ते हैं ?

ईश्वरी ने जवाब दिया--हां, साथ पढ़ते भी हैं, और साथ रहते भी हैं । यों कहिए कि आप ही की बदौलत मैं इलाहाबाद पड़ा[४] हुआ हूं, नहीं कब का[५] लखनऊ चला आया होता । अबकी मैं इन्हें घसीट लाया । इनके घर से कई तार आ चुके थे; मगर मैंने इनकारी-जवाब दिलवा दिये । आख़िरी तार तो अर्जेण्ट था, जिसकी फ़ीस चार आने प्रति शब्द है; पर यहां से उसका भी जवाब इनकारी ही गया ।

दोनों सज्जनों ने मेरी ओर चकित नेत्रों से देखा । आतंकित हो जाने की चेष्टा करते हुए जान पड़े ।

रियासत अली ने अर्द्धशंका के स्वर में कहा--लेकिन आप बड़े सादे लिबास में रहते हैं ।

ईश्वरी ने शंका निवारण की--महात्मा गांधी के भक्त हैं साहब खद्दर के सिवा कुछ पहनते

ही नहीं । पुराने सारे कपड़े जला डाले ! यों कहो कि राजा हैं । ढाई लाख सालाना की रियासत है; पर आपकी सूरत देखो तो मालूम होता है, अभी अनाथालय से पकड़कर आये हैं !

रामहरख बोले--अमीरों का ऐसा स्वभाव बहुत कम देखने में आता है[६] । कोई भांप ही नहीं सकता ।

रियासत अली ने समर्थन किया--आपने महाराजा चांगली को देखा होता तो दांतों उंगली दबाते । एक गाढ़े की मिर्जई और चमरौधे जूते पहने बाज़ारों में घूमा करते थे । सुनते हैं[७], एक बार बेगार में पकड़े गये थे और उन्हीं ने दस लाख से कालेज खोल दिया ।

मैं मन में कटा जा रहा था; पर न जाने क्या बात थी कि यह सफ़ेद झूठ उस वक्त मुझे हास्यास्पद न जान पड़ा । उसके प्रत्येक वाक्य के साथ मानो मैं उस कल्पित वैभव के समीपतर आता जाता था ।

मैं शहसवार नहीं हूं । हां, लड़कपन में कई बार लद्दू घोड़ों पर सवार हुआ हूं । यहां देखा तो दो कला-रास घोड़े हमारे लिए तैयार खड़े थे । मेरी तो जान ही निकल गयी । सवार तो हुआ; पर बोटियां कांप रही थीं । मैंने चेहरे पर शिकन न पड़ने दिया[८] । घोड़े को ईश्वरी के पीछे डाल दिया । ख़ैरियत यह हुई कि ईश्वरी ने घोड़े को तेज न किया, वरना शायद मैं हाथ-पांव तुड़वाकर लौटता । सम्भव है ईश्वरी ने समझ लिया हो कि यह कितने पानी में है[९] ।

(३)

ईश्वरी का घर क्या था, किला था[१०] । इमामबाड़े का-सा फाटक, द्वार पर पहरेदार टहलता हुआ, नौकरों का कोई हिसाब नहीं, एक हाथी बंधा हुआ । ईश्वरी ने अपने पिता, चाचा, ताऊ आदि सबसे मेरा परिचय कराया, और उसी अतिशयोक्ति के साथ । ऐसी हवा

बांधी कि कुछ न पूछिए[११] । नौकर-चाकर ही नहीं, घर के लोग भी मेरा सम्मान करने लगे । देहात के ज़मींदार, लाखों का मुनाफ़ा, मगर पुलिस कान्सटेबिल को भी अफ़सर समझनेवाले । कई महाशय तो मुझे हुज़ूर-हुज़ूर कहने लगे[१२] ।

जब जरा एकान्त हुआ, तो मैंने ईश्वरी से कहा--तुम बड़े शैतान हो यार, मेरी मिट्टी क्यों पलीद कर रहे हो ?

ईश्वरी ने दृढ़ मुस्कान के साथ कहा--इन गधों के सामने यही चाल जरूरी थी; वरना सीधे मुंह बोलते भी नहीं ।

जरा देर के बाद नाई हमारे पांव दबाने आया । कुंवर लोग स्टेशन से आये हैं, थक गये होंगे । ईश्वरी ने मेरी ओर इशारा करके कहा--पहले कुंवर साहब के पांव दबा ।

मैं चारपाई पर लेटा हुआ था । मेरे जीवन में ऐसा शायद ही कभी हुआ हो कि किसी ने मेरे पांव दबाये हों । मैं इसे अमीरों के चोंचले, रईसों का गधापन और बड़े आदमियों की मुटमरदी और जाने क्या-क्या कहकर ईश्वरी का परिहास किया करता और मैं पोतड़ों का रईस बनने का स्वांग भर रहा था ।

इतने में दस बज गये । पुरानी सभ्यता के लोग थे । नयी रोशनी[१३] अभी केवल पहाड़ की चोटी तक पहुंच पायी थी । अन्दर से भोजन का बुलावा आया । हम स्नान करने चले । मैं हमेशा अपनी धोती खुद छांट लिया करता हूं; मगर यहां मैंने ईश्वरी की ही भांति अपनी धोती भी छोड़ दी । अपने हाथों अपनी धोती छांटते शर्म आ रही थी । अन्दर भोजन करने चले । होस्टल में जूते पहने मेज़ पर जा डटते थे । यहां पांव धोना आवश्यक था । कहार पानी लिये खड़ा था । ईश्वरी ने पांव बढ़ा दिये । कहार ने उसके पांव धोये । मैंने भी पांव बढ़ा दिये । कहार ने मेरे पांव भी धोये । मेरा वह विचार न जाने कहां चला गया था ।

(४)

सोचा था, वहां देहात में एकाग्र होकर खूब पढ़ेंगे; पर यहां सारा दिन सैर-सपाटे में कट जाता था । कहीं नदी में बज़रे पर सैर कर रहे हैं; कहीं मछलियों या चिड़ियों का शिकार खेल रहे हैं, कहीं पहलवानों की कुश्ती देख रहे हैं, कहीं शतरंज पर जमे हैं । ईश्वरी खूब अण्डे मंगवाता और कमरे 'स्टोव' पर आमलेट बनते । नौकरों का एक जत्था हमेशा घेरे रहता । अपने हाथ-पांव हिलाने की कोई जरूरत नहीं । केवल जबान हिला देना काफ़ी है । नहाने बैठे तो आदमी नहलाने को हाजिर, लेटे तो दो आदमी पंखा झलने को खड़े ।

महात्मा गांधी का कुंवर चला मशहूर था । भीतर से बाहर तक मेरी धाक थी । नाश्ते में जरा भी देर न होने पाये, कहीं कुंवर साहब नाराज न हो जायं, बिछावन ठीक समय पर लग जाय, कुंवर साहब के सोने का समय आ गया । मैं ईश्वरी से भी ज्यादा नाज़ुकदिमाग़ बन गया था, या बनने पर मजबूर किया गया था । ईश्वरी अपने हाथ से बिस्तर बिछा ले, लेकिन कुंवर मेहमान अपने हाथों कैसे अपना बिछावन बिछा सकते हैं! उनकी महानता में बट्टा लग जायगा ।

एक दिन सचमुच यही बात हो गई । ईश्वरी घर में था । शायद अपनी माता से कुछ बातचीत करने में देर हो गयी । यहां दस बज गये । मेरी आंखें नींद से झपक[१४] रही थीं; मगर बिस्तर कैसे लगाऊं ? कुंवर जो ठहरा[१५] । कोई साढ़े ग्यारह बजे महरा आया । बड़ा मुंहलगा नौकर था । घर के धन्धों में मेरा बिस्तर लगाने की उसे सुधि ही न रही । अब जो याद आई तो भागा हुआ आया । मैंने ऐसी डांट बतायी कि उसने भी याद किया होगा ।

ईश्वरी मेरी डांट सुनकर बाहर निकल आया और बोला--तुमने बहुत अच्छा किया । यह सब हरामखोर इसी व्यवहार के योग्य हैं ।

इसी तरह ईश्वरी एक दिन एक जगह दावत में गया हुआ था । शाम हो गयी; मगर लैम्प

न जला । लैम्प मेज पर रखा हुआ था । दियासलाई भी वहीं थी; लेकिन ईश्वरी खुद कभी लैम्प न जलाता था । फिर कुंवर साहब कैसे जलायें ? मैं झुंझला रहा था । समाचार-पत्र आया रखा हुआ था । जी उधर लगा हुआ था;[१६] पर लैम्प नदारद । दैवयोग उसी वक्त मुन्शी रियासत अली आ निकले । मैं उन्ही पर उबल पड़ा, ऐसी फटकार बतायी कि बेचारा उल्लू हो गया[१७] --तुम लोगों को इतनी फ़िक्र भी नहीं कि लैम्प तो जलवा दो ! मालूम नहीं, ऐसे कामचोर आदमियों का यहां कैसे गुजर होता है । मेरे यहां घण्टे-भर निवाह न हो । रियासत अली ने कांपते हुए हाथों से लैम्प जला दिया ।

वहां एक ठाकुर अक्सर आया करता था । कुछ मनचला आदमी था, महात्मा गांधी का परम भक्त । मुझे महात्माजी का चेला समझकर मेरा बड़ा लिहाज करता था; पर मुझसे कुछ पूछते संकोच करता था । एक दिन मुझे अकेला देखकर आया और हाथ बांधकर बोला--सरकार तो गांधी बाबा के चेले हैं न ? लोग कहते हैं कि यहां सुराज हो जायगा तो ज़मींदार न रहेंगे ।

मैंने शान जमायी--जमींदारों के रहने की जरूरत ही क्या है ? यह लोग ग़रीबों का खून चूसने के सिवा और क्या करते हैं ?

ठाकुर ने फिर पूछा--तो क्यों सरकार, सब जमींदारों की जमीन छीन ली जायगी ?

मैंने कहा--बहुत-से लोग तो खुशी से दे देंगे । जो लोग खुशी से न देंगे उनकी जमीन छीननी ही पड़ेगी । हम तो तैयार बैठे हुए है । ज्योंही स्वराज्य हुआ, अपने सारे इलाके असामियों के नाम हिबा कर देंगे ।

मैं कुरसी पर पांव लटकाये बैठा था । ठाकुर मेरे पांव दबाने लगा । फिर बोला--आजकल जमींदार लोग बड़ा जुलुम करते हैं सरकार भी हुज़ूर अपने इलाके में थोड़ी-सी ज़मीन दे दें, तो चलकर वहीं आपकी सेवा में रहें ।

मैंने कहा--अभी तो मेरा कोई अख्तियार नहीं है भाई; लेकिन ज्योंही अख्तियार मिला, मैं सबसे पहले तुम्हें बुलाऊंगा । तुम्हें मोटर-ड्राइवरी सिखाकर अपना ड्राइवर बना लूंगा ।

सुना, उस दिन ठाकुर ने खूब भंग पी और अपनी स्त्री को खूब पीटा और गांव के महाजन से लड़ने पर तैयार हो गया ।

(५)

छुट्टी इस तरह तमाम हुई और हम फिर प्रयाग चले । गांव के बहुत-से लोग हम लोगों को पहुंचाने आये । ठाकुर तो हमारे साथ स्टेशन तक आया । मैंने भी अपना पार्ट खूब सफाई से खेला और अपनी कुबेरोचित विनय और देवत्व की मुहर हरेक हृदय पर लगा दी । जी तो चाहता था, हरेक नौकर को अच्छा इनाम दूं, लेकिन वह सामर्थ्य कहां थी ? वापसी टिकट था ही, केवल गाड़ी में बैठना था; पर गाड़ी आयी तो ठसाठस भरी हुई । दुर्गापूजा की छुट्टियां भोगकर सभी लोग लौट रहे थे । सेकण्ड क्लास में तिल रखने की जगह नहीं । इण्टर क्लास की हालत उससे भी बदतर । यह आख़िरी गाड़ी थी किसी तरह रुक न सकते थे । बड़ी मुश्किल से तीसरे दरज़े में जगह मिली । हमारे ऐश्वर्य ने वहां अपना रंग जमा लिया; मगर मुझे उसमें बैठना बुरा लग रहा था । आये थे आराम से लेटे-लेटे[१६], जा रहे थे सिकुड़े हुए । पहलू बदलने की भी जगह न थी ।

कई आदमी पढ़े-लिखे भी थे वे आपस में अंग्रेजी राज्य की तारीफ करते जा रहे थे । एक महाशय बोले--ऐसा न्याय तो किसी राज्य में नहीं देखा । छोटे-बड़े सब बराबर । राजा भी किसी पर अन्याय करे, तो अदालत उसकी भी गरदन दबा देती है ।

दूसरे सज्जन ने समर्थन किया--अरे साहब, आप खुद बादशाह पर दावा कर सकते हैं । अदालत में बादशाह पर डिग्री हो जाती है ।

एक आदमी, जिसकी पीठ पर बड़ा गट्ठर बंधा था, कलकत्ते जा रहा था । कहीं गठरी रखने की जगह न मिलती थी । पीठ पर बांधे हुए था । इससे बेचैन होकर बार-बार द्वार पर खड़ा हो जाता था । मैं द्वार के पास ही बैठा हुआ था । उसका बार-बार आकर मेरे मुंह को अपनी गठरी से रगड़ना मुझे बहुत बुरा लग रहा था । एक तो[२०] हवा यों ही कम थी, दूसरे उस गंवार का आकर मेरे मुंह पर खड़ा हो जाना मानो मेरा गला दबाना था । मैं कुछ देर ज़ब्त किये बैठा रहा । एकाएक मुझे क्रोध आ गया । मैंने उसे पकड़कर पीछे ढकेल दिया और दो तमाचे ज़ोर-ज़ोर से लगाये ।

उसने आंखें निकालकर कहा--क्यों मारते हो बाबूजी, हमने भी किराया दिया है ।

मैंने उठकर दो-तीन तमाचे और जड़ दिये ।

गाड़ी में तुफान आ गया । चारों ओर से मुझपर बौछार पड़ने लगी ।

'अगर इतने नाजुकमिजाज हो, तो अव्वल दर्जे में क्यों नहीं बैठे ?'

'कोई बड़ा आदमी होगा तो अपने घर का होगा[२१] । मुझे मारते, तो दिखा देता ।'

'क्या कसूर किया था बेचारे ने ! गाड़ी में सांस लेने की जगह नहीं, खिड़की पर सांस लेने खड़ा हो गया तो उस पर इतना क्रोध ! अमीर होकर क्या आदमी अपनी इन्सानियत बिलकुल खो देता है ?'

'यह भी अंग्रेजी राज है, जिसका आप बखान कर रहे थे ।'

एक ग्रामीण बोला--दफ्तरन मा घुस पावत नहीं, उस पै इत्ता मिजाज[२२]

ईश्वरी ने अंग्रेजी में कहा-- What an idiot you are Bir!

और मेरा नशा अब कुछ-कुछ उतरता हुआ मालूम होता था ।

Notes on नशा

1. बिना आग्रह के = आग्रह के बिना

2. सेकण्ड... था "Second class? I've never even travelled by Inter class." Inter(mediate) class was just lower than second; below intermediate was the cheapest class, third. The intermediate class no longer exists.

3. अपरिचित नेत्रों से "lit. with unfamiliar eyes." This implies here not so much that he was unfamiliar to them but that they had never seen anyone (dressed, etc.) like this before.

4. पड़ना "to stay". It suggests here that the place where one is staying is not very satisfactory.

5. कब का "(lit.) when, a long time ago." agrees with the subject of the sentence (मैं (m)) here.

6. ... बहुत कम देखने में आता है " ... is rarely seen."

7. सुनते हैं "We hear, it is said."

8. मैंने चेहरे पर शिकन न पड़ने दिया "I didn't allow a wrinkle to appear, i.e., I didn't show any sign that I was frightened."

9. यह कितने पानी में है "lit. how much water this fellow is in, (i.e., what his capabilities are)."

10. ईश्वरी का घर क्या था, क़िला था "Ishwarī's house was no house, it was a fortress."

11. कुछ न पूछिए (lit. 'Don't ask me anything', "Don't ask') "Don't ask how much he fabricated", i.e., he did a tremendous amount of fabrication.

12. देहात के ज़मींदार... कहने लगे "country landowners (making) a profit of lakhs (of rupees) but who considered even a police constable an officer. Many such people began to call me हुज़ूर ." समझनेवाले is an adjective qualifying महाशय.

13. नयी रोशनी "new light, i.e., modern civilization."

14. आखें नींद से झपकना "to be very sleepy"

15. कुंवर जो ठहरा "being a prince, prince that I was."

16. जी उधर लगा हुआ था "my heart (mind) was there (i.e., on the newspaper)."

17. बेचारा उल्लू हो गया "The poor fellow was dazed, stupefied." (In metaphors the उल्लू is considered to be a stupid, blind creature.)

18. हाथ बांधना "to join hands (in a gesture of request)."

19. लेटे-लेटे "lying down (all the way)"

20. एक तो "for one thing"

21. कोई बड़ा आदमी होगा तो अपने घर का होगा "You may be a big man at home, but that cuts no ice here."

22. दफ्तरन मां घुस पावत नहीं उस पै इता मिजाज (Awadhi) = दफ्तरों में घुस पाते नहीं, उस पै (पर) इतना मिजाज (Standard Hindi) "You don't dare enter the offices (i.e., you are scared of the British officers) but nevertheless you have such a temper."

मेरी पहली रचना

उस वक्त मेरी उम्र कोई १३ साल की रही होगी । हिन्दी बिलकुल न जानता था । उर्दू के उपन्यास पढ़ने-लिखने का उन्माद था । मौलाना शरर, पं० रतननाथ सरशार, मिर्जा रुसवा, मौलवी मुहम्मद अली हरदोई निवासी, उस वक्त के सर्वप्रिय उपन्यास-कार थे । इनकी रचनाएं जहां मिल जाती थीं; स्कूल की याद भूल जाती थी और पुस्तक समाप्त करके ही दम लेता था[१] । उस ज़माने में रेनाल्ड के उपन्यासों की धूम थी । उर्दू में उनके अनुवाद धड़ाधड़ निकल रहे थे और हाथों-हाथ बिकते थे । मैं भी उनका आशिक था । स्व० हजरत रियाज ने, जो उर्दू के प्रसिद्ध कवि थे और जिनका हाल में देहान्त हुआ है रेनाल्ड की एक रचना का अनुवाद 'हरम सरा' के नाम से किया था । उसी जमाने में लखनऊ से साप्ताहिक 'अवध-पंच' के सम्पादक स्व० मौलाना सज्जाद हुसेन ने जो हास्यरस के अमर कलाकार हैं, रेनाल्ड के दूसरे उपन्यास 'धोखा' या 'तिलस्मी फ़ानूस' के नाम से किया था । ये सारी पुस्तकें मैंने उसी जमाने में पढ़ीं । और पं० रतननाथ सरशार से तो मुझे तृप्ति ही न होती थी उनकी सारी रचनाएं मैंने पढ़ डालीं । उन दिनों मेरे पिता गोरखपुर में रहते थे और मैं भी गोरखपुर ही के मिशन स्कूल में आठवें में पढ़ता था[२], जो तीसरा दरजा कहलाता था । रेती पर एक बुकसेलर बुद्धिलाल नाम का रहता था । मैं उसकी दूकान पर जा बैठता था और उसके स्टाक से उपन्यास ले-लेकर पढ़ता था; मगर दूकान पर सारे दिन तो बैठ न सकता था, इसलिए मैं उसकी दूकान से अंग्रेजी पुस्तकों की कुंजियां और

नोट्स लेकर अपने स्कूल के लड़कों के हाथ बेचा करता था और इसके मुआवजे में[३] दूकान से उपन्यास घर लाकर पढ़ता था । दो-तीन वर्षों में मैंने सैकड़ों ही उपन्यास पढ़ डाले होंगे । जब उपन्यासों का स्टाक समाप्त हो गया, तो मैंने नवलकिशोर प्रेस से निकले हुए पुराणों के उर्दू अनुवाद भी पढ़े, और 'तिलस्मी होशरूबा' के कई भाग भी पढ़े । इस बृहद् तिलस्मी ग्रंथ के १७ भाग उस वक्त निकल चुके थे और एक-एक भाग बड़े सुपररायल के आकार के दो-दो हजार पृष्ठों से कम न होगा । और इन १७ भागों के उपरान्त उसी पुस्तक के अलग-अलग प्रसंगों पर पचीसों भाग छप चुके थे । इनमें से भी मैंने कई पढ़े । जिसने इतने बड़े ग्रन्थ की रचना की, उसकी कल्पना-शक्ति कितनी प्रबल होगी, इसका केवल अनुमान किया जा सकता है । कहते हैं, ये कथाएं मौलाना फैजी ने अकबर के विनोदार्थ फारसी में लिखी थीं । इसमें कितना सत्य है, कह नहीं सकता; लेकिन इतनी बृहद् कथा शायद ही संसार की किसी भाषा में हो । पूरी एंसाइक्लोपीडिया समझ लीजिए[४] । एक आदमी तो अपने ६० वर्ष के जीवन[५] में उनकी नकल भी करना चाहे तो नहीं कर सकता । रचना तो दूसरी बात है ।

उसी जमाने में मेरे एक नाते के मामू कभी-कभी हमारे यहां आया करते थे । अधेड़ हो गये थे; लेकिन अभी तक बिन-ब्याहे थे । पास में थोड़ी-सी जमीन थी, मकान था, लेकिन घरनी के बिना सब कुछ सूना था । इसीलिए घर पर जी न लगता था । नातदारियों में घूमा करते थे, और सबसे यही आशा रखते थे कि कोई उनका ब्याह करा दे । इसके लिए सौ-दो-सौ खर्च करने को भी तैयार थे । क्यों उनका ब्याह नहीं हुआ, यह आश्चर्य था । अच्छे खासे हृष्ट-पुष्ट आदमी थे, बड़ी-बड़ी मूछें, औसत कद, सांवला रंग । गांजा पीते थे, इससे आखें लाल रहती थीं । अपने ढंग के धर्मनिष्ठ भी थे । शिवजी को रोजाना जल चढ़ाते थे और मांस-मछली नहीं खाते थे ।

आखिर एक बार उन्होंने भी वही किया , जो बिन-ब्याहे लोग अकसर किया करते हैं ।

एक चमारिन के नयन-बाणों से घायल हो गये । वह उनके यहां गोबर पाथने, बैलों को सानी-पानी देने और इसी तरह के दूसरे फुटकर कामों के लिए नौकर थी । जवान थी, छबीली थी और अपने वर्ग की अन्य रमणियों की भांति प्रसन्नमुख और विनोदिनी थी । 'एक समय सखि सुअरि सुन्दरि'[६] --वाली बात थी । मामू साहब का तृषित हृदय मीठे जल की धारा देखते ही फिसल पड़ा । बातों-बातों में उससे छेड़छाड़ करने लगे । वह इनके मन का भाव ताड़ गई । ऐसी अल्हड़ न थी । और नख़रे करने लगी । केशों में तेल भी पड़ने लगा, चाहे सरसों का ही क्यों न हो[७] । आंखों में काजल भी चमका, ओठों पर मिस्सी भी आई, और काम में ढिलाई भी शुरू हुई । कभी दोपहर को आई और झलक दिखाकर चली गई, कभी सांझ को आई और एक तीर चलाकर चली गई । बैलों को सानी-पानी मामू साहब खुद दे देते, गोबर दूसरे उठा ले जाते, युवती से बिगड़ते क्यों कर[८] ? वहां तो अब प्रेम उदय हो गया था होली में उसे प्रथानुसार एक साड़ी दी; मगर अबकी गजी की साड़ी न थी, ख़ूबसूरत सी सवा दो रुपये की चुन्दरी थी । होली की त्योहारी भी मामूल से चौगुनी दी । और यह सिलसिला यहां तक बढ़ा कि वह चमारिन ही घर की मालकिन हो गई ।

एक दिन सन्ध्या-समय चमारों ने आपस में पंचायत की बड़े आदमी हैं तो हुआ करें, क्या किसी की इज्जत लेंगे[९] ? एक इन लाला के बाप थे कि कभी किसी मेहरिया की ओर आंख उठाकर न देखा, (हालांकि यह सरासर ग़लत था) और एक यह है[१०] कि नीच जाति की बहू-बेटियों पर भी डोरे डालते हैं ? समझाने-बुझाने का मौका न था । समझाने से लाला मानेंगे तो नहीं, उलटे और कोई मामला खड़ा कर देगे । इनके क़लम घुमाने की तो देर है[११] । इसलिए निश्चय हुआ कि लाला साहब को ऐसा सबक देना चाहिए कि हमेशा के लिए याद हो जाय । इज्जत का बदला खून ही चुकाता है, लेकिन मरम्मत से भी कुछ उसकी पुरौती हो सकती है ।

दूसरे दिन शाम को जब चम्पा मामू साहब के घर में आई तो उन्होंने अन्दर का द्वार बन्द कर दिया । महीनों के असमंजस और हिचक और धार्मिक संघर्ष के बाद आज मामू साहब ने अपने प्रेम को व्यावहारिक रूप देने का निश्चय किया था । चाहे कुछ हो जाय, कुल-मरजाद रहे या जाय, बाप-दादा का नाम डूबे या उतराय !

उधर चमारों का जत्था ताक में था ही । इधर किवाड़ बन्द हुए, उधर[१२] उन्होंने द्वार खटखटाना शुरू किया । पहले तो मामू साहब ने समझा कोई आसामी मिलने आया होगा, किवाड़ बन्द पाकर लौट जायगा; लेकिन जब आदमियों का शोर-गुल सुना तो घबड़ाये । जाकर किवाड़ों की दराज से झांका । कोई बीस-पचीस चमार लाठियां लिये, द्वार रोके खड़े किवाड़ों को तोड़ने की चेष्टा कर रहे थे । अब करें तो क्या करें ? भागने का कहीं रास्ता नहीं, चम्पा को कहीं छिपा नहीं सकते । समझ गये कि शामत आ गई । आशिकी इतनी जल्द गुल खिलायेगी यह क्या जानते थे, नहीं इस चमारिन पर दिल को आने ही क्यों देते । उधर चम्पा इन्हीं को कोस रही थी--तुम्हारा क्या बिगड़ेगा, मेरी तो इज्जत लुट गई । घरवाले मूड़ ही काटकर छोड़ेंगे[१३], कहती थी, कभी किवाड़ बन्द न करो, हाथ-पांव जोड़ती थी मगर तुम्हारे सिर पर तो भूत सवार था । लगी मुंह में कालिख की नहीं[१४] ?

मामू साहब बेचारे इस कूचे में कभी न आये थे[१५] । कोई पक्का खिलाड़ी होता तो सौ उपाय निकाल लेता; लेकिन मामू साहब की तो जैसे सिट्टी-पिट्टी भूल गई । बरोठे[१६] में थर-थर कांपते 'हनुमानचलीसा' का पाठ करते हुए खड़े थे । कुछ न सूझता था ।

और उधर द्वार पर कोलाहल बढ़ता जा रहा था, यहां तक कि सारा गांव जमा हो गया । बाम्हन, ठाकुर, कायस्थ सभी तमाशा देखने और हाथ की खुजली मिटाने के लिए[१७] आ पहुंचे । इससे ज्यादा मनोरंजक और स्फूर्तिवर्धक तमाशा और क्या होगा कि एक मर्द एक औरत के साथ

घर में बन्द पाया जाय! फिर वह चाहे कितना ही प्रतिष्ठित और विनम्र क्यों न हो[१८], जनता उसे किसी तरह क्षमा नहीं कर सकती। बढ़ई बुलाया गया, किवाड़ फाड़े गये और मामू साहब भूसे की कोठरी में छिपे हुए मिले। चम्पा आगंन में खड़ी रो रही थी। द्वार खुलते ही भागी। कोई उससे नहीं बोला। मामू साहब भागकर कहां जाते? वह जानते थे, उनके लिए भागने का रास्ता नहीं है। मार खाने के लिए तैयार बैठे थे। मार पड़ने लगी और बेभाव की पड़ने लगी। जिसके हाथ जो कुछ लगा--जूता, छड़ी, छाता, घूसा सभी अस्त्र चले। यहां तक कि मामू साहब बेहोश हो गये और लोगों ने उन्हें मुर्दा समझकर छोड़ दिया। अब इतनी दुर्गति के बाद वह बच भी गये[१९], तो गांव में नहीं रह सकते और उनकी ज़मीन पट्टीदारों के हाथ आयेगी।

इस दुर्घटना की खबर उड़ते-उड़ते हमारे यहां भी पहुंची। मैंने भी उसका खूब आनन्द उठाया। पिटते समय उनकी रूप-रेखा कैसी रही होगी, इसकी कल्पना करके मुझे खूब हंसी आई।

एक महीने तक तो वह हल्दी और गुड़ पीते रहे[२०]। ज्योंही चलने-फिरने लायक हुए, हमारे यहां आये। यहां अपने गांववालों पर डाके का इस्तग़ासा दायर करना चाहते थे।

अगर उन्होंने कुछ दीनता दिखाई होती, तो शायद मुझे हमदर्दी हो जाती, लेकिन उनका वही दम-ख़म था। मुझे खेलते या उपन्यास पढ़ते देखकर बिगड़ना और रोब जमाना और पिता जी से शिकायत करने की धमकी देना, यह अब मैं क्यों सहने लगा था[२१]! अब तो मेरे पास उन्हें नीचा दिखाने के लिए काफी मसाला था!

आखिर एक दिन मैंने यह सारी दुर्घटना एक नाटक के रूप में लिख डाली और अपने मित्रों को सुनाई। सब-के-सब खूब हंसे। मेरा साहस बढ़ा। मैंने उसे साफ-साफ लिख कर वह कापी मामू साहब के सिरहाने रख दी, और स्कूल चला गया। दिल में कुछ डरता भी था, कुछ खुश भी था और कुछ घबराया हुआ भी था। सब से बड़ा कुतूहल यह था कि ड्रामा पढ़कर मामू साहब

क्या कहते हैं । स्कूल में जी न लगता था[२२] । दिल उधर ही टंगा हुआ था[२३] । छुट्टी होते ही घर चला गया । मगर द्वार के समीप आकर पांव रुक गये । भय हुआ, कहीं मामू साहब मुझे मार न बैठे; लेकिन इतना जानता था कि वह एकाध थप्पड़ से ज्यादा मुझे मार न सकेंगे क्योंकि मैं मार खानेवाले लड़कों में न था ।

मगर यह मामला क्या है! मामू साहब चारपाई पर नहीं हैं, जहां वह नित्य लेटे हुए मिलते थे । क्या घर चले गये ? आकर कमरा देखा । वहां भी सन्नाटा । मामू साहब के जूते, कपड़े, गठरी सब लापता । अन्दर जाकर पूछा । मालूम हुआ, मामू साहब किसी जरूरी काम से घर चले गये । भोजन तक नहीं किया ।

मैंने बाहर आकर सारा कमरा छान मारा मगर मेरा ड्रामा--मेरी वह पहली रचना--कहीं न मिली । मालूम नहीं, मामू साहब ने उसे चिराग-अली के सुपुर्द कर दिया[२४] या अपने साथ स्वर्ग ले गये ।

Notes on मेरी पहली रचना

1. ... और पुस्तक समाप्त करके ही दम लेता था " ... and I wouldn't rest until I had finished the book."

2. आठवें में पढ़ता था "I studied in the 8th standard (approximately equivalent to the 8th grade in U.S. schools)."

3. इसके मुआवजे में "in lieu of remuneration"

4. पूरी एंसाइक्लोपीडिया समझ लीजिए "It can be considered an entire encyclopaedia."

5. अपने ६० वर्ष के जीवन 60 years is considered the normal life-span.

6. एक समय सखि सूअरि सुन्दरि "Sometimes (even) a sow seems beautiful." सखि (f) "a female friend" is used as a vocative here.

7. चाहे सरसों का ही क्यों न हो "even if it was just mustard-oil"

8. युवती से बिगड़ते क्योंकर ? "How could he scold a young woman?"

9. बड़े आदमी हैं तो हुआ करें, क्या लाला किसी की इज्जत लेंगे ? "If he is a big man, let him be one. Does that mean he should take away anyone's honor?"

10. एक इन लाला के... और एक यह हैं कि... "Now take this man's father

who never even looked at a woman ... but this one here, who ... "

11. समझाने-बुझाने का... और कोई मामला खड़ा कर देंगे । इनके कलम... की देर है "We don't have a chance of arguing him out of it. Lala will never submit as a result of a talking-to. On the contrary he would just cause some other kind of trouble. All he has to do is move his pen." (i.e., and change his land-records. in which respect the poor tenant chamars are at his mercy.

12. इधर किवाड़ बन्द हुए, उधर उन्होंने "as soon as the door was closed, they ... "

13. घरवाले मूड़ ही काटकर छोड़ेंगे "my family will let me go only after chopping off my head."

14. लगी मुंह में कालिख की नहीं ? "Aren't you disgraced?" (refers to the old custom of humiliating someone by blackening his face with soot.)

15. मामू साहब... न आये थे: A common expression for never having been in this kind of fix before, expecially in matters of love.

16. To understand the action, the reader must keep in mind the plan of the North Indian house, (analogous to the Moorish or Chinese) - a series of rooms built around an inner court. Māmū Sāhab stands on the verandah opening on this court, while the chamars hammer on an outside door.

17. हाथ की खुजली मिटाने के लिए i.e., their palms itched to beat somebody.

18. चाहे कितना ... क्यो न हो "no matter ... he might be."

19. वह बच भी गये "Even if he did escape ... "

20. A traditional remedy for internal injuries, as is turmeric and lime for external bruises.

21. यह अब मैं क्यों सहने लगा था ! "How could I endure this now!"

22. स्कूल में जी न लगता था "at school I couldn't keep my mind on my work."

23. दिल उधर ही टंगा हुआ था "my heart was hanging there (i.e., at home) (I was thinking only of home.)"

24. चिरागअली के सुपुर्द कर दिया "burned"

प्रेम की होली[1]

गंगी का सत्रहवां साल था, पर वह तीन साल से विधवा थी, और जानती थी कि मैं विधवा हूं, मेरे लिए संसार के सुखों के द्वार बन्द हैं । फिर वह क्यों रोये और कलपे ? मेले से सभी तो मिठाई के दोनें और फूलों के हार लेकर नहीं लौटते ? कितनों ही का तो मेले की सजी हुई दूकानें और उन पर खड़े नर-नारी देखकर ही मनोरंजन हो जाता है । गंगी खाती-पीती थी, हंसती-बोलती थी, किसी ने उसे मुंह लटकाये, अपने भाग्य को रोते नहीं देखा । घड़ी रात को उठकर गोबर निकालकर[2], गाय बैलों को सानी देना, फिर उपले पाथना, उसका नित्य का नियम था । तब वह अपने भैया को गाय दुहाने के लिए जगाती थी । फिर कुएं से पानी लाती, चौके का धन्धा शुरू हो जाता । गांव की भावजें[3] उससे हंसी करतीं, पर एक विशेष प्रकार की हंसी छोड़कर, सहेलियां ससुराल से आकर उससे सारी कथा कहतीं, पर एक विशेष प्रसंग बनाकर[4] । सभी उसके वैधव्य का आदर करते थे । जिस छोटे से अपराध के लिए उसकी भावज पर घुड़कियां पड़ती, उनकी मां को गालियां मिलतीं[5], उसके भाई पर मार पड़ती[6] वह उसके लिए क्षम्य था । जिसे ईश्वर ने मारा है, उसे क्या कोई मारे! जो बातें उसके लिए वर्जित थीं उनकी ओर उसका मन ही न जाता था । उसके लिए उनका अस्तित्व ही न था । जवानी के इस उमड़े हुए सागर में मतवाली लहरें न थीं, डरावनी गरज न थी, अचल शान्ति का साम्राज्य था ।

(२)

होली आई, सबने गुलाबी साड़ियां पहनीं[७], गंगी की साड़ी न रंगी गई । मां ने पूछा--बेटी, तेरी साड़ी भी रंग दूं । गंगी ने कहा--नहीं अम्मां, यों ही रहने दो । भावज ने फाग गाया । वह पकवान बनाती रही । उसे इसी में आनन्द था ।

तीसरे पहर दूसरे गांवों के लोग होली खेलने आये । यह लोग[८] भी होली लौटाने जायंगे । गांवों में यही परस्पर व्यवहार है । मैकू महतो ने भंग बनवा रखी थी, चरस-गांजा, माजूम सब कुछ लाये थे । गंगी ने ही भंग पीसी थी, मीठी अलग बनाई थी, नमकीन अलग । उसका भाई पिलाता था, वह हाथ धुलाती थी । जवान सिर नीचा किये पीकर चले जाते, बूढ़े गंगी से पूछ लेते--अच्छी तरह हो न बेटी, या चुहल करते--क्यों री गंगिया[९], भावज तुझे खाना नहीं देती क्या, जो इतनी दुबली हो गई है । गंगिया हंसकर रह जाती । देह क्या उसके बस की थी । न जाने क्यों वह मोटी हुई थी ।

भंग पीने के बाद लोग फाग गाने लगे । गंगिया अपनी चौखट[१०] पर खड़ी सुन रही थी । एक जवान ठाकुर गा रहा था । कितना अच्छा स्वर था, कैसा मीठा । गंगिया को बड़ा आनन्द आ रहा था । मां ने कई बार पुकारा--सुन जा । वह न गई । एक बार गई भी तो जल्दी से लौट आई । उसका ध्यान उसी गाने पर था । न जाने क्या बात उसे खींचे लेती थी, बांधे लेती थी । जवान ठाकुर भी बार-बार गंगिया की ओर देखता और मस्त हो-होकर गाता । उसके साथ वालों को आश्चर्य हो रहा था । ठाकुर को यह सिद्धि कहां मिल गई ! वह लोग बिदा हुए तब भी गंगिया चौखट पर खड़ी थी जवान ठाकुर ने भी उसकी ओर देखा और चला गया ।

गंगिया ने अपने बाप से पूछा--कौन गाता था दादा ?

मैकू ने कहा--कोठार के बुद्धू सिंह का लड़का है गरीबसिंह । बुद्धू रीति-व्यवहार में आते-जाते

थे । उनके मरने के बाद अब वही लड़का आने-जाने लगा ।

गंगी--यहां तो पहले-पहल आया है ?

मैकू--हां, और तो कभी नहीं देखा । मिजाज बिलकुल बाप का-सा है और वैसी ही मीठी बोली है । घमंड तो छू नहीं गया । बुद्धू के बखार में अनाज रखने को जगह न थी, पर चमार को भी देखते तो पहले हाथ उठाते । वही इसका स्वभाव है । गोरू आ रहे थे । गंगी पगहिया लेने भीतर चली गई । वही स्वर उसके कानों में गूंज रहा था ।

(३)

कई महीने गुजर गये । एक दिन गंगी गोबर पाथ रही थी । सहसा उसने देखा, वही ठाकुर सिर झुकाये [११]द्वार पर से चला जा रहा है । वह गोबर छोड़कर उठ खड़ी हुई । घर में कोई मर्द न था । सब बाहर चले गये थे । वह कहना चाहती थी--ठाकुर ! बैठो, पानी पीते जाव[१२] । पर उसके मुंह से बात न निकली । उसकी छाती कितने जोर से धड़क रही थी । उसे एक विचित्र घबराहट होने लगी--क्या करे, कैसे उसे रोक ले । गरीबसिंह ने एक बार उसकी ओर ताका और फिर आंखें नीची कर लीं । उस दृष्टि में क्या बात थी कि गंगी के रोएं खड़े हो गये । वह दौड़ी घर में गई और मां से बोली--अम्मां, वह ठाकुर जा रहे हैं, गरीबसिंह । मां ने कहा--किसी काम से आये होंगे । गंगी बाहर आई तो ठाकुर चला गया था । वह फिर गोबर पाथने लगी, पर उपले टूट-टूट जाते थे, आप ही आप हाथ बन्द हो जाते, मगर फिर चौंककर पाथने लगती, जैसे कहीं दूर से उसके कानों में आवाज़ आ रही हो । वही दृष्टि आंखों के सामने थी । उसमें क्या जादू था ? क्या मोहिनी थी ? उसने अपनी मूक भाषा में कुछ कहा । गंगी ने भी कुछ सुना । क्या कहा, यह वह नहीं जानती, पर वह दृष्टि उसकी आंखों में बसी हुई थी ।

रात को लेटी तब भी वही दृष्टि सामने थी । स्वप्न में भी वही दृष्टि दिखाई दी !

फिर कई महीने गुजर गये । एक दिन संध्या समय मैकू द्वार पर बैठे सन कात रहे थे और गंगी बैलों की सानी चला रही थी कि सहसा चिल्ला उठी--दादा, दादा, ठाकुर।

मैकू ने सिर उठाया तो द्वार पर गरीबसिंह चला आ रहा था । राम-राम हुआ ।

मैकू ने पूछा--कहां[१३] गरीबसिंह! पानी तो पीते जाव ।

गरीब आकर एक माची पर बैठ गया । उसका चेहरा उतरा हुआ था । कुछ वह बीमार-सा जान पड़ता था । मैकू ने कहा--कुछ बीमार थे क्या ?

गरीब--नहीं तो दादा !

मैकू--कुछ मुंह उतरा हुआ है, क्या सूद-ब्याज की चिन्ता में पड़ गये ?

गरीब--तुम्हारे जीते मुझे क्या चिन्ता है दादा !

मैकू--बाकी दे दी न ?

गरीब--हां दादा, सब बेबाक कर दिया ।

मैकू ने गंगी से कहा--बेटी जा, कुछ ठाकुर को पानी पीने को ला । भैया हो तो कहे देना[१४] चिलम दे जाय ।

गरीब ने कहा--चिलम रहने दो दादा! मैं नहीं पीता ।

मैकू--अबकी घर ही तमाकू बनी है, सवाद तो देखो । पीते तो हो ।

गरीब--इतना बेअदब न बनाओ दादा । काका के सामने चिलम नहीं छुई[१५] । मैं तुमको उन्हीं की जगह समझता हूं ।

यह कहते-कहते उसकी आंखें भर आईं । मैकू का हृदय भी गद्गद् हो उठा । गंगी हाथ की टोकरी लिये मूर्ति के समान खड़ी थी । उसकी सारी चेतना, सारी भावना, गरीबसिंह की बातों की ओर खिंची हुई थी । उसमें और कुछ सोचने की, और कुछ करने की शक्ति न थी । ओह !

कितनी नम्रता है, कितनी सज्जनता, कितना अदब !

मैकू ने फिर कहा--सुना नहीं बेटी, जाकर कुछ पानी पीने को लाव[१६]। गंगी चौंक पड़ी । दौड़ी हुई घर में गई । कटोरा मांजा उसमें थोड़ी-सी राब निकाली । फिर लोटा गिलास मांजकर शर्बत बनाया ।

मां ने पूछा--कौन आया है गंगिया ?

गंगी--वह हैं ठाकुर गरीबसिंह । दूध तो नहीं है अम्मां ? रस में मिला देती ।

मां--है क्यों नहीं, हांड़ी में देख ।

गंगी ने सारी मलाई उतारकर रस में मिला दी और लोटा-गिलास लिये बाहर निकली । ठाकुर ने उसकी ओर देखा । गंगी ने सिर झुका[१७] लिया । यह संकोच उसमें कहां से आ गया ?

ठाकुर ने रस पिया और राम-राम करके चला गया ।

मैकू बोला--कितना दुबला हो गया !

गंगी--बीमार है क्या ?

मैकू-- चिन्ता है और क्या ? अकेला आदमी है, इतनी बड़ी गिरस्ती; क्या करे ।

गंगी को रात-भर नींद नहीं आई । उन्हें कौन-सी चिन्ता है ? दादा से कुछ कहा भी तो नहीं । क्यों इतने सकुचाते हैं । चेहरा कैसा पीला पड़ गया है !

सवेरे गंगी ने मां से कहा--गरीबसिंह अबकी बहुत दुबले हो गये हैं अम्मा!

मां--अब वह बेफिक्री कहां है बेटा । बाप के जमाने में खाते थे और खेलते थे । अब तो गिरस्ती का जंजाल सिर पर है ।

गंगी को इस जवाब से सन्तोष न हुआ । बाहर जाकर मैकू से बोली--दादा, तुमने गरीबसिंह को समझा नहीं दिया--क्यों इतनी चिन्ता करते हो ?

मैकू ने उसे आखें फाड़कर देखा और कहा--जा अपना काम कर ।

गंगी पर मानों बज्रपात हो गया । यह कठोर उत्तर और दादा के मुंह से ! हाय ! दादा को भी उनका ध्यान नहीं । कोई उनका मित्र नहीं । उन्हें कौन समझाये ! अबकी वह आयेंगे तो मैं खुद उन्हें समझाऊंगी ।

गंगी रोज सोचती--वह आते होंगे, पर ठाकुर फिर न आये । फिर होली आई । फिर गांवों मे फाग होने लगा । रमणियों ने फिर गुलाबी साड़ियां पहनीं । फिर रंग घोला गया[१८] । मैकू ने भंग, चरस, गांजा मंगवाया । गंगी ने फिर मीठी और नमकीन भंग बनाई । द्वार पर टाट बिछ गया । व्यवहारी लोग आने लगे । मगर कोठार से कोई नहीं आया । शाम हो गई । किसी का पता नहीं । गंगी बेकरार थी । कभी भीतर जाती, कभी बाहर आती । भाई से पूछती--क्या कोठारवाले नहीं आये ? भाई कहता--नहीं । दादा से पूछती--भंग तो नहीं बची, कोठारवाले आवेंगे[१९] तो क्या पीयेंगे ? दादा कहते--अब क्या रात को आवेंगे, सामने तो गांव है । आते होते तो दिखाई न देते ।

रात हो गई, पर गंगी को अभी तक आशा लगी हुई थी । वह मन्दिर के ऊपर चढ़ गई और कोठार की ओर निगाह दौड़ाई । कोई न आता था ।

सहसा उसे उसी सिवाने की ओर आग दहकती हुई दिखाई दी । देखते-देखते ज्वाला प्रचण्ड हो गई । यह क्या ! वहां आज होली जल[२०] रही है । होली तो कल ही जल गई । कौन जाने वहां पण्डितों ने आज होली जलने की सायत बताई हो । तभी वे लोग आज नहीं आये । कल आयेंगे ।

उसने घर आकर मैकू से कहा--दादा, कोठार में तो आज होली जली है ।

मैकू--दुत् पगली ! होली सब जगह कल जल गई ।

गंगी--तुम मानते नहीं हो, मैं मन्दिर पर से देख आई हूं। होली जल रही है। न पतियाते हो तो चलो, मैं दिखा दूं।

मैंकू--अच्छा चल, देखूं।

मैंकू ने गंगी के साथ मन्दिर की छत पर आकर देखा। एक मिनिट तक देखते रहे। फिर बिना कुछ बोले नीचे उतर आये।

गंगी ने कहा--है होली की नहीं, तुम न मानते थे ?

मैंकू--होली नहीं है पगली--चिता है। कोई मर गया है। तभी आज कोठारवाले नहीं आये।

गंगी का कलेजा धक-से हो गया। इतने में किसी ने नीचे से पुकारा--मैंकू महतो, कोठार के गरीबसिंह गुजर गये।

मैंकू नीचे चले गये, पर गंगी वहीं स्तम्भित खड़ी रही। कुछ खबर न रही--मैं कौन हूं, कहां हूं, मालूम हुआ जैसे गरीबसिंह उस सुदूर चिता से निकलकर उसकी ओर देख रहा है--वही दृष्टि थी, वही चेहरा, क्या उसे वह भूल सकती थी। उस दिवस से फिर कभी होली देखने नहीं गई। होली हर साल आती थी, हर साल उसी तरह भंग बनती थी, हर साल उसी तरह फाग होता था; हर साल अबीर और गुलाल उड़ती थी, पर गंगी के लिए होली सदा के लिए चली गई।

Notes on प्रेम की होली

I. A joyful festival celebrated in the month of Phalgun (March) during which time people spray each other with colored waters and powders.

2. She takes the cowdung out of the cattle shed; it is later used in various ways.

3. Gangi is living in her father's house, not with her husband's family.

4. "... पर एक विशेष प्रसंग बनाकर । "but in a particular context", i.e., so as not to say anything that would offend one who has no husband.

5. A common way of abusing a daughter-in-law is to malign her mother.

6. जिस छोटे से अपराध के लिए उसकी भावज पर घुड़कियां पड़तीं, उनकी मां को गालियां मिलतीं, उसके भाई पर मार पड़ती... "the trivial fault for which her sister-in-law would be bawled out, her (the sister-in-law's) mother be insulted, and her (Gangi's) brother beaten . . . "

7. The women's saris are dyed (usually pink) for Holi.

8. यह लोग "these people", i.e., the people of this place.

9. गंगिया an affectionate nickname from गंगी.

10. चौखट a projecting part of a house, opened on to by a doorway, e.g., a small balcony.

11. Because he was too shy to look straight at Gangī.

12. जाव is a dialectal form of जाओ (imperative of जाना 'to go'). पानी पीते जाव "have something to drink before going".

13. कहां lit. "where", (here) "where are you going?"

14. कहे देना (coll. of कह देना) "Tell him".

15. One shows respect to one's elders by not smoking before them.

16. लाव is a dialectal form of लाओ (imperative of लाना 'to bring')

17. सिर झुकाना lit. "to bend, bow one's head", i.e., in shyness, embarrassment.

18. On Holi one mixes colored solutions, and sprays them at all comers.

19. आवेंगे is a dialectal form of आएंगे (m. pl. future of आना 'to come').

20. होली जलाना On the eve of the day on which one sprays colored waters a bonfire is lit. The fire represents (among other things) the burning of the evil Holikā, and the destruction of one's own sins.

कफ़न

झोंपड़े के द्वार पर बाप और बेटा दोनों एक बुझे हुए अलाव के सामने चुपचाप बैठे हुए हैं और अन्दर बेटे की जवान बीबी बुधिया प्रसव-वेदना से पछाड़ खा रही थी । रह-रहकर उसके मुंह से ऐसी दिल हिला देने वाली आवाज़ निकलती थी, कि दोनों कलेजा थाम लेते थे । जाड़ों की रात थी, प्रकृति सन्नाटे में डूबी हुई, सारा गांव अन्धकार में लय हो गया था ।

घीसू ने कहा--मालूम होता है, बचेगी नहीं । सारा दिन दौड़ते हो गया, जा देख तो आ ।

माधव चिढ़कर बोला--मरना ही है तो जल्दी भर क्यों नहीं जाती ? देखकर क्या करूं ?

तू बड़ा बेदर्द है बे । साल-भर जिसके साथ सुख-चैन से रहा, उसी के साथ इतनी बेवफाई!

तो मुझसे तो उसका तड़पना और हाथ-पांव पटकना नहीं देखा जाता ।

चमारों का कुनबा था और सारे गांव में बदनाम । घीसू एक दिन काम करता तो तीन दिन आराम करता । माधव इतना काम-चोर था कि आध घण्टे काम करता तो घटे-भर चिलम पीता । इसलिए उन्हें कहीं मजदूरी नहीं मिलती थी । घर में मुट्ठी-भर अनाज मौजूद हो, तो उनके लिए काम करने की कसम थी । जब दो-चार फाके हो जाते तो घीसू पेड़ पर चढ़कर लकड़ियां तोड़ लाता और जब तक वह पैसे रहते, दोनों इधर-उधर मारे-मारे फिरते । गांव में काम की कमी न थी । किसानों का गांव था, मेहनती आदमी के लिए पचास काम थे । मगर इन दोनों को उसी वक्त बुलाते, जब दो आदमियों से एक का काम पाकर भी सन्तोष कर लेने के सिवा और

कोई चारा न होता । अगर दोनों साधु होते, तो उन्हें सन्तोष और धैर्य के लिए, संयम और नियम [१] की बिलकुल जरूरत न होती । यह तो इनकी प्रकृति थी । विचित्र जीवन था इनका ! घर में मिट्टी के दो-चार बर्तनों के सिवा कोई सम्पति नहीं । फटे चीथड़ों से अपनी नग्नता को ढांके हुए जिये जाते थे । संसार की चिन्ताओं से मुक्त ! कर्ज से लदे हुए । गालियां भी खाते, मार भी खाते, मगर कोई भी गम नहीं । दीन इतने कि वसूली की बिलकुल आशा न रहने पर भी लोग इन्हें कुछ-न-कुछ कर्ज दे देते थे । मटर, आलू की फसल में दूसरों के खेतों से मटर या आलू उखाड़ लाते और भून-भानकर [२] खा लेते या दस-पांच ऊख उखाड़ लाते और रात को चूसते । घीसू नें इसी आकाश-वृत्ति से साठ साल की उम्र काट दी और माधव भी सपूत बेटे की तरह बाप ही के पद-चिन्हों पर चल रहा था, बल्कि उसका नाम और भी उजागर कर रहा था । इस वक्त भी दोनों अलाव के सामने बैठकर आलू भून रहे थे, जो कि किसी खेत से खोद लाये थे । घीसू की स्त्री का तो बहुत दिन हुए देहान्त हो गया था । माधव का ब्याह पिछले साल हुआ था । जबसे यह औरत आई थी, उसने खानदान में व्यवस्था की नींव डाली थी और इन दोनों बे-गैरतों का दोजख भरती रहती थी । जब से वह आई, यह दोनों और भी आरामतलब हो गये थे । बल्कि कुछ अकड़ने भी लगे थे । कोई कार्य करने को बुलाता, निर्व्याज भाव से दुगनी मजदूरी मांगते । वही औरत आज प्रसव-वेदना से मर रही थी और यह दोनों शायद इसी इन्तजार में थे कि वह मर जाय, तो आराम से सोयें ।

घीसू ने आलू निकालकर छीलते हुए कहा--जाकर देख तो, क्या दशा है उसकी ? चुड़ैल का फिसाद होगा, और क्या ? यहां तो ओझा भी एक रुपया मांगता है !

माधव को भय था कि कोठरी में गया, तो घीसू आलुओं का बड़ा भाग साफ कर देगा । बोला--मुझे वहां जाते डर लगता है ।

डर किस बात का है, मैं तो यहां हूं ही ।

तो तुम्हीं जाकर देखो न ?

मेरी औरत जब मरी थी, तो मैं तीन दिन तक उसके पास से हिला तक नहीं, और फिर मुझसे लजायेगी कि नहीं ? जिसका कभी मुंह नहीं देखा, आज उसका उघड़ा हुआ बदन देखूं[3] ! उसे तन की सुध भी तो न होगी ? मुझे देख लेगी तो खुलकर हाथ-पांव भी न पटक सकेगी !

मैं सोचता हूं कोई बाल-बच्चा हुआ, तो क्या होगा ? सोंठ, गुड़, तेल, कुछ भी तो नहीं है घर में ! सब कुछ आ जायगा । भगवान् दें तो ! जो लोग अभी एक पैसा नहीं दे रहे हैं, वे ही कल बुलाकर रुपये देंगे । मेरे नौ लड़के हुए, घर में कभी कुछ न था, मगर भगवान् ने किसी-न-किसी तरह बेड़ा पार ही लगाया ।

जिस समाज में रात-दिन मेहनत करने वालों की हालत उन की हालत से कुछ बहुत अच्छी न थी, और किसानों के मुकाबले में वे लोग, जो किसानों की दुर्बलताओं से लाभ उठाना जानते थे, कहीं ज्यादा सम्पन्न थे, वहां इस तरह की मनोवृत्ति का पैदा हो जाना कोई अचरज की बात न थी । हम तो कहेंगे, घीसू किसानों से कहीं ज्यादा विचारवान् था और किसानों के विचार शून्य समूह में शामिल होने के बदले बैठकबाजों की कुत्सित मण्डली में जा मिला था । हां, उसमें यह शक्ति न थी कि बैठकबाजों के नियम और नीति का पालन करता । इसलिए जहां उसकी मण्डली के और लोग गांव के सरगना और मुखिया बने हुए थे, उस पर सारा गांव उंगली उठाता था । फिर भी उसे यह तसकीन तो थी ही कि अगर वह फटे हाल है तो कम-से-कम उसे किसानों की-सी जा-तोड़ मेहनत तो नहीं करनी पड़ती, और उसकी सरलता और निरीहता से दूसरे लोग बेजा फायदा तो नहीं उठाते! दोनों आलू-निकाल-निकालकर जलते-जलते खाने लगे । कल से कुछ नहीं खाया था । इतना सब्र न था कि उन्हें ठण्डा हो जाने दें । कई बार दोनों की

जबानें जल गईं । छिल जाने पर आलू का बाहरी हिस्सा बहुत ज्यादा गर्म न मालूम होता, लेकिन दांतों के तले पड़ते ही अन्दर का हिस्सा जबान, हलक और तालू को जला देता था और उस अंगारे को मुहं में रखने से ज्यादा खैरियत इसी में थी कि वह अन्दर पहुंच जाय । वहां उसे ठण्डा करने के लिए काफी सामान थे । इसलिए दोनों जल्द-जल्द निगल जाते । हालांकि इस कोशिश में उनकी आखों से आंसू निकल आते ।

घीसू को उस वक्त ठाकुर की बरात याद आई, जिसमें बीस साल पहले वह गया था । उस दावत में उसे जो तृप्ति मिली थी, वह उसके जीवन में एक याद रखने लायक बात थी, और आज भी उसकी याद ताजी थी । बोला-वह भोज नहीं भूलता । तबसे फिर उस तरह का खाना और भरपेट नहीं मिला । लड़कीवालों ने सब को भरपेट पूड़ियां खिलाई थीं, सबको! छोटे-बड़े सबने पूड़ियां खाईं और असली घी की! चटनी, रायता, तीन तरह के सूखे साग, एक रसेदार तरकारी, दही, मिठाई, अब क्या बताऊं कि उस भोज में क्या स्वाद मिला, कोई रोक-टोक नहीं थी, जो चीज चाहो, मांगो, जितना चाहो खाओ । लोगो ने ऐसा खाया, कि किसी से पानी न पिया गया । मगर परोसनेवाले हैं कि पतल में गर्म-गर्म गोल-गोल सुवासित कचौड़ियां डाल देते हैं । मना करते हैं कि नहीं चाहिये, पत्तल पर हाथ से रोके हुए हैं, मगर वह हैं कि दिये जाते हैं । और जब सबने मुहं धो लिया, तो पान-इलायची भी मिली । मगर मुझे पान लेने की कहां सुध थी ? खड़ा हुआ न जाता था![४] चटपट जाकर अपने कम्बल पर लेट गया । ऐसा दिल दरियाव था वह ठाकुर!

माधव ने इन पदार्थों का मन-ही-मन मजा लेते हुए कहा--अब हमें कोई ऐसा भोज नहीं खिलाता ।

'अब कोई क्या खिलायेगा ? वह जमाना दूसरा था । अब तो सबको किफायत सूझती

है । सादी-व्याह में मत खर्च करो, क्रिया-कर्म में मत खर्च करो । पूछो, गरीबों का माल बटोर बटोरकर कहां रखोगे ? बटोरने में तो कमी नहीं है । हां, खर्च में किफायत सूझती है ।

तुमने एक बीस पूरियां खाई होंगी ?

बीस, से ज्यादा खाई थीं !

मैं पचास खा जाता !

पचास से कम मैंने न खाई होंगी । अच्छा पट्ठा था । तू तो मेरा आधा भी नहीं है ।

आलू खाकर दोनों ने पानी पिया और वहीं अलाव के सामने अपनी धोतियां ओढ़कर पांव पेट में डाले सो रहे । जैसे दो बड़े-बड़े अजगर गेंडुलियां मारे पड़े हों ।

और बुधिया अभी तक कराह रही थी ।

(२)

सबेरे माधव ने कोठरी में जाकर देखा, तो उसकी स्त्री ठण्डी हो गई थी । उसके मुंह पर मक्खियां भिनक रही थीं । पथराई हुई आंखें ऊपर टंगी हुई थीं । सारी देह धूल से लथपथ हो रही थी । उसके पेट में बच्चा मर गया था ।

माधव भागा हुआ घीसू के पास आया । फिर दोनों जोर-जोर से हाय-हाय करने और छाती पीटने लगे । पड़ोसवालों ने यह रोना-धोना सुना, तो दौड़े हुए आये और पुरानी मर्यादा के अनुसार इन अभागों को समझाने लगे ।

मगर ज्यादा रोने-पीटने का अवसर न था । कफ़न की और लकड़ी की फिक्र करनी थी । घर में तो पैसा इस तरह गायब था, जैसे चील के घोंसले में मांस ।

बाप-बेटे रोते हुए गांव के ज़मीदार के पास गये । वह इन दोनों की सूरत से नफ़रत करते थे । कई बार इन्हें अपने हाथों पीट चुके थे । चोरी करने के लिए, वादे पर काम पर न

आने के लिए । पूछा--क्या है बे घिसुआ, रोता क्यों है ? अब ता तू दिखाई भी नहीं देता मालूम होता है, इस गांव में रहना नहीं चाहता ।

घीसू ने जमीन पर सिर रखकर आंखों में आंसू भरे हुए कहा-सरकार! बड़ी विपत्ति में हूं । माधव की घरवाली रात को गुजर गई । रात-भर तड़पती रही सरकार हम दोनों उसके सिरहाने बैठे रहे । दवा-दारू जो कुछ हो सका, सब कुछ किया, मुदा वह हमें दगा दे गई । अब कोई एक रोटी देनेवाला भी न रहा मालिक! तबाह हो गये । घर उजड़ गया । आपका गुलाम हूं, अब आपके सिवा कौन उसकी मिट्टी पार लगायेगा । हमारे हाथ में तो जो कुछ था, वह सब तो दवा-दारू में उठ गया । सरकार ही की दया होगी तो उसकी मिट्टी उठेगी । आपके सिवा किसके द्वार पर जाऊं ?

ज़मींदार साहब दयालु थे । मगर घीसू पर दया करना काले कम्बल पर रंग चढ़ाना था । जी में तो आया, कह दें, दूर हो यहां से । यों तो बुलाने से भी नहीं आता, आज जब गरज पड़ी तो आकर ख़ुशामद कर रहा है । हरामख़ोर कहीं का, बदमाश! लेकिन यह क्रोध या दण्ड का अवसर नहीं था । जी में कुढ़ते हुए दो रुपये निकाल कर फेंक दिये । मगर सान्त्वना का एक शव्द भी मुहं से न निकाला । उसकी तरफ़ ताका तक नहीं । जैसे सिर का बोझ उतारा हो ।

जब ज़मींदार साहब ने दो रुपये दिये, तो गांव के बनिये-महाजनों को इनकार का साहस कैसे होता ? घीसू ज़मींदार के नाम का ढिंढोरा भी पीटना जानता था । किसी ने दो आने दिये, किसी ने चार आने । एक घण्टे में घीसू के पास पांच रुपये की अच्छी रकम जमा हो गई । कहीं से नाज मिल गया कहीं से लकड़ी । और दोपहर को घीसू और माधव बाजार से कफ़न लाने चले । इधर लोग बांस-वांस काटने लगे ।

गांव की नर्म दिल स्त्रियां आ-आकर लाश देखती थीं और उसकी बेकसी पर दो बूंद आंसू गिराकर चली जाती थीं ।

(३)

बाज़ार में पहुंचकर घीसू बोला--लकड़ी तो उसे जलाने-भर को मिल गई है क्यों माधव!

माधव बोला-- हां, लकड़ी तो बहुत है, अब कफ़न चाहिये ।

तो चलो कोई हलका-सा कफ़न ले लें!

हां, और क्या! लाश उठते-उठते रात हो जायेगी । रात को कफ़न कौन देखता है ?

कैसा बुरा रिवाज है कि जिसे जीते जी तन ढांकने को चीथड़ा भी न मिले, उसे मरने पर नया कफ़न चाहिये ।

कफ़न लाश के साथ जल ही तो जाता है ।

और क्या रखा रहता है ? यही पांच रुपये पहले मिलते तो दवा-दारू कर लेते ।

दोनों एक दूसरे के मन की बात ताड़ रहे थे । बाजार में इधर-उधर घूमते रहे । कभी इस बज़ाज की दूकान पर गये, कभी उसकी दूकान पर । तरह-तरह के कपड़े, रेशमी और सूती देखे, मगर कुछ जंचा नहीं । यहां तक कि शाम हो गई । तब दोनों न जाने किस दैवी प्रेरणा से एक मधुशाला के सामने आ पहुंचे। और जैसे किसी पूर्व-निश्चित व्यवस्था से अन्दर चले गये । वहां जरा देर तक दोनों असमंजस में पड़े रहे । फिर घीसू ने गद्दी के सामने जाकर कहा--साहूजी, एक बोतल हमें भी देना ।

इसके बाद कुछ चिखौना आया, तली हुई मछली आई और दोनों बरामदे में बैठकर शान्तिपूर्वक पीने लगे ।

कई कुज्जियां ताबड़तोड़ पीने के बाद दोनों सरूर में आ गये ।

घीसू बोला--कफ़न लगाने से क्या मिलता ? आखिर जल ही तो जाता । कुछ बहू के साथ तो न जाता ।

माधव आसमान की तरफ देखकर बोला, मानों देवताओं को अपनी निष्पापता का साक्षी बना रहा हो--दुनिया का दस्तूर है, नहीं लोग बांमनों को हजारों रुपये क्यों दे देते हैं ? कौन देखता है, परलोक में मिलता है या नहीं!

बड़े आदमियों के पास धन है, फूंकें । हमारे पास फूंकने को क्या है ?

लेकिन लोगों को जवाब क्या दोगे ? लोग पूछेंगे नहीं, कफ़न कहां है ?

घीसू हंसा--अबे, कह देंगे कि रुपये कमर से खिसक गये । बहुत ढूंढ़ा, मिले नहीं । लोगों को विश्वास न आयेगा, लेकिन फिर वही रुपये देंगे ।

माधव भी हंसा--इस अनपेक्षित सौभाग्य पर । बोला--बड़ी अच्छी थी बेचारी! मरी तो खूब खिला-पिलाकर!

आधी बोतल से ज्यादा उड़ गई । घीसू ने दो सेर पूड़ियां मंगाईं । चटनी, अचार, कलेजियां। शराबखाने के सामने ही दूकान थी । माधव लपककर दो पत्तलों में सारे सामान ले आया । पूरा डेढ़ रुपया खर्च हो गया । सिर्फ थोड़े से पैसे बच रहे ।

दोनों इस वक्त इस शान से बैठे पूड़ियां खा रहे थे जैसे जंगल में कोई शेर अपना शिकार उड़ा रहा हो । न जवाबदेही का खौफ़ था, न बदनामी की फ़िक्र । इन सब भावनाओं को उन्होंने बहुत पहले ही जीत लिया था ।

घीसू दार्शनिक भाव से बोला--हमारी आत्मा प्रसन्न हो रही है, तो क्या उसे पुन्न न होगा[५] ?

माधव ने श्रद्धा से सिर झुकाकर तसदीक की--जरूर-से-जरूर होगा । भगवान्, तुम अन्तर्यामी

हो । उसे बैकुण्ठ ले जाना । हम दोनों हृदय से आशीर्वाद दे रहे हैं । आज जो भोजन मिला वह कभी उम्र-भर न मिला था ।

एक क्षण के बाद माधव के मन में एक शंका जागी । बोला--क्यों दादा, हम लोग भी तो एक-न-एक दिन वहां जायंगे ही ?

घीसू ने इस भोले-भाले सवाल का कुछ उत्तर न दिया । वह परलोक की बातें सोचकर इस आनन्द में बाधा न डालना चाहता था ।

जो वहां हम लोगों से पूछे कि तुमने हमें कफ़न क्यों नहीं दिया तो क्या कहोगे ?

कहेंगे तुम्हारा सिर[६] !

पूछेगी तो ज़रूर !

तू कैसे जानता है कि उसे कफ़न न मिलेगा ? तू मुझे ऐसा गधा समझता है ? साठ साल क्या दुनिया में घास खोदता रहा हूं ? उसको कफ़न मिलेगा! और बहुत अच्छा मिलेगा!

माधव को विश्वास न आया । बोला--कौन देगा ? रुपये तुमने चट कर दिये । वह तो मुझसे पूछेगी । उसकी मांग में तो सेंदुर मैंने डाला था ।

घीसू गर्म होकर बोला--मैं कहता हूं, उसे कफ़न मिलेगा, तू मानता क्यों नहीं ?

कौन देगा, बताते क्यों नहीं ?

वही लोग देंगे, जिन्होंने कि अबकी दिया । हां अबकी रुपये हमारे हाथ न आयेंगे ।

ज्यों-ज्यों अंधेरा बढ़ता था और सितारों की चमक तेज होती थी , मधुशाला की रौनक भी बढ़ती जाती थी । कोई गाता था, कोई डींग मारता था, कोई अपने संगी के गले लिपटा जाता था । कोई अपने दोस्त के मुंह में कुल्हड़ लगाये देता था ।

वहां के वातावरण में सरूर था, हवा में नशा । कितने तो यहां आकर एक चुल्लू में मस्त

हो जाते थे । शराब से ज्यादा यहां की हवा उन पर नशा करती थी । जीवन की बाधाएं यहां खींच लाती थीं और कुछ देर के लिए यह भूल जाते थे कि वे जीते हैं या मरते हैं । या न जीते हैं, न मरते हैं ।

और यह दोनों बाप-बेटे अब भी मजे ले-लेकर चुसकियां ले रहे थे । सबकी निगाहें इनकी ओर जमी हुई थीं । दोनों कितने भाग्य के बली हैं । पूरी बोतल बीच में है ।

भरपेट खाकर माधव ने बची हुई पूड़ियों का पत्तल उठाकर एक भिखारी को दे दिया, जो खड़ा इनकी ओर भूखी आंखों से देख रहा था । और देने के गौरव, आनन्द और उल्लास का अपने जीवन में पहली बार अनुभव किया ।

घीसू ने कहा--ले जा, खूब खा और आशीर्वाद दे! जिसकी कमाई है, वह तो मर गई मगर तेरा आशीर्वाद उसे जरूर पहुंचेगा । रोयें-रोयें से आशीर्वाद दो, बड़ी गाढ़ी कमाई के पैसे हैं!

माधव ने फिर आसमान की तरफ देखकर कहा--वह बैकुण्ठ में जायगी दादा, बैकुण्ठ की रानी बनेगी ।

घीसू खड़ा हो गया और जैसे उल्लास की लहरों में तैरता हुआ बोला--हां बेटा, बैकुण्ठ में जायगी । किसी को सताया नहीं, किसी को दबाया नही । मरते-मरते हमारी जिन्दगी की सबसे बड़ी लालसा पूरी कर गई । वह न बैकुण्ठ जायगी तो क्या ये मोटे-मोटे लोग जायंगे, जो गरीबों को दोनों हाथों से लूटते हैं, और अपने पाप को धोने के लिए गंगा में नहाते हैं और मन्दिरों में जल चढ़ाते है ?

श्रद्धालुता का यह रंग तुरन्त ही बदल गया । अस्थिरता नशे की खासियत है । दु:ख और निराशा का दौरा हुआ ।

माधव बोला--मगर दादा, बेचारी ने जिन्दगी में बड़ा दु:ख भोगा । कितना दु:ख झेलकर

मरी

वह आंखों पर हाथ रखकर रोने लगा, चीखें मार-मारकर[७] ।

घीसू ने समझाया--क्यों रोता है बेटा, खुश हो कि वह माया-जाल से मुक्त हो गई, जंजाल से छूट गई । बड़ी भाग्यवान थी, जो इतनी जल्द माया-मोह के बन्धन तोड़ दिये ।

और दोनों खड़े होकर गाने लगे--

ठगिनी क्यों नैना झमकावे! ठगिनी ०![८]

पियक्कड़ों की आंखें इनकी ओर लगी हुई थीं और यह दोनों अपने दिल में मस्त गाये जाते थे । फिर दोनों नाचने लगे । उछले भी, कूदे भी । गिरे भी, मटके भी । भाव भी बताये, अभिनय भी किये । और नशे में मदमस्त होकर वहीं गिर पड़े!

Notes on कफ़न

1. Note that संयम and नियम are terms from Yoga philosophy.

2. भूनना combined with भानना is an echo-word formation meaning "to bake and the like, to bake and do other associated activities".

3. No man is supposed to be present at the time of child-birth. Note also that a woman never shows her full face to her father-in-law in the home.

4. मगर मुझे पान लेने की कहां सुध थी ? खड़ा हुआ न जाता था "I didn't eben think of having paan. I couldn't stand up."

5. तो क्या उसे पुन्न न होगा ? "Wouldn't she get the reward of this good deed?"

6. कहेंगे तुम्हारा सिर "What a silly question!"

7. मारना as the second member of a compound indicates suddenness and its intensity.

8. 'ठगिनी क्यों नैना झमकाये ठगिनी' "Deceiver, why do you make bright your eyes?"

शतरंज के खिलाड़ी

वाजिदअली शाह का समय था । लखनऊ विलासिता के रंग में डूबा हुआ था । छोटे-बड़े, ग़रीब-अमीर सभी विलासिता में डूबे हुए थे । कोई नृत्य और गान की मजलिस सजाता था, तो कोई अफ़ीम की पीनक ही में मजे लेता था । जीवन के प्रत्येक विभाग में आमोद-प्रमोद का प्राधान्य था । शासनविभाग में, साहित्य-क्षेत्र में, सामाजिक अवस्था में, कला-कौशल में, उद्योग-धन्धों में, आहार-व्यवहार में, सर्वत्र विलासिता व्याप्त हो रही थी । राजकर्मचारी विषय-वासना में, कविगण प्रेम और विरह [१] के वर्णन में, कारीगर कलाबत्तू और चिकन बनाने में, व्यवसायी सुरमे, इत्र, मिस्सी और उबटन का रोज़गार करने में लिप्त थे । सभी की आंखों में विलासिता का मद छाया हुआ था । संसार में क्या हो रहा है, इसकी किसी को ख़बर न थी । बटेर लड़ रहे हैं । तीतरों की लड़ाई के लिए पाली बदी जा रही है । कहीं चौसर बिछी हुई है; पौ-बारह का शोर मचा हुआ है । कहीं शतरंज का घोर संग्राम छिड़ा हुआ है । राजा से लेकर रंक तक इसी धुन में मस्त थे । यहां तक कि फ़कीरों को पैसे मिलते तो वे रोटियां न लेकर अफ़ीम खाते या मदक पीते । शतरंज, ताश, गंजीफ़ा खेलने से बुद्धि तीव्र होती है, विचार-शक्ति का विकास होता है, पेचीदा मसलों को सुलझाने की आदत पड़ती है । ये दलीलें ज़ोरों के साथ पेश की जाती थीं । (इस सम्प्रदाय के लोगों से दुनिया अब भी ख़ाली नहीं है ।) इसलिए अगर मिरज़ा सज्जादअली और मीर रौशनअली अपना अधिकांश समय बुद्धि तीव्र करनें में व्यतीत करते

थे, तो किसी विचारशील पुरुष को क्या आपत्ति हो सकती थी ? दोनों के पास मौरूसी जागीरें थीं; जीविका की कोई चिन्ता न थी; घर में बैठे चखौतियां करते थे । आख़िर और करते ही क्या ? प्रात:काल दोनों मित्र नाश्ता करके बिसात बिछाकर बैठ जाते, मुहरे सज जाते, और लड़ाई के दावं-पेंच होने लगते । फिर ख़बर न होती थी कि कब दोपहर हुई, कब तीसरा पहर, कब शाम ! घर के भीतर से बार-बार बुलावा आता कि खाना तैयार है । यहां से जवाब मिलता--चलो, आते हैं, दस्तरख़्वान बिछाओ । यहां तक कि बावरची विवश होकर कमरे ही में खाना रख जाता था, और दोनों मित्र दोनों काम साथ-साथ करते थे । मिरज़ा सज्जादअली के घर में कोई बड़ा-बूढ़ा न था, इसलिए उन्हीं के दीवानख़ाने में बाज़ियां होती थीं । मगर यह बात न थी कि मिरज़ा के घर के और लोग उनके इस व्यवहार से ख़ुश हों । घरवालों का तो कहना ही क्या, मुहल्लेवाले, घर के नौकर-चाकर तक नित्य द्वेषपूर्ण टिप्पणियां किया करते थे---बड़ा मनहूस खेल है । घर को तबाह कर देता है । ख़ुदा न करे, किसी को इसकी चाट पड़े, आदमी दीन-दुनिया किसी के काम का नहीं रहता, न घर का, न घाट का[२] । बुरा रोग है । यहां तक कि मिरज़ा की बेगम साहबा को इससे इतना द्वेष था कि अवसर खोज-खोजकर पति को लताड़ती थीं । पर उन्हें इसका अवसर मुश्किल से मिलता था । वह सोती ही रहती थीं, तब तक उधर बाज़ी बिछ जाती थी । और रात को जब सो जाती थीं, तब कहीं मिरज़ाजी घर में आते थे । हां, नौकरों पर वह अपना गुस्सा उतारती रहती थीं--क्या पान मांगे हैं ? कह दो, आकर ले जायं । खाने की फ़ुरसत नहीं है ? ले जाकर खाना सिर पर पटक दो, खायं चाहे कुत्ते को खिलायं । पर दूबदू वह भी कुछ न कह सकती थीं । उनको अपने पति से उतना मलाल न था, जितना मीर साहब से । उन्होंने उनका नाम मीर बिगाड़ू रख छोड़ा था । शायद मिरज़ाजी अपनी सफ़ाई देने के लिए सारा इल्ज़ाम मीर साहब ही के सिर थोप देते थे ।

एक दिन बेगम साहबा के सिर में दर्द होने लगा । उन्होंने लौंडी से कहा--जाकर मिरज़ा साहब को बुला ला । किसी हकीम के यहां से दवा लायें । दौड़, जल्दी कर । लौंडी गयी तो मिरज़ाजी ने कहा--चल, अभी आते हैं । बेगम साहबा का मिज़ाज गरम था । इतनी ताब कहां कि उनके सिर में दर्द हो और पति शतरंज खेलता रहे । चेहरा सुर्ख हो गया । लौंडी से कहा--जाकर कह, अभी चलिए, नहीं तो वह आप ही हकीम के यहां चली जायंगी । मिरज़ाजी बड़ी दिलचस्प बाज़ी खेल रहे थे, दो ही किश्तों में मीर साहब को मात हुई जाती थी । झुंझलाकर बोले--क्या ऐसा दम लबों पर है[3] ? ज़रा सब्र नहीं होता ?

मीर--अरे, तो जाकर सुन ही आइए न । औरतें नाज़ुक-मिज़ाज होती ही हैं ।

मिरज़ा--जी हां, भला क्यों न जाऊं ! दो क़िश्तों में आपको मात होती है ।

मीर--जनाब, इस भरोसे न रहिएगा । वह चाल सोची है कि आपके मुहरे धरे रहें, और मात हो जाय । पर जाइए, सुन आइए । क्यों ख़ामख्वाह उनका दिल दुखाइएगा ?

मिरज़ा--इसी बात पर मात ही करके जाऊंगा ।

मीर--मैं खेलूंगा ही नहीं । आप जाकर सुन आइए ।

मिरज़ा--अरे यार, जाना पड़ेगा हकीम के यहां । सिर-दर्द ख़ाक नहीं है; मुझे परेशान करने का बहाना है ।

मीर--कुछ ही हो, उनकी ख़ातिर तो करनी ही पड़ेगी ।

मिरजा--अच्छा, एक चाल और चल लूं ।

मीर--हरगिज़ नहीं, जब तक आप सुन न आयेंगे, मै मुहरे में हाथ ही न लगाऊंगा ।

मिरज़ा साहब मजबूर होकर अन्दर गये तो बेगम साहबा ने त्योरियां बदलकर, लेकिन कराहते हुए कहा--तुम्हें निगोड़ी शतरंज इतनी प्यारी है । चाहे कोई मर ही जाय, पर उठने का नाम

नहीं लेते ! नौज, कोई तुम-जैसा आदमी हो !

मिरज़ा--क्या कहूं, मीर साहब मानते ही न थे । बड़ी मुश्किल से पीछा छुड़ाकर आया हूं ।

बेगम--क्या जैसे वह खुद निखट्टू हैं, वैसे ही सबको समझते हैं ? उनके भी तो बाल-बच्चे है; या सबका सफ़ाया कर डाला ?

मिरज़ा--बड़ा लती आदमी है । जब आ जाता है, तब मजबूर होकर मुझे भी खेलना पड़ता है ।

बेगम--दुत्कार क्यों नहीं देते ?

मिरज़ा--बराबर के आदमी है; उम्र में दर्जे में मुझसे दो अंगुल ऊंचे । मुलाहिज़ा करना ही पड़ता है ।

बेगम--तो मैं ही दुत्कारे देती हूं । नाराज़ हो जायंगे, हो जायं । कौन किसी की रोटियां चला देता है । रानी रूठेंगी, अपना सुहाग लेंगी [४] । हिरिया, जा बाहर से शतरंज उठा ला । मीर साहब से कहना, मियां अब न खेलेंगे, आप तशरीफ़ ले जाइए ।

मिरज़ा--हां-हां, कहीं ऐसा ग़ज़ब भी न करना ! ज़लील करना चाहती हो क्या ? ठहर हिरिया, कहां जाती है ।

बेगम--जाने क्यों नहीं देते ? मेरा ही खून पिये [५], जो उसे रोके । अच्छा, उसे रोको, मुझे रोको, तो जानूं ?

यह कहकर बेगम साहबा झल्लाई हुई दीवानखाने की तरफ चलीं । मिरज़ा बेचारे का रंग उड़ गया । बीवी की मिन्नतें करने लगे--खुदा के लिए, तुम्हें हज़रत हुसेन की क़सम [६] । मेरी ही मैयत देखे, जो उधर जाय [७] । लेकिन बेगम ने एक न मानी [८] । दीवानखाने के द्वार तक गयीं,

पर एकाएक पर-पुरुष के सामने जाते हुए पांव बंध-से गये । भीतर झांका, संयोग से कमरा ख़ाली था । मीर साहब ने दो-एक मुहरे इधर-उधर कर दिये थे [६] , और अपनी सफ़ाई जताने के लिए बाहर टहल रहे थे । फिर क्या था, बेगम ने अन्दर पहुंचकर बाज़ी उलट दी, मुहरे कुछ तख़्त के नीचे फेंक दिये, कुछ बाहर; और किवाड़े अन्दर से बन्द करके कुंडी लगा दी । मीर साहब दरवाजे पर तो थे ही, मुहरे बाहर फेंके जाते देखे, चूड़ियों की झनक भी कान में पड़ी । फिर दरवाजा बन्द हुआ, तो समझ गये, बेगम साहबा बिगड़ गयीं । चुपके से घर की राह ली ।

मिरज़ा ने कहा--तुमने ग़ज़ब किया ।

बेगम--अब मीर साहब इधर आये, तो खड़े-खड़े निकलवा दूंगी । इतनी लौ ख़ुदा से लगाते, तो वली हो जाते ! आप तो शतरंज खेलें, और मैं यहां चूल्हे-चक्की की फ़िक्र में सिर खपाऊं! जाते हो हकीम साहब के यहां कि अब भी ताम्मुल है ?

मिरज़ा घर से निकले, तो हकीम के घर जाने के बदले मीर साहब के घर पहुंचे, और सारा वृत्तान्त कहा । मीर साहब बोले--मैंने तो जब मुहरे बाहर आते देखे, तभी ताड़ गया । फ़ौरन भागा । बड़ी गुस्सेवर मालूम होती हैं । मगर आपने उन्हें यों सिर चढ़ा रखा है, यह मुनासिब नहीं । उन्हें इससे क्या मतलब कि आप बाहर क्या करते हैं । घर का इन्तज़ाम करना उनका काम है; दूसरी बातों से उन्हें क्या सरोकार ?

मिरज़ा--ख़ैर, यह तो बताइए, अब कहां जमाव होगा ?

मीर--इसका क्या ग़म है [१०] । इतना बड़ा घर पड़ा हुआ है [११] । बस यहीं जमे [१२] ।

मिरज़ा--लेकिन बेगम साहबा को कैसे मनाऊंगा ? जब घर पर बैठा रहता था , तब तो वह इतना बिगड़ती थीं; यहां बैठक होगी, तो शायद ज़िन्दा न छोड़ेंगी ।

मीर--अजी बकने भी दीजिए, दो-चार रोज में आप ही ठीक हो जायंगी । हां, आप इतना

कीजिए कि आज से ज़रा तन जाइए[१३] ।

(२)

मीर साहब की बेगम किसी अज्ञात कारण से मीर साहब को घर से दूर रहना ही उपयुक्त समझती थीं । इसलिए वह उनके शतरंज-प्रेम की कभी आलोचना न करती थीं; बल्कि कभी-कभी मीर साहब को देर हो जाती, तो याद दिला देती थीं । इन कारणों से मीर साहब को भ्रम हो गया था कि मेरी स्त्री अत्यन्त विनयशील और गम्भीर है । लेकिन जब दीवानखाने में बिसात बिछने लगी, और मीर साहब दिन-भर घर में रहने लगे, तो बेगम साहबा को बड़ा कष्ट होने लगा । उनकी स्वाधीनता में बाधा पड़ गयी । दिन-भर दरवाजे पर झांकने को तरस जातीं ।

उधर नौकरों में भी कानाफूसी होने लगी । अब तक दिन-भर पड़े-पड़े मक्खियां मारा करते थे । घर में चाहे कोई आवे, चाहे कोई जाय, इनसे कुछ मतलब न था । अब आठों पहर की धौंस हो गयी । कभी पान लाने का हुक्म होता, कभी मिठाई का । और हुक्का तो किसी प्रेमी के हृदय की भांति नित्य जलता ही रहता था । वे बेगम साहबा से जा-जाकर कहते--हुजूर, मियां की शतरंज तो हमारे जी का जंजाल हो गयी । दिन-भर दौड़ते-दौड़ते पैरों में छाले पड़ गये । यह भी कोई खेल है कि सुबह को बैठे तो शाम कर दी । घड़ी आध घड़ी दिल-बहलाव के लिए खेल लेना बहुत है । खैर, हमें तो कोई शिकायत नहीं; हुजूर के गुलाम हैं, जो हुक्म होगा, बजा ही लायेंगे; मगर यह खेल मनहूस है । इसका खेलनेवाला कभी पनपता नहीं; घर पर कोई-न-कोई आफ़त ज़रूर आती है । यहां तक कि[१४] एक के पीछे मुहल्ले-के-मुहल्ले तबाह होते देखे गये हैं । सारे मुहल्ले में यही चरचा होती रहती है । हुजूर का नमक खाते हैं, अपने आक़ा की बुराई सुन-सुनकर रंज होता है । मगर क्या करें ? इस पर बेगम साहबा कहतीं--मैं तो खुद इसको पसन्द नहीं करती । पर वह किसी की सुनते ही नहीं, क्या किया जाय !

मुहल्ले में भी जो दो-चार पुराने ज़माने के लोग थे, आपस में भांति-भांति के अमंगल की कल्पनाएं करने लगे--अब ख़ैरियत नहीं है । जब हमारे रईसों का यह हाल है, तो मुल्क का ख़ुदा ही हाफ़िज़ है [१५] । यह बादशाहत शतरंज के हाथों तबाह होगी । आसार बुरे हैं ।

राज्य में हाहाकार मचा हुआ था । प्रजा दिन-दहाड़े लूटी जाती थी । कोई फ़रियाद सुननेवाला न था । देहातों की सारी दौलत लखनऊ में खिंची आती थी और वह वेश्याओं में, भांड़ों में और विलासिता के अन्य अंगों की पूर्ति में उड़ जाती थी । अंग्रेज़ कम्पनी का ऋण दिन-दिन बढ़ता जाता था । कमली दिन-दिन भीग कर भारी होती जाती थी । देश में सुव्यवस्था न होने के कारण वार्षिक कर भी न वसूल होता था । रेज़ीडेंट बार-बार चेतावनी देता था, पर यहां तो लोग विलासिता के नशे में चूर थे; किसी के कानों पर जूं न रेंगती थी ।

ख़ैर, मीर साहब के दीवानख़ाने में शतरंज होते कई महीने गुज़र गये । नये-नये नक्शे हल किये जाते; नये-नये क़िले बनाये जाते; नित्य नयी व्यूहरचना होती; कभी-कभी खेलते-खेलते झौंड़ हो जाती; तू-तू मैं-मैं [१६] तक की नौबत आ जाती; पर शीघ्र ही दोनों मित्रों में मेल हो जाता । कभी-कभी ऐसा भी होता कि बाज़ी उठा दी जाती; मिरज़ाजी रूठकर अपने घर चले आते । मीर साहब अपने घर में जा बैठते । पर रात-भर की निद्रा के साथ सारा मनोमालिन्य शान्त हो जाता था । प्रातःकाल दोनों मित्र दीवानख़ाने में आ पहुंचते थे ।

एक दिन दोनों मित्र बैठे हुए शतरंज की दलदल में गोते खा रहे थे कि इतने में घोड़े पर सवार एक बादशाही फ़ौज का अफ़सर मीर साहब का नाम पूछता हुआ आ पहुंचा । मीर साहब के होश उड़ गये । यह क्या बला सिर पर आयी ! यह तलबी किस लिए हुई है ! अब ख़ैरियत नहीं नज़र आती । घर के दरवाज़े बन्द कर लिये । नौकरों से बोले--कह दो, घर में नहीं हैं ।

सवार--घर में नहीं, तो कहां हैं ?

नौकर--यह मैं नहीं जानता । क्या काम है ?

सवार--काम तुझे क्या बताऊंगा ? हुज़ूर में तलबी है । शायद फौज के लिए कुछ सिपाही मांगे गये हैं । जागीरदार हैं कि दिल्लगी[१७] मोरचे पर जाना पड़ेगा, तो आटे-दाल का भाव मालूम हो जायगा ।

नौकर--अच्छा, तो जाइए, कह दिया जायगा ।

सवार--कहने की बात नहीं है । मैं कल ख़ुद आऊंगा, साथ ले जाने का हुक्म हुआ है ।

सवार चला गया । मीर साहब की आत्मा कांप उठी । मिरज़ाजी से बोले--कहिए जनाब, अब क्या होगा ?

मिरज़ा--बड़ी मुसीबत है । कहीं मेरी तलबी भी न हो ।

मीर--कम्बख़्त कल फिर आने को कह गया है ।

मिरज़ा--आफ़त है, और क्या ! कहीं मोरचे पर जाना पड़ा, तो बेमौत मरे ।

मीर--बस, यही एक तदबीर है कि घर पर मिलो ही नहीं । कल से गोमती पर कहीं वीराने में नक्शा जमे । वहां किसे ख़बर होगी । हज़रत आकर आप लौट जायंगे ।

मिरज़ा--वल्लाह, आपको ख़ूब सूझी ! इसके सिवाय और कोई तदबीर ही नहीं है ।

इधर मीर साहब की बेगम उस सवार से कह रही थी, तुमने ख़ूब धता बताया ।

उसने जवाब दिया--ऐसे गावदियों को तो चुटकियों पर नचाता हूं । इनकी सारी अक्ल और हिम्मत तो शतरंज ने चर ली । अब भूलकर भी घर पर न रहेंगे ।

(३)

दूसरे दिन से दोनों मित्र मुंह अंधेरे घर से निकल खड़े होते । बगल में एक छोटी-सी दरी दबाये, डिब्बे में गिलौरियां भरे, गोमती पार की एक पुरानी वीरान मसजिद में चले जाते, जिसे

शायद नवाब आसफ़उद्दौला ने बनवाया था । रास्ते में तम्बाकू, चिलम और मदरिया ले लेते, और मसजिद में पहुंच, दरी बिछा, हुक्का भरकर शतरंज खेलने बैठ जाते थे । फिर उन्हें दीन-दुनिया की फ़िक्र न रहती थी । किश्त, शह आदि दो एक शब्दों के सिवा उनके मुंह से और कोई वाक्य नहीं निकलता था । कोई योगी भी समाधि में इतना एकाग्र न होता होगा । दोपहर को जब भूख मालूम होती तो दोनों मित्र किसी नानवाई की दूकान पर जाकर खाना खाते, और एक चिलम हुक्का पीकर फिर संग्राम-क्षेत्र में डट जाते । कभी-कभी तो उन्हें भोजन का भी ख्याल न रहता था ।

इधर देश की राजनीतिक दशा भयंकर होती जा रही थी । कम्पनी की फ़ौजें लखनऊ की तरफ़ बढ़ी चली आती थीं । शहर में हलचल मची हुई थी । लोग बाल-बच्चों को लेकर देहातों में भाग रहे थे । पर हमारे दोनों खिलाड़ियों को इसकी ज़रा भी फिक्र न थी । वे घर से आते तो गलियों में होकर । डर था कि कहीं किसी बादशाही मुलाज़िम की निगाह न पड़ जाय, जो बेगार में पकड़ जायं । हज़ारों रुपये सालाना की जागीर मुफ़्त ही हज़म करना चाहते थे [१८] ।

एक दिन दोनों मित्र मसजिद के खंडहर में बैठे हुए शतरंज खेल रहे थे । मिरजा की बाज़ी कुछ कमज़ोर थी । मीर साहब उन्हें किश्त-पर-किश्त दे रहे थे । इतने में कम्पनी के सैनिक आते हुए दिखाई दिये । यह गोरों की फ़ौज थी, जो लखनऊ पर अधिकार जमाने के लिए आ रही थी ।

मीर साहब बोले--अंग्रेज़ी फ़ौज आ रही है; ख़ुदा ख़ैर करे ।

मिरज़ा--आने दीजिए, किश्त बचाइए । यह किश्त ।

मीर--ज़रा देखना चाहिए, यहीं आड़ में खड़े हो जायं ।

मिरज़ा--देख लीजिएगा, जल्दी क्या है, फिर किश्त !

मीर--तोपख़ाना भी है । कोई पांच हज़ार आदमी होंगे । कैसे-कैसे जवान; लाल बन्दरों के-से मुंह । सूरत देखकर ख़ौफ़ मालूम होता है ।

मिरज़ा--जनाब, हीले न कीजिए । ये चकमे किसी और को दीजिएगा । यह किश्त !

मीर--आप भी अजीब आदमी हैं । यहां तो शहर पर आफ़त आयी हुई है, और आपको किश्तों की सूझी है ! कुछ इसकी भी ख़बर है कि शहर घिर गया, तो घर कैसे चलेंगे ?

मिरज़ा--जब घर चलने का वक्त आयेगा, तो देखी जायगी--यह किश्त ! बस, अब की शह में मात है ;

फ़ौज निकल गयी । दस बजे का समय था । फिर बाज़ी बिछ गयी ।

मिरज़ा बोले--आज खाने की कैसे ठहरेगी ?

मीर--अजी, आज तो रोज़ा है । क्या आपको ज्यादा भूख मालूम होती है ?

मिरज़ा--जी नहीं । शहर में न जाने क्या हो रहा है !

मीर--शहर में कुछ न हो रहा होगा । लोग खाना खा-खाकर आराम से सो रहे होंगे । हुज़ूर नवाब भी ऐशगाह में होंगे ।

दोनों सज्जन फिर जो खेलने बैठे, तो तीन बज गये । अब की मिरज़ाजी की बाज़ी कमज़ोर थी । चार का गजर बज ही रहा था कि फ़ौज की वापसी की आहट मिली । नवाब वाजिदअली पकड़ लिये गये थे, और सेना उन्हें किसी अज्ञात स्थान को लिये जा रही थी । शहर में न कोई हलचल थी, न मार-काट । एक बूंद भी ख़ून नहीं गिरा था । आज तक किसी स्वाधीन देश के राजा की पराजय इतनी शान्ति से, इस तरह ख़ून बहे बिना न हुई होगी । यह वह अहिंसा न थी, जिस पर देवगण प्रसन्न होते हैं । यह वह कायरपन था, जिस पर बड़े-बड़े कायर भी आंसू बहाते हैं । अवध के विशाल देश का नवाब बन्दी बना चला जाता था, और लखनऊ ऐश की नींद में

मस्त था । यह राजनीतिक अध:पतन की चरम सीमा थी ।

मिरज़ा ने कहा--हुज़ूर नवाब साहब को ज़ालिमों ने कैद कर लिया है ।

मीर--होगा, यह लीजिए शह ।

मिरज़ा--जनाब ज़रा ठहरिए । इस वक्त इधर तबीयत नहीं लगती । बेचारे नवाब साहब इस वक्त ख़ून के आंसू रो रहे होंगे ।

मीर--रोया ही चाहें । यह ऐश वहां कहां नसीब होगा । यह किश्त !

मिरज़ा--किसी के दिन बराबर नहीं जाते । कितनी दर्दनाक हालत है ।

मीर--हां; सो तो है ही--यह लो, फिर किश्त ! बस, अब की किश्त में मात है, बच नहीं सकते ।

मिरज़ा--ख़ुदा की कसम, आप बड़े बेदर्द हैं । इतना बड़ा हादसा देखकर भी आपको दु:ख नहीं होता ! हाय, ग़रीब वाजिदअली शाह !

मीर--पहले अपने बादशाह को तो बचाइए, फिर नवाब साहब का मातम कीजिएगा । यह किश्त और यह मात ! लाना हाथ !

बादशाह को लिये हुए सेना सामने से निकल गयी । उनके जाते ही मिरज़ा ने फिर बाज़ी बिछा दी । हार की चोट बुरी होती है । मीर ने कहा--आइए नवाब साहब के मातम में एक मरसिया कह डालें । लेकिन मिरज़ा की राजभक्ति अपनी हार के साथ लुप्त हो चुकी थी । वह हार का बदला चुकाने के लिए अधीर हो रहे थे ।

(४)

शाम हो गयी । खंडहर में चमगादड़ों ने चीख़ना शुरू किया । अबाबीलें आ-आकर अपने-अपने घोंसलों में चिमटीं । पर दोनों खिलाड़ी डटे हुए थे, मानो दो ख़ून के प्यासे सूरमा आपस में

लड़ रहे हों । मिरज़ाजी तीन बाज़ियां लगातार हार चुके थे; इस चौथी बाज़ी का रंग भी अच्छा न था । वह बार-बार जीतने का दृढ़ निश्चय करके संभलकर खेलते थे, लेकिन एक-न-एक चाल ऐसी बेढब आ पड़ती थी, जिससे बाज़ी ख़राब हो जाती थी । उधर मीर साहब मारे उमंग के ग़ज़लें गाते थे, चुटकियां लेते थे[१६], मानों कोई गुप्त धन पा गये हों । मिरज़ाजी सुन-सुनकर झुंझलाते और हार की झेंप मिटाने के लिए उनकी दाद देते थे । पर ज्यों-ज्यों बाज़ी कमज़ोर पड़ती थी, धैर्य हाथ से निकल जाता था । यहां तक कि वह बात-बात पर झुंझलाने लगे--जनाब, आप चाल बदला न कीजिए । यह क्या कि एक चाल चले और फिर उसे बदल दिया । जो कुछ चलना हो, एक बार चल दीजिए; यह आप मुहरे पर हाथ क्यों रखते हैं ? मुहरे को छोड़ दीजिए । जब तक आपको चाल न सूझे, मुहरा छूइये ही नहीं । आप एक-एक चाल आध घण्टे में चलते हैं । इसकी सनद नहीं[२०] । जिसे एक चाल चलने में पांच मिनट से ज्यादा लगे, उसकी मात समझी जाय । फिर आपने चाल बदली ! चुपके से मुहरा वहीं रख दीजिए ।

मीर साहब का फ़रज़ी पिटता था । बोले--मैंने चाल चली ही कब थी ?

मिरज़ा--आप चाल चल चुके हैं । मुहरा वहीं रख दीजिए--उसी घर में !

मीर--उस घर में क्यों रखूं ? मैंने हाथ से मुहरा छोड़ा ही कब था ?

मिरज़ा--मुहरा आप क़यामत तक न छोड़ें, तो क्या चाल ही न होगी ?

मीर--धांधली आप करते हैं । हार-जीत तक़दीर से होती है; धांधली करने से कोई नहीं जीतता ?

मिरज़ा--तो इस बाज़ी में तो आपकी मात हो गयी ।

मीर--मुझे क्यों मात होने लगी ?

मिरज़ा--तो आप मुहरा उसी घर में रख दीजिए, जहां पहले रक्खा था ।

3

मीर--वहां क्यों रखूं ? नहीं रखता ।

मिरज़ा--क्यों न रखिएगा ? आपको रखना होगा ।

तकरार बढ़ने लगी । दोनों अपनी-अपनी टेक पर अड़े थे । न यह दबता था न वह । अप्रासंगिक बातें होने लगीं । मिरज़ा बोले--किसी ने ख़ानदान में शतरंज खेली होती, तब तो इसके क़ायदे जानते । वे तो हमेशा घास छीला किये, आप शतरंज क्या खेलिएगा । रियासत और चीज़ है । जागीर मिल जाने से ही कोई रईस नहीं हो जाता ।

मीर--क्या ! घास आपके अब्बाजान छीलते होंगे । यहां तो पीढ़ियों से शतरंज खेलते चले आ रहे हैं ।

मिरज़ा--अजी, जाइए भी, गाज़ीउद्दीन हैदर के यहां बावरची का काम करते-करते उम्र गुज़र गयी, आज रईस बनने चले हैं । रईस बनना कुछ दिल्लगी नहीं है ।

मीर--क्यों अपने बुजुर्गों के मुंह में कालिख लगाते हो--वे ही बावरची का काम करते होंगे । यहां तो हमेशा बादशाह के दस्तरख्वान पर खाना खाते चले आये हैं ।

मिरज़ा--अरे चल चरकटे, बहुत बढ़-बढ़कर बातें न कर ।

मीर--ज़बान संभालिये, वरना बुरा होगा । मैं ऐसी बातें सुनने का आदी नही हूं । यहां तो किसी ने आंखें दिखायीं कि उसकी आंखें निकालीं । है हौसला ?

मिरज़ा--आप मेरा हौसला देखना चाहते हैं, तो फिर, आइए । आज दो-दो हाथ हो जायं, इधर या उधर[२१] ।

मीर--तो यहां तुमसे दबनेवाला कौन ?

दोनों दोस्तों ने कमर से तलवार निकाल लीं । नवाबी ज़माना था; सभी तलवार, पेशक़ब्ज़, कटार वग़ैरह बाधंते थे । दोनों विलासी थे, पर कायर न थे । उनमें राजनीतिक भावों का

अध:पतन हो गया था--बादशाह के लिए, बादशाहत के लिए क्यों मरें; पर व्यक्तिगत वीरता का अभाव न था । दोनों ने पैतरे बदले, तलवारें चमकीं, छपाछप की आवाज़ें आयीं । दोनों ज़ख्म खाकर गिरे, और दोनों ने वहीं तड़प-तड़प कर जानें दे दीं । अपने बादशाह के लिए जिनकी आंखों से एक बूंद आंसू न निकला, उन्हीं दोनों प्राणियों ने शतरंज के वज़ीर की रक्षा में प्राण दे दिये ।

अंधेरा हो चला था । बाज़ी बिछी हुई थी । दोनों बादशाह अपने-अपने सिंहासनों पर बैठे हुए मानो इन दोनों वीरों की मृत्यु पर रो रहे थे ।

चारों तरफ़ सन्नाटा छाया हुआ था । खंडहर की टूटी हुई मेहराबें, गिरी हुई दीवारें और धूलि-धूसरित मीनारें इन लाशों को देखती और सिर धुनती थीं ।

Notes on शतरंज के खिलाड़ी

1. विरह "separation" (poetic term)

2. न घर का न घाट का (part of a proverb) "(the washerman's dog) is of no use either at home or at the washing-place", i.e., "completely useless".

3. क्या ऐसा दम लबों पर है ? "she's not about to die."

4. रानी ... लेंगी "If the queen gets angry she will only succeed in taking her suhaag" i.e., she will be the loser.

5. मेरा ही ख़ून पिये, जो उसे रोके "The person who stops her would drink my blood."

6. तुम्हें हज़रत हुसेन की कसम है "You are bound by the oath of Imām Husain."

7. मेरी ही मैयत देखे, जो उधर जाय "Going over there would be like seeing my dead body," i.e., he doesn't want her to go (cf. मेरा ही ख़ून पिये)

8. एक न मानी "didn't listen to anything."

9. मुहरे इधर-उधर कर दिये थे "Mīr Sāhab had removed a few pieces from their proper places."

10. इसका क्या ग़म है "That's nothing to grieve over."

11. इतना बड़ा घर पड़ा हुआ है "Such a big house is lying here (unused)."

12. बस यहीं जमे "Let the game be played here."

13. तन जाना "to draw oneself up."

14. यहां तक कि "even, so much so that ... "

15. ख़ुदा ही हाफ़िज़ है "Only God can help (the country now)."

16. तू-तू मैं-मैं "name calling, insulting (using the familiar pronoun तू)

17. जागीरदार हैं कि दिल्लगी "It's no joke that he's a jagirdar (i.e., that he will be conscripted)."

18. मुफ़्त हज़्म (adj.) करना "to enjoy something with no worry as to payment, consequences, etc."

19. X - की चुटकियां लेना "to tease X"

20. इसकी सनद नहीं "That doesn't carry any weight."

21. इधर या उधर "Live or die."

INTRODUCTION TO THE GLOSSARY

Some of the abbreviations (m, f, adj., adv., as contained in the list of abbreviations) used in this glossary should be familiar enough to require no explanation. We have adopted certain additional conventions, however, to the definition of which we ask that you first give your attention, if you are to abtain maximum profit from use of the glossary. These have to do with an attempt on our part to indicate important aspects of the construction of a word -- the way it combines syntactically with other words in a sentence. This often differs from that of its English counterpart, and the student of Hindi needs to have these differences explicitly pointed out if he is to acquire vocabulary in a usable form. So make it a point to learn the constructional information as you learn the word itself.

The symbols (t) and (i) indicate -ne and non-ne verbs respectively. The characterisation of a verb as (t) or (i) is based on its use in the text, and does not mean that different uses elsewhere in Hindi are not found. Even so the criterion of Premchand's usage cannot always be applied if we are to characterise all the verbs in the glossary, since the transitivity or intransitivity of a verb that can be either is not always unequivocally indicated in the text. Where the indication is not definite, the common usage or usages are marked. Hindi syntactic combinations of nominal + verb which have unitary or idiomatic equivalents in English are entered as units, alphabetically according to the nominal. A set of symbols (X,Y,Z, and V) has been devised to show the variables in construction with such Hindi units (or when necessary, with single Hindi verbs), which are equivalent to the variables in construction with the English gloss, when the construction in the two languages differ. It is a device, in other words, for linking items on the English side with items on the Hindi side. (V) indicates verb stem. (X,Y,Z) indicate nouns in several different functions. Their use is as follows:

1. (X) represents the Hindi equivalent of the English direct object, where the construction is different, e.g.

X - की हत्या करना = 'to slay X'

It may also, by extension, be used to represent the equivalent of the "logical" object of an English verbal expression ending in a preposition which is necessarily part of it, e.g.

X - का सफाया कर डालना = 'to do away with X'

It is sometimes difficult or impossible to assign a verb phrase to 1 rather than to 3. The assignment of X and Z is constant throughout a glossary entry and is based on the first English entry, which has sometimes been put first because it permits a more simple assignment of the (X) or (Z), thus 'to exploit, to take advantage of X' rather than 'to take advantage of, to exploit X(?), Z(?)'.

2. (Y) represents the Hindi equivalent of the English subject, where this is not the subject in Hindi (the so-called indirect construction), e.g. Y - को आनन्द आना = 'to feel happy'.

3. (Z) is used to cover several remaining situations. In an English construction involving two variable 'objects', (Z) is used to represent the second of these (the indirect object, 'complement', etc.) and its Hindi equivalent, e.g.

Z - से X - का परिचय कराना = 'to introduce X to Z'

It may also represent a noun involved in the construction of a verb in a relation other than that of subject or object, which rounds out or completes the verb expression in some respect but which may be left out without damaging the (English) verb as such -- together with its Hindi equivalent, e.g.

Z - का बदला चुकाना = 'to take revenge (for Z)'

Z - से पीछा छुड़ाना = 'to escape (from Z)'

Finally, it may represent the variable in certain adverbial expressions, e.g.

Z - की नज़रों में = 'in Z's eyes'

The symbol (m) or (f) following the nominal element in a Hindi nominal + verb combination indicates the verb agrees with that noun -- in the -ne construction, if it is a (t) verb, or everywhere, if it is an (i) verb, e.g.

Y - को भय (m) होना

Enclosure of both noun and verb within brackets, e.g. (याद रखना) indicates the noun does not affect the gender of the verb. The symbol (adj.) in such a combination indicates the preceding element is an adjective, so that both it and the verb agree with some other nominal (if the adjective is of the agreeing kind).

Variant spellings are given in parentheses, with no implication of preference for one or the other.

LIST OF ABBREVIATIONS

adj. = adjective
adv. = adverb
conj. = conjunction
coll. = colloquial
correl.conj. = correlative conjunction
f = feminine
fig. = figuratively
i = intransitive
indf.num. = indefinite numeral
interb.adv. = interrogative adverb
intj. = interjection
lit. = literally
m = masculine
num. = numeral
P.N. = proper noun (name)
pp = postposition
refl.pro. = reflexive pronoun
voc. = vocative
voc.pc. = vocative particle

अ

अंग	(m) limb of the body, part
अंगार	(m) ember, coal
अंगीकार	(m) agreement, acceptance
(:अंगीकार करना)	(t) to accept, to agree to
अंगुल	(m) finger's breadth
अंगूठा	(m) thumb
:अंगूठा (m) दिखाना	(t) to show (one's) thumb (a taunting gesture)
अंतर्ज्ञान	(m) intuition
अंधेरा	(m) darkness
अकड़	(f) pride
अकड़ना	(i) to be arrogant, to walk affectedly or proudly, to writhe
अकसर (अक्सर)	(adv.) often
अकेला	(adj.) alone, by oneself
अक्ल (अक़्ल)	(f) intelligence, wit, reason, intellect

अक्षर	(m) letter (of the alphabet)
अख्तियार (अख़्तियार)	(m) authority, right
अचरज	(m) wonder, surprise, astonishment
अचल	(adj.) still, serene, motionless
अछूत	(adj.) untouchable
अजगर	(m) a large snake, python, boa
अजी	(intj.) used in addressing people, has a sense of politeness and affection
अजीब	(adj.) peculiar, queer
अज्ञात	(adj.) unknown
अठन्नी	(f) an eight anna coin, half a rupee (now equivalent to a 50 naye paise)
अड़ना	(i) to be restive, to be contrary, to be obstinate, to jibe, to support, to insist
अड़ियल	(adj.) stubborn
अण्डा (अंडा)	(m) egg
अतएव	(adv.) therefore
अतिशयोक्ति	(f) exaggeration
अत्यन्त	(adv.) extremely, very
अत्याचार	(m) atrocity

अदब	(m) etiquette , respect, deference
X - का : अदब (m) करना	(t) to show respect, to behave deferentially toward X
अदा	(m) the payment of a debt in अदा करना
(: अदा करना)	(t) to pay
अदालत	(f) court of law
अदिन	(m) bad times
अद्भुत	(adj.) unprecedented, strange
अधमरा	(adj.) half-dead
अधिकतर	(adv.) mostly, for the most part
अधिकांश	(adj.) most of, the greater part of
अधिकार	(m) right, authority, power in अधिकार जमाना
: अधिकार (m) जमाना	(t) to establish control, to occupy
अधीर ✓	(adj.) impatient, restless
अधेड़	(adj.) middle-aged
अध:पतन	(m) downfall, ruin
अध्यक्ष	(m) boss, chief, head
अध्ययनशील	(adj.) studious
अनपेक्षित	(adj.) unexpected
अनर्थ	(m) misfortune, contradiction

अनाज	(m) grain
अनाथ	(m/adj.) orphan; "without an owner or protector"
अनाथालय	(m) orphanage, poorhouse
अनादर	(m) disrespect
अनायास	(adv.) without difficulty or strain, easily
अनिवार्य	(adj.) inevitable, compulsory
के अनुकूल	(pp) favorable to, favoring
अनुचित	(adj.) improper, undue
अनुभव	(m) perception, experience
X - का : अनुभव(m) करना	(t) to feel, to experience X
अनुमान	(m) guess
X - का : अनुमान(m) करना	(t) to guess, to conjecture X
अनुवाद	(m) translation
के अनुसार	(pp) according to
अनेकों	(indef. num.) many
अन्त	(m) end
X - का : अन्त(m) करना	(t) to finish off X, (to kill)
अन्तर	(m) difference
अन्तर्यामी	(adj.) omnipresent

अन्तिम	(adj.) last, final
अन्धकार	(m) darkness
अन्धा	(m/adj.) blind man; blind
अन्धा-चोट	(adj.) wild shot or swing
अन्न-वस्त्र	(m) food and clothing
अन्य	(adj.) other
अन्याय	(m) injustice
अपंग	(adj.) crippled, helpless
अपमान	(m) affront, insult
अपराध	(m) guilt, sin, crime, fault, mistake, offense
अपरिचित	(adj.) unfamiliar, strange
अप्राकृतिक	(adj.) unnatural
अप्रासंगिक	(adj.) irrelevant
अप्रिय	(adj.) not liked, unpleasant, distasteful
अफ़ीम (अफीम)	(f) opium
अब की	(adv.) this time
अब की बार	(adv.) this time
अबाबील	(f) swallow
अबीर	(m) the color red

अब्बाजान	(m) father, dad
अभागा	(m) an unfortunate person
अभाव	(m) shortage, lack
अभिनन्दन	(m) praise, congratulation
अभिनय	(m) play, theatrical performance in अभिनय करना
:अभिनय(m) करना	(t) to act; to play a role or part
अभिप्राय	(m) significance, point
अभिमान	(m) pride
अभी : अभी अभी	(adv.) this very moment
अभूत पूर्व	(adj.) unprecedented
अमंगल	(m) bad luck, calamity
अमर	(adj.) immortal, eternal
अमल	(m) conduct
X - पर अमल(m) करना	(t) to follow, act on (X), (i.e., X's advice or counsel, etc.)
अमीर	(m) a rich man
अम्मां	(f) mother
अरुचि	(f) distaste
अरे	(intj.) indeed (usually not simply translatable)

अर्थ	(m) meaning, gist
अलग	(adv./adj.) separate, one's own, separately, separate, apart
अलग: अलग... अलग... अलग	(adj./adv.) separate, separately, "... is one thing ..., is another,... is another"
अलाव	(m) a fire (for warmth)
अल्हड़	(adj.) naive
अवकाश	(m) leisure
अवज्ञा	(f) contempt, disregard
अवध	(m) Oudh, Awadh
अवश्य	(adv.) to be sure, certainly
अवसर	(m) time, occasion, opportunity, chance
अवस्था	(f) age, situation
अवाई	(f) arrival, coming
अवहेलना	(f) non-observance, violation
अव्वल	(adj.) first
अव्वल (दर्जा)	(adj.) first (class)
अश्रद्धा	(f) unbelief (in God)
असन्तोष	(m) discontent
असफल	(adj.) unsuccessful

असमंजस	(m) doubt, hesitation
असम्भव	(adj.) impossible
असर	(m) influence, consequence
असल	(adj.) real
असली	(adj.) real, pure
असामी	(m) tenant, peasant
असावधान	(adj.) careless, negligent
असुन्दरता	(f) ugliness, homliness
अस्तित्व	(m) existence
अस्त्र (m) चलना	(i) to be pressed into service as a weapon
अस्थिरता	(f) fickleness
अहंकार	(m) haughtiness, superciliousness, pride
अहिंसा	(f) non-violence

आ

आंख (f) निकालना	(t) to look at angrily
आंखफोड़	(adj.) causing blindness
आंखें (f. pl.) फाड़ना	(t) to stare at (in surprise)
आंखें (f. pl.) फोड़ना	(t) to go blind, to ruin one's eyes, (lit. to prick, irritate the eyes)

Z - की आंखें (f.pl) : भर आना	(i) to have the eyes fill (with tears)
आंगन	(m) courtyard, open space within a house
आंधी	(f) strong wind, gale, whirlwind
आंधी रोग	(m) dizziness
आंसू	(m) tear
:आंसू(m.pl)बहाना	(t) to shed tears, to cry
आकर्षण	(m) attraction, fascination
आका (आक़ा)	(m) master, lord
आकार	(m) form, shape, size
आकाशगामी	(adj.) going in the sky
आकाश-वृत्ति	(f) tenuous livelihood, meager subsistence
आक्षेप	(m) scandal, aspersion in आक्षेप करना
:आक्षेप(m) करना	(t) to disparage, to defame
आखिर (आख़िर)	(adv.) after all, finally, at last (here, sometimes not to be translated)
आखिरी (आख़िरी)	(adj.) last, final
आग (f) दहकना	(i) to blaze up
आगे से	(adv.) forward, from now on

आग्रह	(m) insistence, persusion in आग्रह करना
:आग्रह (m) करना	(t) to insist
आजमाई (आजमाई)	(f) test
आचरण (m) करना	(t) to act, behave
आज़ादी (आजादी)	(f) freedom
आटा	(m) flour
आटे दाल का भाव मालूम होना	(i) (sarcastic) to learn the bitter reality of life
आड़	(m) barricade, barrier
X - को आड़े हाथों लेना	(t) to tell X off
आतंक	(m) fear, awe
आतंकित	(adj.) overawed
आत्म -गौरव	(m) self-esteem, self-respect
आत्मा	(f) being, soul
आत्म-समर्पण	(m) complete devotion, dedication of one's self (to another)
आत्माभिमान	(m) self-conceit, self-respect
आत्माभिमानिनी आत्माभिमानी	(f adj.) self-conceited, self-respecting
आत्मीयता	(f) friendship

X - की आदत (f) पड़ना	(i) to become accustomed to, to acquire the habit of X
X - को (आदमी बनाना)	(t) to civilize X
X - का आदर (m) करना	(t) to show respect, to respect
आदर्श	(m) an ideal, norm, the standard of living, model
आदि	etcetera
आदी	(adj.)accustomed to, used to
आध	(adj.) half
आधा	(adj.) half
आधार	(m) base, nourishment, support
आधिपत्य	(m) lordship, sovereignty, control, domination
आधी रात	(f) midnight
आनन्द	(m) pleasure, satisfaction, joy
X - का: आनन्द (m) उड़ाना	(t) to (freely) enjoy X, to relish
X - का : आनन्द (m) उठाना	(t) to relish, enjoy X
Y - को : आनन्द (m) आना	(i) to enjoy, feel happy
आप	he (used as a polite way of referring to a third person)
आपत्ति	(f) objection, trouble, calamity
आपद्धर्म	(m) special morality for times of trouble

आपस में	(adv.) among themselves, to each other
आप ही आप	(adv.) by themselves, automatically
आपे से बाहर होना	(i) to be beside oneself, to be furious
आफ़त (आफत)	(f) disaster, calamity
Z - पर : आफ़त (f) आना	(i) (lit. a calamity comes to Z), (for Z) to be in trouble
आभूषण	(m) jewelry, ornaments
आमदनी	(f) income
आमने-सामने	(adv.) facing one another
आमोद-प्रमोद	(m) merriment, revelry
आरज़ू-विनती	(f) request, entreaty
आराम	(m) rest, comfort
आरामतलब	(adj.) loving ease or comfort; lazy
आरामदेह	(adj.) comfortable
आराम से	(adv.) comfortably, at (our) ease
आलीशान	(adj.) grand, magnificent
आलू	(m) potato
आलोचना	(f) criticism
:आलोचना (f) करना	(t) to criticize
आवाज़ (आवज)	(f) voice, sound

X - पर : आवाज़ें (f.pl.) कसना	(t) to make or pass remarks about X
आवश्यक	(adj.) necessary
आवश्यकता	(f) necessity
आशय	(m) meaning, import
आशा	(f) hope
Y - को : आशा (f) लगना	(i) to be hopeful
आशिक (आशिक़)	(m) admirer, lover
आशिकी (आशिक़ी)	(f) love
आशीर्वाद	(m) blessing, in आशीर्वाद देना
आश्चर्य	(m) wonder, surprise, amazement
:आश्चर्य (m) करना	(t) to be surprised
Y -को : आश्चर्य (m) होना	(i) to be surprised
आसन	(m) posture
Z - का : आसन अच्छी तरह पा जाना	(i) to get to know Z's nature very well
:आसन (m) जमा लेना	(t) to take a seat
आस-पास	(adv.) nearby, side by side
आसमान	(m) sky
आसामी	(m) client
आसार	(m) sign, symptom, omen

आहट	(f) sound, noise, sound hinting at the presence of someone
आहत	(adj.) injured, wounded
आहार-व्यवहार	(m) social manners

इ

इंगलिस्तान	(m) England
इच्छा	(f) desire, wish
इज़्ज़त (इज्जत)	(f) honor, respectability
इतराना	(i) to swagger
इतने में	(adv.) in the meanwhile
इतनी रात	(adv.) so late at night, (lit. this much night)
इतिहास	(m) history
इत्र	(m) perfume
इधर-उधर	(adv.) back and forth, here and there
इनकार (इन्कार)	(m) refusal, denial
इनकारी जवाब	(m) refusal, negative reply
इनाम-इकराम	(m) a tip given to servants
इन्तज़ाम (इन्तजाम)	(m) arrangements
X - का इन्तज़ाम (m) करना	(t) to manage or run X, to make arrangements to do X
इन्तजार (इंतिज़ार , इन्तज़ार)	(m) expectation

इन्सानियत (इंसानियत)	(f) humanity
इफरात (इफ़रात)	(m) abundance
इबारत	(f) writing
इमामबाड़ा	(m) a palace in Lucknow
इम्तहान (इम्तिहान)	(m) examination
इरादा (m) करना	(t) to intend
इलज़ाम (इल्ज़ाम , इलजाम)	(m) blame
Z - पर : इलज़ाम (m) थोपना	(t) to put the blame on Z
इलाज	(m) remedy
इलाका (इलाक़ा)	(m) area, land
इशारा (m) करना	(t) to indicate
इस्तग़ासा (इस्तिग़ासा , इस्तगासा)	(m) a suit, complaint

ई

ईंट	(f) brick
:ईंट का जवाब पत्थर से देना	(t) to answer tit for tat
ईश्वर	(m) God
ईर्ष्या	(f) jealousy, envy

उ

उंगली (अंगुली)	(f) finger
Z - पर : उंगली (f) उठाना	(t) (idiom) to point the finger of blame at Z (lit. to raise a finger)

उखाड़ना	(t) to pull up
उगना	(i) to sprout, grow
उग्र	(adj.) fierce, angry, sharp, strong
उच्छिष्ट	(m) leftover food
उघड़ा (m.adj.) होना	(i) to be uncovered
उछल-कूद	(f) jumping
उछलना	(i) to leap, to jump up
उछालना	(i) to toss
उछाह	(m) enthusiasm, joy
उजड्डपन	(m) rashness, foolhardiness
उजड़ना	(i) to be uprooted, homeless
उजागर	(adj.) shining
:उजागर (adj) करना	(t) to bring fame to
उठाना	(t) to raise, to lift
उड़ना	(i) to fly, to disappear, to take off
उड़ (v) जाना	(i) to be squandered
उड़ेल (v) देना	(t) to pour
उतरना	(i) to get down, descend, to come down
उतराना	(i) to float, bob to the surface

उतारन	(f) castaway clothing; second-hand clothing
उतारना	(i) to bring down, to take down, to take out
उत्तर	(m) answer, reply
उत्तरोत्तर	(adv.) farther and farther, more and more
उत्पन्न (adj) होना	(i) to be born
उत्साह	(m) enthusiasm
उत्सुकता	(f) excitement
(उदय होना)	(i) to dawn, to rise
उदारता	(f) generosity, liberality
उदास	(adj.) sad, unhappy, dejected
उद्दण्डता	(f) arrogance, insolence
उद्योग-धन्धा	(m) industry and business
उधेड़ना , उधेड़(v) देना	(t) to unfold, undo, spread apart
उन्नति	(f) progress
उन्मत्त	(adj.) crazed, frenzied
उन्माद	(m) mania, intense passion
उपदेश	(m) preaching, instruction
X - का उपभोग(m) करना	(t) to enjoy X

उपन्यास-कार	(m) novelist
उपयुक्त	(adj.) appropriate
के उपरान्त	(pp) after, apart from
उपला	(m) cowdung cake used for fuel
:उपले (m.pl.) पाथना	(t) to make or shape cowdung cakes
उपाय	(m) method, way out, plan, scheme
उपासक	(m) devotee
उपेक्षा	(f) disregard, indifference
उबटन	(m) an unguent
उबलना	(i) to boil, boil up
X - पर उबल (v) पड़ना	(i) to boil up, to burst out in anger at X
उमड़ना	(i) to surge
उम्र	(f) age
उलट (v) देना	(t) to overturn, to upset
उलटना	(t) to overturn, to upset
उलटा	(adj.) upside down, contradictory
उलटी (f) करना	(t) to vomit up
उलटे	(adv.) on the contrary, obversely
उल्लास	(m) rejoicing

उल्लू	(m) owl
उस में आधा रखा लूंगा	I will claim half of it
उस्ताद	(adj/m.) clever, expert, teacher

ऊ

ऊख	(m) sugarcane
ऊजड़	(f) ruins
Z- के ऊपर सवारी (f) करना	(t) to mount (astride) Z

ऋ

ऋण	(m) debt

ए

एक	(adj.) about, approximately (where एक follows and is in construction with a number; e.g., दस एक 'about ten')
एकत्र	(adv.) together, in one place
एकाएक	(adv.) all of a sudden, suddenly, all at once
एकाग्र	(adj.) concentratedly, single-mindedly
एकाध	(adj.) a few, a couple, a very few, some
एकाध बार	(adv.) once or twice
एकान्त	(m) solitude, privacy

ऐ

ऐंठना	(i) to twist, contort, squirm

ऐयाश	(adj.) sensual, libertine
ऐश	(m) pleasure, luxury
ऐशगाह	(f) pleasure house, sleeping chamber of the king
ऐश्वर्य	(m) wealth, eminence, lordliness
ऐश्वर्य-प्रिय	(adj.) plutocratic

ओ

ओझा	(m) sorcerer, witchdoctor
ओठ	(m) lip
ओढ़ना	(t) to put on, to wrap around
ओह	(intj.) (of surprise, delight) ah

औ

औचित्य	(m) rightness, fitness
औसत	(adj.) medium, average

क

कंकरी	(f) pebble
कई	(adj.) several, quite a few
कचौड़ी	(f) a kind of filled breadstuff
कच्चा	(adj.) not of good quality, bad, weak, raw
कटना	(i) to pass (of time), to be spent
कटार	(f) straight-edged dagger

कटोरा	(m) small bowl
कठिन	(adj.) difficult, hard
कठोर	(adj.) harsh, bitter, hard, cruel
कठोरता	(f) harsh action, atrocity
कड़ा	(adj.) hard, firm, harsh
कण्ठ (कंठ)	(m) throat
:कण्ठ (m) रुंधना	(i) to become choked up with emotion
कण्ठा	(m) neckless
कथा	(f) story, experiences
कद (क़द)	(m) stature, height
क़दम (कदम)	(m) pace, step
कदाचित्	(adv.) perhaps, maybe
कदापि नहीं	(adv.) not at all
कनकौआ	(m) paper snake (a kind of kite)
कनखी	(f) corner of the eye
कन्ना	(m) frame-string of a kite
कफ़न (कफन)	(m) shroud, "The Shroud" (title)
कबड्डी	(f) a game akin to tag in which the repetition of the nonce-word कबड्डी is involved

कबूल (क़बूल) (adj.) होना	(i) to accept
कमअक्ली	(f) lack of sense
कमजोर (कमज़ोर)	(adj.) weak, feeble
कमजोरी (कमज़ोरी)	(f) weakness
कमर	(f) waist, loins
कमली	(f) light blanket
कमाना	(t) to earn
कमी	(f) lack, shortage, want, deficiency
कमीना	(adj.) vile
कम्बख़्त (कमबख्त , कमख़्त)	(adj.) (a term of abuse) wretched, luckless
कम्बल	(m) blanket
क़यामत (कयामत)	(f) doomsday, the day of judgment
कर	(m) tax, duty
करज़दार (क़र्ज़दार , करजदार , कर्जदार)	(adj.) in debt
कराहना	(i) to moan, to groan
के करीब (क़रीब)	(pp) about, approximately, near
कर्ज (क़र्ज़)	(m) debt, loan
कर्तव्य	(m) duty, responsibility
कर्मचारी	(m) official

कलपना	(i) to wail (usually with रोना)
कला	(f) art
कलाकार	(m) artist
कला-कौशल	(m) the field of art, arts and crafts
कलाबूत	(m) silk and silver thread twisted together
कलांरास (कलां रास)	(adj.) large riding horse
कलेजा	(m) heart (lit. liver)
	"to check, hold, control"
Y - का : कलेजा (m) धक् से होना	(i) to be stunned
कलेजी	(f) liver (of small creatures, e.g., birds)
कल्पना	(f) hypothesis, idea
X - की : कल्पना (f) करना	(t) to imagine, to think of X, to assume
कल्पना-शक्ति	(f) imagination
कल्पित	(adj.) imaginary
कवि	(m) poet
कविगण	(m) poets
कष्ट	(m) hardship, grievance, distress
कसम (क़सम)	(f) oath, vow

:कसम (f) खाना , कसमे (f.pl.) खाना	(t) to take an oath, to swear
V - ने की : कसम (f) होना	(i) to swear, take an oath not to V
कसर	(f) defect, shortcoming
:कसर (f) नहीं उठा रखना	(t) to spare no effort
क़सूर (कसूर , क़सूर , कुसूर)	(m) defect, fault, misdeed
कहना	(t) to say
कहार	(m) a servant who washes (floor, dishes, etc.) and brings water for washing
कहीं	(conj./adv.) lest, somewhere, somehow anywhere
कांड	(m) event
कांप (v) उठना	(i) to give a shudder
कांपना	(i) to tremble
कांजी हौस	(m) cattlepound, a village stockade where stray cattle and other animals are incarcerated until claimed and redeemed by the owner, or, after a certain period, auctioned off
काका	(m) uncle
काछी	(m) gardener
काजल	(m) collyrium, kohl, a black cosmetic used on the eyelids
काटना	(t) to cut; to spend, to pass (time)
कातना	(t) to spin

कान	(m) ear
कानाफ़ूसी	(f) whispering
कानाफ़ूसी (f) करना	(t) to gossip
क़ानून	(m) law
कान्तिहीन	(adj.) lusterless
कापी	(f) notebook
क़ाबू (काबू)	(m) control
X - के (काम आना)	(i) to be of use to X
कामचोर	(adj./m) shiftless, one who avoids work, gold-bricking, gold-bricker
कायदा (कायदा)	(m) rule, regulation
कायर	(m) coward
कायरता	(f) cowardice
कायरपन	(m) cowardice
कार	(f) car, automobile
कारण	(m) reason, cause
कारीगर	(m) craftsman, mechanic
कारोबार	(m) business
कार्य	(m) business, work
कालिख	(f) stain, soot

कालू	(m) P.N., here, a dog's name
किफ़ायत (किफायत)	(f) frugality, economy, careful management
किराया	(m) fare, rate
किला (क़िला)	(m) fort, castle (defence in chess)
किवाड़	(m) door
किसान	(m) farmer, peasant
किस्सा (m) - कहानी (f)	(m/f) tale, story
कीचड़	(m) mud
कीड़ा	(m) worm
कील	(m) nail
:कील की नोक (f) चुभाना	(t) lit. to pierce with the sharp point of a nail; उसने कील की पतली नोक चुभा ली थी "he had found her weakness"
कुंजी	(f) printed notes to go with certain texts
कुंडी	(f) door hasp, lock
:कुंडी (f) लगा (v) देना	(t) to bolt, to lock
कुंवर	(m) (lit. a prince) a person of high status, lord
कुआं	(m) well (of water)
कुएं में गिरना	(i) to go off the deep end
कुकर्म	(m) bad deed

कुचलना	(t) to trample, to stamp on
कुछ	(adj.) some
कुज्जी	(f) unglazed cup
कुटिल	(adj.) crooked, mischievous, devious, cracked
कुटिल विनोद	(adv.) with biting humor
कुढ़ना	(i) to be irritated
कुढ़ाना	(t) to irritate, to trouble
कुतिया	(f) bitch, female dog
कुतूहल	(m) concern, anxiety
कुत्ता	(m) dog
कुत्सित	(adj.) bad, disreputable
कुनबा	(m) family
कुबेरोचित	(adj.) appropriate to Kubera, Kubera-like, worthy of Kubera (Kubera was the treasurer of the gods and the king of the Yakshas and is known for his generosity)
कुरता	(m) shirt
कुल-मरजाद	(m) family's good name
कुलेल	(f) leap
:कुलेल(f) करना	(t) to jump with joy or pride, to play, to frolic
कुल्हड़	(m) an earthen vessel

कुशल	(m) well-being
कुशलता	(f) skill
कुश्ती	(f) wrestling
कुसमय	(m) time of trouble
कूं कूं (f) करना	(t) to whimper
कूचा	(m) lane, neighborhood, vicinity
कूदना	(i) to jump
कूल्हा	(m) hip, hipbone
कृतज्ञता	(f) gratitude
केश	(m) hair, tress
कै	(interg. adv.) how many
क़ैद (कैद)	(f) bondage
क़ैद करना	(t) to imprison, to capture
कोई	(adv.) about, approximately
कोठरी	(f) a small room, cabin, a small storage room with a mud floor
कोठार	(m) P.N., a village
कोड़ियों	(indef. num.) scores of
कोलाहल	(m) noise, hubbub
कोसना	(t) to curse

कौर	(m) bite, morsel
कौशल	(m) adroitness
कौशल (m) करना	(t) to trick
कौवा	(m) crow
क्रिया-कर्म	(m) death ceremonies
क्रोध	(m) anger
Y - को :क्रोध (m) आ जाना	(i) to lose one's temper
Y - को :क्रोध (m) आना	(i) to get angry, to get mad
क्वार	(m) P.N., name of a month
क्षण	(m) a moment, an instant
क्षण-भर	(adv.) for a second
क्षमा	(f) forgiveness, pardon
(:क्षमा करना)	(t) to pardon, to forgive
Z - के लिये क्षम्य (adj.) होना	(i) (for Y, e.g., sins) to be forgiven, excused Z
क्षीण (adj.) होना	(i) to become dim, fade
क्षेत्र	(m) field

ख

खंडहर	(m) ruins, wreckage

खटखटाना	(t) to knock on
खट्टा	(adj.) sour
खट्टे मन (m) से	(adv.) bitterly
खड़ा (adj.) होना	(i) to stand
खड़े-खड़े	(adv.) at once, right away
खद्दर	(m) hand-woven (cotton) cloth which Gandhi popularized
ख़पाना	(t) to spend, to use
Y - को ख़बर (खबर) (f) न रहना	(i) to be unaware, or unconscious of what is going on around one, to be dazed
X - की ख़बर (खबर) (f) लेना	(t) to teach X a lesson, give X a good scare
X - की ख़बर (खबर) (f) होना	(i) to have news of, to be aware of X
ख़राब (खराब)	(adj.) spoiled, bad, ruined
खरीददार (ख़रीददार)	(m) buyer, purchaser
X - खर्च (m) करना	(t) to spend (money)
खलबली	(f) hullabaloo, commotion
खली	(f) oilseed cake
खाई	(f) ditch
ख़ाक (खाक)	(f) dust
X - की ख़ातिर (खातिर) (f) करना	(t) to treat X well

खातिरदारी (ख़ातिरदारी)	(f) welcoming
ख़ानदान (खानदान)	(m) family, household
खानसामा (ख़ानसामा)	(m) waiter, steward
ख़ामख़्वाह (खामखाह, ख़्वामख़्वाह)	(adv.) needlessly
खाल	(f) hide
खाली (ख़ाली)	(adj/adv.) empty, free, only
खासा (ख़ासा)	(adj.) good, fine, sound
खासियत (ख़ासियत, ख़ासीयत)	(f) characteristic, peculiarity
खिचड़ी	(f) dish made from rice and pulses cooked together
खिड़की	(f) window
खिलाड़ी	(m) player, sportsman
खिलाना	(t) to play with, to have (someone) play
खिसकना	(i) to slip out, to move away
खींचना	(t) to pull, attract, drag; to attract attention
खुजली	(f) itch, scabies, mange
खुद (ख़ुद)	(adv./refl. pro.) one's self, self
खुदना	(i) to be dug (up)
ख़ुदा (खुदा)	(m) God

ख़ुदा की क़सम	(intj.) by God
खुर	(m) hoof
ख़ुराफात (खुराफ़ात)	(f) nonsense
खुलकर	(adv.) freely
खुशनसीब (ख़ुशनसीब)	(adj.) fortunate
खुशामद (ख़ुशामद)	(f) flattery
X - की :खुशामद (f) करना	(t) to flatter X
खुशी (ख़ुशी)	(f) happiness, joy
खूंटी	(f) peg, stump of grain or stubble of whiskers, (anything in the form of a peg or stub)
ख़ून (खून)	(m) blood
X - का :खून (m) करना	(t) to decimate X
:खून (m) जलाना	(t) to use up all one's strength
ख़ूब (खूब)	(adj.) good, excellent
खूबसूरत (खूबसूरत)	(adj.) beautiful, elegant
खेड़	(m) a flock or herd (of animals)
खेल	(m) field
खेलना	(i/t) to play
(सवार सवार :खेलना)	(t) to play horse and rider
खेल-कूद	(m) games and amusements, play

ख़ैर (खैर)	(intj.) all right, very well
:ख़ैर (f) करना	(t) to help, aid
ख़ैरियत (खैरियत)	(f/adv.) safety, well-being, good luck, a good thing; luckily
खोजना	(t) to seek
खोदना	(t) to dig up, to dig in घास खोदना
खोना	(t) to lose, to get rid of
ख़ौफ़ (खौफ)	(m) terror, dread
ख्याल (ख़्याल, ख्याल)	(m) idea, thought
X - का :ख्याल (m) रखना	(t) to bear X in mind
Y- को X-का :ख्याल (m) होना	(i) to think about X, to have X in mind

ग

गंगा	(f) the Ganges
गंगी	(f) P.N.
गंजीफ़ा	(m) an Indian card game
गंवाना	(t) waste
गंवार	(m) bumpkin, rustic
ग़ज़ब (गजब)	(m) outrage, affliction, anger
:ग़ज़ब (m) करना	(t) to commit an outrage
गजर	(m) gang
ग़ज़ल (गजल)	(f) an Urdu lyric

गजी (गज़ी)	(f) a coarse handwoven cotton cloth
गट्ठर	(m) big bundle
गठरी	(f) bundle
गड़ाना	(t) to thrust
गण्य	(adj.) calculable, respected
गति	(f) pace
गद्दी	(f) seat, throne, royal cushion
गद्गद्	(adj.) very happy (having a lump in the throat)
:गद्गद् (adj.) होना	(i) to be choked up (with happiness)
गधा	(m) an ass, donkey
गधापन	(m) foolishness, asininity
गफलत (ग़फ़लत)	(f) carelessness, mistake
ग़म (गम)	(m) anxiety, sorrow, worry, care
:गम (m) खाना	(t) to swallow insults
गम्भीर	(adj.) sober, serious
गरज (ग़रज़)	(f) need
गरज	(f) roar
:गरज (f) पड़ना	(i) to be hard up, needy
गरमी	(f) hot weather

गरांव	(m) a rope that goes around the neck of an animal
गरीब (ग़रीब)	(m/adj.) P.N., poor man, poor
गरीब जानवर	(adj.) lowly animal
गरीब सिंह	(m) P.N.
ग़रूर (गरूर)	(m) vanity
गर्दन	(f) neck
X - की :गर्दन (f) दबाना	(t) to hold X responsible, to restrain, confine, punish X
गर्भ	(m) pregnancy, womb, fetus
Y - को :गर्भ (m) होना	(i) to be pregnant
गर्म	(adj.) warm, angry, heated
गर्मा - गर्मी	(f) heat (of arguement)
गर्व	(m) conceit, pride, vanity
गला	(m) neck
ग़लत (गलत)	(adj.) wrong, mistaken
:ग़लत (adj.) समझना	(t) to misjudge, to be mistaken about
ग़लती (गलती)	(f) mistake
गलना	(i) to dissolve, to be frozen
ग़लीज़ (गलीज)	(m) filth, refuse
X - के :गले लिपटना	(i) to embrace , hug X

गहना	(m) jewelry, ornament
गहरा	(adj.) deep
गांजा	(m) narcotic drug made from hemp leaves and buds, hemp
गांजा (m) पीना	(t) to smoke गांजा
गाढ़ा	(m) a rough handwoven cloth (lit. means thick)
गाढ़ी कमाई का	(adj.) phrase) hard-earned (money)
गान	(m) singing
गाय	(f) cow
ग़ायब (गायब) (adj.)होना	(i) to disappear
गाल	(m) mouthful
गाली	(f) abuse, invective, abusive word, abusive language, insult
:गाली (f) खाना	(t) to take abuse
:गाली (f) देना	(t) to abuse, to be abused
Y -को :गाली (f) मिलना	(i) to be verbally abused
गावदी	(m) fool, stupid person, dullard
गिरह	(f) knot made in the corner of a garment for keeping money etc.

गिरस्ती (गृहस्थी)	(f) family, household
गिरा (v) देना	(t) to drop(deliberately), to allow to fall
गिलास	(m) glass
गिलौरी	(f) a prepared folded betel leaf
गुज़र (गुजर) (v) जाना, गुज़रना	(i) to pass on
Y - का गुज़र (m/f) होना	(i) to live, to obtain one's livelihood, to be tolerated
गुड़	(m) coarse brown raw sugar, molasses, jaggery
गुण	(m) quantity, virtue
गुप्त	(adj.) secret, hidden
गुम	(adj.) lost
गुरुघण्टाल	(m) a master fool, a first-rate idiot
गुल (m) खिलाना	(t) to cause trouble
गुलाबी	(adj.) pink
गुलाम (गुलाम)	(m) servant
X - की गुलामी (f) करना	(t) to wait upon, serve X
गुलाल	(m) the color pink
गुल्ली-डंडा	(m) a game in which a tapered stick is flipped into the air and batted as far as possible by another club
गुस्ताख़ी (गुस्ताखी)	(m) impertinence, rudeness

गुस्सा	(m) anger
Z - पर गुस्सा (m) उतारना	(t) to release one's anger on a third party (Z)
गुस्सेवर	(adj.) quick-tempered
गूंजना	(i) to hum, to buzz, to echo
गूदड़	(m) P.N.
गृहस्थी (गिरस्ती)	(f) household, family
गेंडुली	(f) coil
गेंडुली (f) मारना	(t) to coil oneself (up)
गेहुंवन	(m) kind of poisonous snake
गैरत (ग़ैरत)	(f) a sense of shame
गोईं	(f) a pair of bullocks
ग़ोता (गोता)	(m) dive, dip
:गोता (m.pl.) खाना	(t) to be lost, to be engrossed
गोद	(f) lap
गोदना	(t) to prick, goad, taunt
गोपीनाथ	(m) P.N.
गोबर	(m) cow-dung
:गोबर (m) पाथना	(t) to make cow-dung into cakes for fuel
गोमती	(f) name of a river

गोरा	(m/adj.) fair in color, white man, of fair complexion
गोरू	(m) cattle
गोल	(adj.) round
गोली	(f) bullet
Y - को :गोली (f) लगना	(i) to be stunned
गौरव	(m) dignity, honor, distinction
ग्रंथ	(m) book, tome
ग्रहण	(m) acceptance
(:ग्रहण करना)	(t) to accept
ग्रामीण	(m) villager, rustic
ग्रास	(m) mouthful, morsel
ग्राहक	(m) customer
ग्लानि	(f) grief, shame

घ

घटना	(f) event, happening
घड़ी	(f) hour, a unit of time equal to twenty four minutes
घड़ी रात	(adv.) a little before dawn
घण्टा	(m) hour

घनिष्ठता	(f) intimacy (thickness)
घबड़ाना	(i) to be worried, upset, confused, frightened
घबराहट	(f) uneasiness, agitation
घमंड	(m) pride, conceit
घर	(m) house, square
घर वाले	(m. pl.) family, people of one's house
घसीटना	(i) to drag
घाट	(m) ghat, the steps on river banks, a washerman's washing place
घायल (adj.) होना	(i) to be pierced, to be stabbed
घाव	(m) wound
घास	(f) grass
:घास (f) खोदना	(t) to twiddle one's thumbs
घिरना	(i) to be surrounded, to be besieged
घिसुआ	(P.N.) a contemptuous or familiar diminuitive of घीसू
घुटना	(m) knee
घुड़की	(f) strong reprimand, bawling out
Y - पर :घुड़की (f) पड़ना	(i) to be bawled out
घुमाना	(t) to cause to move
घुसना	(i) to enter into

घुसेड़ना	(t) to pierce
घूंसा	(m) fist
घूमना	(i) to warder, roam (around), to go out, to wander about
घूरा	(m) rubbish heap
घृणा	(f) hatred, aversion, dislike
:घृणा (f) करना	(t) to hate, to despise
घृणित	(adj.) contemptible, hateful
घेरना	(t) to surround, to occupy
घोंघा	(m) snail, sluggard
घोड़ा	(m) horse
घोर	(adj.) terrible, horrible, dreadful
घोलना	(t) to dissolve, to mix
घोसला	(m) a nest

च

चंगुल	(m) grasp, claw(s)
चंचल	(adj.) uneasy, lively
चकमा	(m) deception, trick
X - को :चकमा (m) देना	(t) to play a trick on X, to deceive X

चकित	(adj.) astonished, surprised
Y - को चक्कर (m) आ (v) जाना	(i) to get dizzy
चक्कर (m) खाना	(t) to whirl
चक्रवर्ती	(adj.) universal sovereign
चखना	(i) to taste
चखाना	(t) to make or have someone taste
चखौती (f) करना	(i) to enjoy oneself
चघड़	(adj.) clever
चट (से)	(adv.) quickly
(चट करना)	(t) to consume, to use up in no time
चटनी	(f) relish, chutney
चटपट	(adv.) immediately, right away, without delay
X - पर चढ़ना	(i) to climb, to climb on X
चना	(m) gram, chick-peas
चपड़ासी (चपरासी)	(m) menial servant, peon, office boy
चपल	(adj.) lively
चपेट	(f) blow, sudden misfortune
:चपेट में आना	(i) to fall victim to (e.g., a disease)
चबाना	(t) to chew

चमक	(f) sparkle, glitter
चमकना	(i) to shine, to flash
चमगादड़	(m) bat
चमड़ी	(f) skin
चमरौंधा	(adj.) a type of rough shoe, a rough leather
चमार	(m) a member of the (low) Chamar caste whose traditional occupation is working in leather
चमारिन	(f) a woman of the formerly untouchable leather-working and manual laborer Chamar caste
चम्पा	(f) P.N.
चरकटा	(m) lit. grass-cutter, a low person
चरचा (चर्चा)	(f) rumor, talk
चरना	(i) to graze
चरनी	(f) crib (manger for feeding animals)
चरम	(adj.) final, climactic, last
चर(v) लेना	(t) to destroy, to crop
चरस	(f) narcotic drug prepared from hemp flowers
चरित्र	(m) character
चर्चा	(f) talk, report
:चर्चा (f) करना	(t) to talk about, to discuss

चल (v) खड़ा (adj.) होना	(i) to get up and leave
चलने फिरने लायक होना	(i) to be able to walk around
चला (adj.) आना	(i) to come (toward the speakers)
चांगली	(f) P.N., a princely state
चांदी	(f) silver
चाकरी	(f) service
चाट	(f) addiction, habit, desire; spicy snacks
चाट (v) जाना	(i) to lap up
चाटना	(t) to lick
Z -की चाट (f) पड़ना	(i) to acquire the habit of Z
चारदीवारी	(f) courtyard
चारपाई	(f) charpoy, cot, bed, bedstead
चारा	(m) alternative
चारा	(m) hay, fodder, food for cattle
चाल	(f) gait, pace, move (in chess and other games), trick, move
चाहे	(conj.) even if, whether, either, whichever, as you like
चिकन	(m/f) fine embroidered muslin
चिकना	(adj.) sleek, oily, slippery
चिकनाहट	(f) fattiness

चिखौना	(m) snack
चिड़िया	(f) small bird
चिढ़ना	(i) to be irritated, to get irritated
चिढ़ाना	(t) to tease, to do something to irritate someone
चिता	(f) funeral pyre
चित्त	(m) mind
चित्र	(m) picture
चिन्ता	(f) worry, care, concern, anxiety
:चिन्ता (f) करना	(t) to worry about
X - की :चिन्ता में पड़ना	(i) to be worried about X
चिन्तित	(adj.) worried
चिप्पड़	(m) a small flat piece, chip
Z - में चिमटना	(i) cling to Z
चिराग (चिराग़)	(m) lamp
चिराग-अली	(m) P.N. (the lamp has been personified here)
चिलम	(f) bowl-shaped earthenware container which forms the top part of a hubble-bubble; it is detachable and can be smoked by itself
चिल्ला (v) उठना	(i) to raise a cry, to cry out, scream, to shout, to yell
चिल्लू (चुल्लू)	(m) a (cupped) handful (of water)

चीख (चीख़)	(f) a shriek, a wail
चीख़ना (चीखना)	(i) to screech, squeak, give a cry, holler
चीखें (f.pl.) मारना	(t) to wail, to cry aloud
चीथड़ा	(m) rag, remnant of cloth
चील	(f) a small hawk, kite
चुटकी	(f) snap of the fingers
चुड़ैल	(f) witch, hag
चुन्दरी	(f) a print sari
चुपके से	(adv.) silently
चुपचाप	(adv.) silently
चुभाना	(t) to pierce
चुम्बन	(m) kissing
चुराकर	(adv.) stealthily
चुल्लू (चिल्लू)	(m) a (cupped) handful (of water)
चुसकी	(f) sip
चुसकी (f) लेना	(t) to sip
चुस्त	(adj.) lively, active
चुहल	(f) joke
चुहल (f) करना	(t) to joke, to kid

चूकना	(i) to miss out
V - ने से :चूकना	(i) to miss, neglect the opportunity of V-ing
चूड़ा	(m) bracelet
चूड़ी	(f) bangle (of glass)
चूनी	(f) ground up pulses
चूमना	(t) to kiss
चूर (adj.) होना	(i) to be shattered, to be engulfed
चूल्हे (m) + चक्की (f)	(f) lit. hearth + mill, household
चूसना	(t) to suck
चेत (v) उठना	(i) to wake up, recover consciousness
चेतना	(f) consciousness
चेतावनी	(f) warning, admonition
चेला	(m) disciple
चेहरा	(m) face
Y -का :चेहरा (m) उतरना	(i) to look dejected
:चेहरा (m) :पीला (adj.) पड़ना	(i) to become pale, weak
चेष्टा	(f) attempt
X -की :चेष्टा (f) करना	(t) to try to
चैन (m) करना	(t) to enjoy

चोकर	(m) bran
चोचला (चोंचला)	(m) playfulness, frivolity
चोट	(f) wound, blow
:चोट(f) करना	(t) to strike, hit, attack
X - पर चोटें(m.pl.) करना	(t) to hit X repeatedly
चोटी	(f) peak
चौंकना	(i) to be startled, to start
चौकस	(adj.) diligent
चौका	(m) kitchen
चौकीदार	(m) watchman
चौखट	(m) a projecting part of a house, opened on to by a doorway; a small balcony
चौगुना	(adj.) four times, fourfold
चौथा	(adj.) fourth
चौधरी	(m) headman of a village
चौसर	(m) a game played with oblong dice

छ

छड़ी	(f) stick, cane, the stem of a flower
छनना	(i) to be filtered, sifted

गहरी छनना	(i) to be close friends, as in मंगल और टामी में गहरी छनती थी "Mangal and Tommy were close friends"
छत	(f) roof
छपना	(i) to be published, printed
छबीला	(adj.) attractive, voluptuous, sexy
छांटना	(t) to wash (out), to select
छाता	(m) umbrella
छाती	(f) chest, breast
छात्र	(m) student, pupil
छात्रा	(f) female student
छान (v) मारना	(t) to search carefully
छाना	(t) to spread, to cover, to be all around
छाया	(f) shadow
:छाया (adj.) रहना	(i) to be spread
छाला	(m) blister
:छाले (m.pl.) पड़ना	(i) to blister
छिड़कना	(t) sprinkle
छिड़ना	(i) to begin
छिपना	(i) to be hidden

छिपाना	(t) hide, conceal
छिपा (adj.) रहना	(i) to remain hidden
छिलना	(i) to be peeled
छीलना	(t) to scrape, peel, skin
छीनना	(t) to snatch (away)
छी:	(intj.) an expression of disgust
छुरी	(f) knife
छूत	(f) (lit. touch) contamination, defilement
छूत - अछूत	(adj/m.pl.) touchable and untouchable
:छूत (v) लगना	(i) to be contaminated
छूत - विचार	(m) discrimination
छू (v) देना	(t) to touch (deliberately)
छूटना	(i) to leave, escape, to get free, to be left behind
Y - से X- छूटना	(i) to be deprived of X
छूना	(t) to touch
छेड़छाड़ (f) करना	(t) to tease, to provoke
छोटी लाइन	(f) a narrow-gauge railroad
छोड़कर	(adv.) except (for)
छोड़ना	(t) to leave

ज

X - को जंचना	(i) to appeal to X
जंजाल	(m) involvement, entaglement (of this life), problem, trouble, misfortune
ज़ख़्म (जख्म)	(m) wound
जख्मी (ज़ख़्मी)	(adj.) wounded
:जख्म (m) खाना	(t) to be wounded
जगह	(f) place, position
जगाना	(t) to wake up
जच्चाखाना	(m) confinement room (for child-bearing)
जताना	(t) to prove, to show
जत्था	(m) group, bunch
जन	(m) person (note the irregular plural in हम दोनों जने both of us)
जनम (जन्म)	(m) birth, existence
जन्मदाता	(m.pl.) parents, progenitors
जन्म सिद्ध	(adj.) inborn
ज़बरदस्ती (जबरदस्ती)	(adv.) forcibly, by force
ज़बान (जबान)	(f) tongue, language
:ज़बान संभालिये	hold your tongue

जब्त (adj.) करना	(t) to put up with, to tolerate
जमना	(i) to be settled
X - की ओर :जमना	(i) to be occupied with, to be engross in, to be fixed on X
जमा	(adj.) collected, gathered
जमा (adj.) होना	(i) to collect (dirt), to accumulate, to gather, assemble
जमात (जमाअत)	(f) class, grade in school
जमाना (ज़माना)	(m) period, time, age
जमाना	(t) to consolidate, to plant, to freez
जमाव	(m) crowd, accumulation
:जमाव (m) होना	(i) to get together
जमींदार (ज़मींदार)	(m) landowner
जल	(m) water
जल (v) उठना	(i) to get very angry, flare up
जल (m) चढ़ाना	(t) to offer (Ganges) water (to the gods), to make libations of water
जलन	(f) jealousy (lit. burning)
जलना	(i) to be lighted, to burn, to be burn
जलाना	(t) to excite, to provoke to jealousy, to burn
जलवाना	(t) to have lit, to cause to burn

ज़लील (जलील)	(adj.) mean, base, low, cheap, shamed
:ज़लील (adj.) करना	(t) to disgrace, humiliate, insult
जल्द	(adv.) soon
जल्दीबाजी	(f) haste
जल्दी से	(adv.) quickly
जवान	(adj.) young, youthful
जवान	(m) soldier, young man, youth
जवानी	(f) youth
जवाब	(m) answer
जवाबदेही	(f) responsibility, being held answerable or responsible
जहन्नुम	(m) hell
ज़हर (जहर)	(m) venom, poison
ज़हीन (जहीन)	(adj.) intelligent
जहां	(adv.) wherever, anytime, whenever
जां - तोड़ (मेहनत)	(f) very hard (work); (lit. life-breaking) back-breaking (work)
जागना	(i) to wake up
जागीर	(f) rent-free property, estate
जाड़ा	(m) winter, cold weather
जाति (जात)	(f) tribe, cast, species; जात used

	only in certain idioms, e.g., औरत जात "womankind"
जादू	(m) magic
जान	(f) life, force
:जान गढ़े में पड़ (v) जाना	(i)
Y -की जान (f) निकल (v) जाना	(i) to be scared out of one's wits
-जान	suffix of endearment
जानना	(i) to know, to come to know
(जान पड़ना)	(i) to seem, look, appear
जान - लेवा	(adj.) life-consuming
जायदाद	(f) property, land
ज़ालिम (जालिम)	(m) oppressor, tyrant
ज़ाहिर (जाहिर)	(adj.) clear, evident; in साफ ज़ाहिर abundantly clear
जिगर	(m) liver, heart
ज़िद (जिद)	(f) stubbornness
:ज़िद (f) पकड़ना	(t) to remain adamant, to stubbornly persist
जिन्दगी (ज़िंदगी, ज़िन्दगी)	(f) life
ज़िन्दा (जिन्दा)	(adj.) alive, living
जी	(m) heart, spirit

:जी (v-) ने में लगना	(i) to like doing V, to take to V
Y - का :जी (m) चाहना (कि)	(i) to feel like, to want
X - से Y - का :जी(m) भरना	(i) to be fed up with X, to be tired of X
:जी तोड़कर	(adv.) strenuously, hard
:जी (m) लगना	(i) to be interested in, to very much want (to do something)
जी लगाकर	(adv.) sincerely
जीतना	(t) to win, to prevail
जीना	(i) to live, to subsist
जीव	(m) living being, life, soul
जीवन	(m) existence, life
जीविका	(f) livelihood
जुआ	(m) yoke
जुड़ना	(i) to be added or joined
ज़ुल्म (जुल्म)	(m) tyranny, oppression, cruelty
जूठन	(m) left over food
जेब	(m) pocket
ज़ेहन (जेहन)	(m) genius, intelligence
जैसे	(adv.) as if
जोंक	(f) leech

जोखिम (ज़ोख़िम)	(m) peril
जोत	(f) harness strap
जोतना	(t) to plow, yoke, to forcibly make someone work
जोड़ा, जोड़ी	(m/f) couple, pair
जोर (ज़ोर)	(m) strength
:जोर - आज़माइश (ज़ोर-आजमाइश)	(f) exertion
:ज़ोर (m) मारना	(t) to give a mighty push, to use all one's strength
:ज़ोर (m) लगाना	(t) to strain
ज्ञान	(m) knowledge
ज्यादा - से - ज्यादा	(adv.) at most, mostly
ज्वाला	(f) flame, heat, fire
ज्यों की त्यों	(adv.) just as before
ज्यों ज्यों	(conj.) as
ज्योंही	(conj.) as soon as
ज्योति	(f) light, brilliance

झ

झगड़ा	(m) quarrel
झटका	(m) jerk

झनक	(f) tinkle
झपकना	(i) to blink, doze; in to doze नींद झपकना
झपटना	(i) to pounce upon
झमकाना	(t) to make bright, to lure
झलक	(f) glimpse
झलकना	(i) to shine
झल्लाना	(i) to be irritated, to boil over with anger, to be enraged
झांकना	(t) to peer, peep
झुंझलाना	(adj.) having thick branches
झुकना	(i) to be irritated, to be impatient, to be annoyed
झुकाना	(t) to bow, bend
झुलसना	(i) to be scorched, to be extremely hot
झूमना	(i) to swing to and fro
झेंप	(f) chagrin, embarrassment
झेलना	(t) to bear, to endure
झोंका	(m) breeze, current of air
झोंड़	(f) argument, fight
झोंड़(f) हो जाना	(i) to quarrel
झोंपड़ा (झोंपड़ा)	(m) hut, hovel

ट

टकटकी	(f) gaze, stare
:टकटकी (f) लगाना	(t) to stare
टटोलना	(t) to feel with the hand, to handle
टहलना	(i) to walk about, to wander, stroll, to walk guard
टाट	(m) a ragged piece of gunny cloth
टामी	(m) P.N., dog's name, it is quite common for dogs to be given European names in the east
टालना	(t) to postpone, to escape, to avoid
(टिकटिक करना)	(t) to make a noise imitative of a horse running
टिकना	(i) to be based on, to rest on
टिटकार	(f) clicking or clucking noise made to urge an animal onward
टिप्पणी	(f) criticism, comment
टुकड़ा	(m) piece
टूटना	(i) to break, to fall
टेक	(f) point of view, resolve
टेढ़ा	(adj.) complicated (crooked)
टोकरी	(f) basket

ट्रंक	(m) trunk

ठ

ठगिनी	(f) deceiver
ठठरी	(f) a skeleton; in उनकी ठठरियां निकल आईं थीं their ribs had begun to show
ठठाकर हंसना	(i) to laugh aloud, guffaw
ठसाठस	(adv.) crowded, crammed, packed
ठहरना	(i) to wait, to stay
ठाकुर	(m) a general term for a person of the second varna, an honorific term for a man of the Ksatriya caste
ठाठ	(m) splendor, pomp
X - को :ठाठ में रखना	(t) to keep X in high style
ठिकाना	(m) refuge, residence, (destination) as in पता-ठिकाना wherabouts
ठूंसना	(t) to stuff, pad
ठेलना	(t) to shove
ठोंकना	(t) to hammer, push
ठोकर	(f) kick, blow
:ठोकर (f) मारना	(t) (lit. to kick) to leave, to abandon (with contempt)

ड

डंडा (m) मारना	(t) to beat with a stick
डंडे (m.pl.)जमाना	(t) to strike with a big stick repeatedly
डकार (m) लेना	(t) to belch
डट (v) जाना	(i) to take a stand in a fight
डटना	(i) to stand firmly
X -पर :डटना	(i) to be fixed on, to be wholly occupied with X
डब्बा	(m) compartment
डर	(m) fear, fright
डरना	(i) to be frightened
Y -को :डर (m) लगना Y -को :डर (m) होना	(i) to be afraid
डरावना	(adj.) frightening
डांटना	(t) to scold, to rebuke, to reprimand
डांट (f) बताना	(t) to scold
डाक	(f) mail (mail-train)
डाका	(m) robbery, dacoity
डिग्री	(f) degree
डिब्बा	(m) box

डींग	(f) boasting, bragging
:डींग (f) मारना	(t) to boast, to brag
डील	(m) stature, build, phyisque
डुग्गी	(f) a small drum
डूबना	(i) to be degraded, lowered; to plunge, sink, drown
डेरा	(m) abode, dewlling place
डोर	(f) string
Z - पर :डोरे (m.pl.) डालना	(t) to make advances to Z, to seduce Z
डोंकना	(i) to bellow

ढ

ढंग	(m) way, fashion, style, knack, manner
ढकेलना	(t) to push, shove, cast down
ढांकना	(t) to cover
ढाई	(num.) 2½ (two and one-half)
X - का ढ़िंढ़ोरा (m) पीटना	(t) to talk up X, to speak loudly to promote X, (lit. to beat X's drum)
ढिलाई	(f) laxity
ढूंढ़ना	(t) to search for, to investigate

ढोंग	(m) humbug, hypocrisy

त

तंबीह (तम्बीह)	(f) guidance
तक	(pp) even
तकरार	(f) quarrel, arguement
तक़दीर (तकदीर)	(f) fate, luck
तकलीफ (तकलीफ़) (f) करना	(t) to trouble, distress, inconvenience
तख़्त (तख्त)	(m) seat, a square wooden cot for sitting (mainly)
तज़बीज (तजबीज) (f) करना	(t) to decide, plan
तजरबा	(m) experience
तड़पना	(i) to toss and turn (in pain or grief), to writhe
तत्परता	(f) attentiveness, alertness, promptness
तदबीर	(f) means, remedy, expedient
तन	(m) the body
तपस्या	(f) mortification, asceticism
तबदीली	(f) change
तबाह	(adj.) ruined, destroyed
तबाह (adj.) करना	(t) to destroy

:तबाह (adj.) होना	(i) to be destroyed, ruined
तबीयत	(f) temperament
:तबीयत (f) लगना	(i) to be interested in
तभी	(adv.) that is why
तमाकू (तम्बाकू)	(f/m) tobacco
तमाचा	(m) slap, smack
:तमाचा((m) जड़ना	(t) to smack (hard), to slap
तमाम	(adj.) complete, all
तमाशा	(m) show, spectacle, sport
तमीज़ (तमीज)	(f) (good) manners, sense
तमीजदार (तमीज़दार)	(adj.) well-mannered, courteous
तय	(adj.) agreed, settled
V - ने को तरस (v) जाना	(i) to long to V without having the opportunity to do so
तर्क	(m) logic
तलना	(t) to fry
तलबी	(f) summons, request
तलवार	(f) sword
तलाश	(f) enquiry, search
:तलाश (f) करना	(t) to enquire, to search

Y - को X -की :तलाश (f) रहना	(i) to keep searching for X
तशरीफ़ (तशरीफ)	(f) greatness, presence
(तशरीफ़ ले जाना)	(i) to go away (polite)
तसकीन	(f) satisfaction, consolation, solace
तसदीक (तसदीक़)	(f) testimony
:तसदीक (f) करना	(t) to testify
तसवीर	(f) picture
तसल्ली	(f) comfort, solace
तस्कीन	(f) consolation, comfort
तांगा	(m) buggy, tonga
ताऊ	(m) uncle (father's elder brother)
ताक में होना	(i) to wait for an opportunity
ताक (f) लगाना	(t) to wait for something to happen, watch for
ताकना	(i/t) to stare at, look at, glance at
X - की तरफ :ताकना	(i/t) to look at, to glance at
ताकीद (ताक़ीद) (f) करना	(t) to enjoin
ताज्जुब	(m) surprise
ताड़ना	(t) to guess (at), to speculate about, to comprehend
ताब	(f) patience, endurance

ताबड़तोड़	(adv.) in rapid succession, one right after another
ताम्मुल	(m) hesitation, doubt
तार	(m) telegram, wire
तार (m) देना	(t) to send a telegram
तारीफ (तारीफ़)	(f) praise
X - की :तारीफ(f) करना	(t) to praise X
ताली	(f) clapping (of the hands)
:ताली (f) बजाना	(t) to clap the hands
तालीम	(f) education
तालू	(m) roof of the mouth, palate
तावान	(m) fine, penalty
ताश	(m) playing cards (Western)
तितली	(f) butterfly
तिनका	(m) a bit of dry grass
तिल	(m) sesame seed
तिलस्मी	(adj.) fabulous, pertaining to magic lore
:तिलस्मी फ़ानूस	(title) "The Magic Lamp"
:तिलस्मी होशरुबा	(title of an Urdu book) "The Sense-annihilating Magic"
तिरस्कार	(m) reproach, insult

X - का :तिरस्कार (m) करना	(t) to reproach, to feel guilty about X, to give up X
तीतर	(m) partridge
तीव्र	(adj.) keen
:तीव्र (adj.)होना	(i) to become sharp
तीर	(m) arrow
:तीर (m)मारना	(t) (lit. to shoot an arrow) to accomplish something
तीसरा पहर	(m) (early) afternoon (lit. the third watch)
तीसरे पहर को	(adv.) in the afternoon
तुड़वाना	(t) to cause to break
तुड़ा (v) डालना	(t) to snap (a rope, chain etc.)
तुरन्त	(adv.) at once, immediately
तूफान (तूफ़ान)	(m) storm, hurricane
तृण	(m) blade of grass
तृप्ति	(f) satisfaction, gratification
Z - से Y - को तृप्ति (f)होना	(t) to feel satisfied, to get enough out of Z
तृषित	(adj.) thirsty, desirous
तेज़ (तेज)	(adj.) quick, strong, fast, excited
:तेज (adj.)करना	(t) to spur (on), to quicken

:तेज़	(adj.) strong, sharp, acute
तेल	(m) oil
तेवर	(m) angry look
तैयार (adj.) बैठना	(i) to be already prepared
तैयारी	(f) preparation
तैरना	(i) to swim
तोड़ना	(t) to break
तोड़ा	(m) an ornament for the (male) wrist
तोपखाना (तोपख़ाना)	(m) artillery
त्याग	(m) sacrifice
(त्याग देना)	(t) to abandon, to leave
त्योरी	(f) forehead, countenance
:त्योरी (f) बदलना	(t) to get angry
त्योहारी	(f) holiday tip, bonus

थ

थकन	(f) fatigue, weariness
थकना	(i) to be tired
थप्पड़	(m) slap, smack
(थर-थर काँपना)	(i) to shake, to shiver

थलथल	(adv.) flabby
थान	(m) hitching post, stall
थाना	(m) police station
थूकना	(i) to spit

द

दगा (m) देना	(t) to cheat
दढ़ियल	(adj.) having a long beard
दण्ड	(m) punishment, discipline
दनादन	(adv.) in quick succession (refers to gunfire)
दबकना	(i) to crouch, hide
दबना	(i) to be pressed, to yield, to give (intransitive)
दबाना	(t) to massage, to oppress, to press in दांतों उंगली दबाना
	(adj.) a dozen
दबे पांव	(adv.) on tip-toe
दबना :दबी आवाज़ (आवाज)	(f) a low voice
दम	(m) breath, life
:दम (m) लेना	(t) to rest, to relax, to take a breather

दम-खम	(m) annoyance
दया	(f) mercy, compassion, pity
Y -को X- {के ऊपर / पर} :दया (f) आना	(i) to feel sorry for X, to pity X, to have mercy on X
दयालु	(adj.) kind, generous
दरजन (दर्जन)	(num.adj.) a dozen
दरजनों	(indef.num.) dozens of
दरजा	(m) class, grade in school
दराज (दराज़)	(f) crack, cleft
दरी	(f) carpet
दर्जा	(m) rank, status, class, school grade
दर्द	(f) ache, pain
दर्दनाक	(adj.) painful
दल	(m) group, party
दलदल	(f) swamp, bog
दलील	(f) arguement, plea, case
दवा	(f) medicine
दवा-दारू	(f) medicine, medication
दशहरा	(m) a Hindu festival
दस्तरख़्वान (दस्तरख्वान)	(m) dining cloth

दस्तूर	(m) custom
दहकना	(i) to burn
दहक (v) उठना	(i) to flare up
दही	(m/f) curds
दांत	(m) tooth
Y-{को/के} :दांतों पसीना (m) आना	(i) to be worked to the bone
:दांतों के तले (दांतों तले)	(adv.) between the teeth (lit. beneath the teeth)
दांव	(m) strategem, hold (in wrestling)
दांव-घात	(m) opportunity or turn (in games)
दांव-पेंच	(m) strategem, trick
दाई	(f) midwife
दाढ़ीजार	(adj.) "old burned-beard" (term of censure used by women for men)
दाढ़ीवाला	(m) bearded man
दाद	(f) praise, appreciation
X -की दाद (f) देना	(t) to praise X
दादा	(m) paternal grand-father, elder brother; term of respectful address; father, daddy; a term of respect to a person older than one's self (familiar and affectionate)
दान-दक्षिणा	(f) present(s), reward
दाना	(m) grain

दाम	(m) price
दायर (adj.) करना	(t) to file (a law-suit)
दारू	(f) liquor
दारुण	(adj.) painful
दार्शनिक	(adj.) philosophic
दाल	(f) a pulse (e.g., lentils, peas, usually split), when cooked it usually has the consistency of porridge; as in दाल-भात simple food, literally cooked pulse and cooked rice
दावत	(f) feast, banquet
दावा	(m) pretension, claim
X - का :दावा (m) करना	(t) to claim X
Z - पर :दावा (m) करना	(t) to sue, to file a suit against
दास	(m) slave, servant
दाहिना	(adj.) right (vs. left)
(दिखाई देना)	(i) to appear, to be seen
दिन-दहाड़े	(adv.) openly, in broad daylight
दिन-रात	(adv.) a 24-hour period
दिमाग (दिमाग़)	(m) brain, mind
दियासलाई	(f) match, matchbox
X - को :दियासलाई (f) लगाना	(t) to set fire to X

दिल	(m) heart, mind
Z -पर :दिल (m) आना	(i) to fall in love, become infatuated (with Z)
:दिलचस्प	(adj.) interesting
:दिल - दरियाव	(adj.) generous, big-hearted
:दिल (m) दुखाना	(t) to torment, to give pain
:दिल-बहलाव	(m) recreation, pastime
दिली	(adj.) heartfelt
दिल्लगी	(f) joke, jest
दिवस	(m) day
दीन	(adj/m) humble, pitiable, poor, forlorn, pitious; religion
दीनता	(f) humility, humiliation
दीन - दुनिया	(f) religion and worldliness, the spiritual and the material world
दीवानखाना (दीवानख़ाना)	(m) living-room
दीवार (दीवाल)	(f) wall (dialectal)
दुख (दु:ख)	(m) sorrow, pain, trouble, unhappiness
दुखी (दु:खी)	(adj.) sad
दुगुना (दुगना)	(adj.) double, twofold
दुत्	(intj. of mild reproof)
दुत्कार	(m) reproof, reprimand

दुत्कार (m) देना	(t) to shoo away
दुनिया	(f) world, earth
दुबला	(adj.) thin, weak, slim
दुम	(f) tail
दुरुपयोग	(m) misuse, abuse
दुर्गति	(f) terrible condition
दुर्घटना	(f) tragedy, misadventure, accident
दुर्दशा	(f) bad condition
दुर्बल	(adj.) weak
दुर्बलता	(f) weakness, infirmity
दुष्ट	(m) bad, wicked man
दुहाना	(t) to have a cow milked
दूकान	(f) shop, store
दूध	(m) milk
दूध-पिलाई	(f) wet-nurse
दूना	(adj.) double
दूबदू	(adv.) in the presence of, to one's face
दूर	(adv.) far, far away
दृढ़	(adj.) firm, hard
दृश्य	(m) sight, scene

दृष्टि	(f) glance, look, sight, appearance
देखते-देखते	(adv.) in a short time
देखना	(t) to see
V - ने में देर (f) करना	(t) to be late or slow in V-ing
देर (f) लगना	(i) to take time
Y - को देर (f) होना	(i) to be late, to delay, tarry
देवगण	(m.pl.) gods
देवता	(m) god, a deity
देवत्व	(m) godlike quality, divinity, magnanimity
देवीजी	(f) worthy woman, honorable woman
देह	(f) body
देहात	(m) rural area, country, village
देहान्त (देह+अन्त)	(m) death, (body + end)
दैव न करे	(intj.) God forbid!
दैवयोग	(m) chance, fortune, accident
दैवयोग से	(adv.) by chance
दैवी	(adj.) divine
दोज़ख़ (दोजख)	(m) hell
:दोजख (m) भरना	(t) to fill one's belly
दोना	(m) a cup or bowl made of leaves

दोपहर	(f/adv) noon, midday
दोष	(m) fault
दोहरा	(adj.) twofold
दौड़ना	(i) to run
दौड़ाना	(t) to make run, to chase, to cause to run
दौरा	(m) an attack of a disease, movement, attack, fit
द्वन्द्वी	(m) adversary (in a duel)
द्वार	(m) doorway, gateway, door
द्वेष	(m) malice, venom
द्वेषपूर्ण	(adj.) malicious, hostile

ध

X -में धंसना	(i) to go deep in X, to be stuck in X
धक्का	(m) push, thrust
धक्के में पड़ना	(i) to be in the midst of a jostling crowd
धक्का (m) मारना	(t) to push, shove; to give a push
धड़कना	(i) to beat, to throb
धड़ाधड़	(adv.) with a bang, one after the other, in quick succession

धता (m) बताना	(t) to drive someone away
धन	(m) wealth, money
धन्धा	(m) work, job, chore, household
धप्पा	(m) thump
धमकाना	(t) to threaten
धमकी	(f) threat, intimidation
V - ने की :धमकी (f) देना	(t) to threaten to V
धरती	(f) earth, floor
धरे रहना	(i) to remain intact, in place, or where it was
धर्म	(m) religion, dharma
:धर्म (m) छोड़ना	(t) to forget one's moral duty
धर्मनिष्ठ	(adj.) religions
धर्मविरुद्ध	(adj.) offensive to religion, inconsistent with religion
धर्मात्मा	(adj.) religious
धांधली	(f) cheating
:धांधली (f) करना	(t) to cheat
धाक	(f) renown, awe, respect
Y - की :धाक (f) होना	(i) to be renowned
धारा	(f) stream, river

धारणा	(f) conviction
धार्मिक	(adj.) religious
धीमा	(adj.) slow
धीरज	(m) patience
धुन	(f) mania, strong inclinations, passion
धुनना	(t) to beat
धुलाना	(t) (lit.) to have (someone) wash (something), to pour water on a person's hands so that he can wash them
धुरन्धर	(adj.) great, profound
धूप	(f) sunshine
:धूप (f) खाना	(t) to enjoy the sunshine
Y -की धूम (f) होना	(t) to be very popular; to be the rage
धूल	(f) dust
धूलि - धूसरित	(adj.) dusty, covered by dust
धेले (का)	(adj.) (worth a) half-penny
धैर्य	(m) patience, endurance
धोखा	(m) deception (here, also a book title)
:धोखा (m) देना	(t) to deceive
धौंस	(f) tyranny, fear
धौल	(f) slap

ध्यान	(m) attention
ध्वनि	(f) tone of voice

न

नंगा	(adj.) naked
न जाने क्यों	I do not know why, for some reason
नक्ल	(f) copy
नक्शा (नक़्शा)	(m) blueprint, map, pattern, scheme
:नक्शा (m) जमना	(i) to be settled
नक्षत्र	(m) star, constellation
नख़रा (नखरा)	(m) coquetry
नगीच (नज़दीक)	(adv.) near, (coll. of
नग्नता	(f) nakedness
नचाना	(t) to make dance
नज़र (नजर)	(f) sight
(:नज़र आना)	(i) to seem, to appear
:नज़र (f) दौड़ाना	(t) to look around
नत	(adj.) bent
नतीजा	(m) result, results, consequence(s)

नदारद	(adj.) absent, not there
नफरत (नफ़रत)	(f) hatred, contempt, revulsion
X - से :नफरत (f) करना	(t) to hate X
Y - को X - से :नफरत (f) होना	(i) to hate the very sight of X
नमक	(m) salt
Z - का :नमक (m) खाना	(t) to have benefited from Z and, for that reason, to owe Z some loyalty
नमकहराम	(adj.) treacherous
नमकीन	(adj.) salty
नम्रता	(f) modesty, humility
नयन - बाण	(m) glance (lit. eye-arrow)
नरक	(m) hell
नर - नारी	(m) (lit. men and women) people
नर्म	(adj.) soft, lenient
नवलकिशोर प्रेस	(m) Newal Kishore Press
नवाब	(m) nawab, "nabob", prince, lord
नवाबी	(adj/f) lordly, haughty; lordliness, haughtiness
नवीनता	(f) youthfulness, freshness
नशा	(m) intoxication, drunkenness
नशिला	(adj.) intoxicating

नसीब	(m) fate, fortune, luck
Y -को X (नसीब होना)	(i) to find X available, to get X
नसीहत	(f) preaching, advice
नहीं तो	(adv.) otherwise
नांद	(f) trough
नाई	(m) barber (barbers also act as masseurs)
नाक	(f) nose
नागवार	(adj.) intolerable, offensive
नाज (अनाज)	(m) grain
नाज़ुक (नाजुक)	(adj.) delicate
नाज़ुक - दिमाग (नाजुक - दिमाग़)	(adj.) having a sensitive mind, touchy
नाज़ुक - मिज़ाज (नाजुक - मिजाज)	(adj.) delicate, sensitive, of delicate temperament, touchy
नाटक	(m) drama, play
नाती	(m) a daughter's son
(के) नाते	(pp) for the sake of
नाते का मामू	(m) a distant kinsman on the mother's side standing in the relation of brother to her, but not the mother's actual brother
नातेदारी	(f) relationship, circle or group of relatives

नाथना	(t) to pierce the nose of an animal
नानबाई	(m) baker
नाम - निशान	(m) posterity
Z - का नाम (m) न लेना	(t) to not give even any sign (of doing Z)
नाम (m) रख (v) छोड़ना	(t) to nickname
नायब तहसीलदार	(m) assistant revenue-collector
नाराज़ (नाराज)	(adj.) angry
नाश्ता	(m) breakfast
नाश्ता (m) करना	(t) to breakfast
नाहक	(adv.) in vain
निकट	(adv.) near
निकल (v) खड़े होना	(i) to run off
निकलना	(i) to emerge, to grow, to come out, to get out
निकलवाना	(t) to have someone turned out
निकालना	(t) to make emerge, to have taken out
निखट्टू	(adj.) lazy, worthless
निगरानी	(f) supervision
निगलना	(t) to swallow
निगाह	(f) look, glance

Z - की ओर :निगाह (f) दौड़ाना	(t) to look over or around Z
निगोड़ा	(adj.) wretched
निजी	(adj.) one's own, personal
नित्य	(adv.) daily, ceaselessly, everyday, regularly
नित्य का	(adj.) daily
निद्रा	(f) sleep, slumber
निन्दा	(f) reproach, calumny
X - की :निन्दा (f) करना	(t) to insult, criticize , find fault with X behind his back
निपुण	(adj.) expert
निबन्ध	(m) essay
निभना	(i) to last, to continue, to get along
निभाना	(t) to subsist
नियम	(m) law, rule, routine, program, schedule, (self-) dicipline, restraint, regulation
निरंकुशता	(f) uncontrolability, wilfulness
निरापद	(adj.) timid, meek
निराला	(adj.) unusual , extraordinary
निराशा	(f) hopelessness, despondency, disappointment, despair
निरीह	(adj.) indifferent, disinterested, without ulterior movives, innocent

निरीहता	(f) meekness, helplessness
निर्दयी	(adj.) heartless, cruel, hard-hearted
निर्वाह	(m) carrying on, subsistence
Y -का :निर्वाह (m) होना	(i) to live, to obtain one's livelihood, to be tolerated, to get along, to manage, to subsist
निर्व्याज	(adj.) honest, frank
निर्व्याज भाव से	(adv.) frankly
निवारण	(m) removal
(:निवारण करना)	(t) to keep back, to ward off
निशाना	(m) target
निश्चय	(m) decision
:निश्चय (m) करना	(t) to decide, to determine
निष्पापता	(f) sinlessness, virtue
निस्सन्देह	(adv.) doubtless
निस्स्वाद	(adj.) tasteless
नींद	(f) sleep
नींव	(t) foundation
Z - की :नींव (f) डालना	(t) to lay the foundation of Z
नीच	(adj.) mean, base
नीच जाति	(f) low or menial class

नीचा	(adj.) lower, low
:नीचा (adj.) करना	(t) to lower, to bend
:नीचा (adj.) दिखाना	(t) to show someone up, bring someone down
नीति	(f) behavior, policy
नीम	(m) the neem or margosa tree
नीलाम	(m) auction, public sale
नुकता (नुक्ता, नुक़्ता)	(m) a point, a dot, a viewpoint, an idea
नुकीला	(adj.) pointed
नृत्य	(m) dancing, dance
नेकनामी	(f) good reputation
नेत्र	(m) eye
नेम (नियम)	(m) custom
नेवता	(m) an invitation
नैतिक	(adj.) moral, ethical
नैन	(m) eye
नैनसुख	(m) a kind of thin muslin (lit. pleasing to the eye)
नोक	(f) point
नोक्दार	(adj.) pointed
नौकर	(m) servant

नौकर-चाकर	(m) servants, servants and the like
नौज	(intj.) may it never be (said only by women)
नौजवान-मर्द	(m) a young man
नौबत	(t) vicissitude, misfortune
:नौबत (f) आ जाना	(i) to come to such a condition, state
न्याय	(m) justice
न्यारा	(adj.) peculiar, unique

प

पंखा	(m) fan
:पंखा (m) झलना	(t) to fan
पंगत	(f) a row of persons eating at a feast
पक्का	(adj.) of good quality, real, first class
पकड़ाई	(f) capture
पकड़ना	(t) to catch hold of, capture, grasp
पकवान	(m) a (food) delicacy
पक्ष	(m) side, part, side of an argument, faction
पगला	(m) silly person, crazy person, madman

पगहा	(m) rope
पगहिया	(f) tether, a rope (tied around the neck of an animal)
पचास	(num. adj.) (lit. fifty) a lot of
पचीसों	(num. adj.) in great numbers (lit. twenty-five)
पछताना	(i) to be sorry, to regret
पछाईं जाति के	(adj.) pertaining to a breed of bullocks from the western regions (Punjab, Rajasthan)
पछाड़ (f) खाना	(t) to swoon, faint
पटकना	(t) to dump, to throw down, to kick, to thrash (of limbs)
पट्टीदार	(m) co-landholder
पठ्ठा	(adj.) strong, muscular
पड़ना	(i) to settle, lie, fall, stay, be put
पड़े-पड़े	(adv.) from (his) lying position, while lying
पड़ोसवाला	(m) neighbor
पढ़ (v) डालना	(t) to read through completely
पढ़ा-लिखा	(adj.) educated, literate
पढ़ाई	(f) studies
पण्डित	(m) a pundit, scholar, priest

पतंग	(m) kite
पतंगबाजी	(f) kite-flying
पतन	(m) downfall
पतला	(adj.) flimsy, thin
पता	(m) address, trace
X - का :पता $^{(m)}$ न लगना	(i) (for there) to be no knowledge of X, (for there) to be no trace of X, (for there) to be nothing to be left of X
पति	(m) husband
पतित-पावन	(m) savior of the lowly and fallen
पतियाना	(i/t) to believe, to make (someone) believe
पत्तल	(f/m) a plate made of leaves, a leaf-dish
पत्र	(m) letter
पथराना	(i) to petrify, to go dead
पथिक	(m) traveler
पद-चिन्ह	(m) footstep
पदवी	(f) title, position, rank
पदार्थ	(m) a thing, items (here, courses)
पनपना	(i) to prosper, to flourish
पनाह	(m) shelter, refuge

पन्ना	(m) page, sheet of paper
परनाला	(m) drain
पर-पुरुष	(m) a man other than one's husband
परम	(adj.) great, staunch, ardent
परमात्मा	(m) God (lit. supreme being)
परलोक	(m) the next world
परवाह	(f) concern, care; in मुझे कुछ परवाह नहीं (I) do not care
X - की :परवाह (f) करना	(t) to care about X
परस्पर	(adv.) with one another, mutual
पराकाष्ठा	(f) culmination
पराजय	(f) defeat, overthrow
पराधीनता	(m) dependence, subjugation
परिचय	(m) introduction
Z - से X-का :परिचय (m) कराना	(t) to have Z meet X, to introduce X to Z
परिचित	(adj.) familiar, known
परिणाम	(m) result
परिश्रम	(m) labor, effort
परिश्रम (m) करना	(i) to work hard
परिस्थिति	(f) situation, circumstances

परिहास	(m) joke
X - का :परिहास (m) करना	(t) to make fun of, to ridicule X
परीक्षा	(f) test, examination
परीक्षक	(m) examiner
परेशान (adj.) करना	(t) to worry
परोसना	(t) to serve
परोसा	(m) a serving of food
पलट (v) पड़ना	(i) to retaliate
पलना	(i) to be nourished
पवित्र	(adj.) holy
पशु	(m) animal, creature
पशुबल	(m) brute strength
पशु-वीर	(m) animal hero
पसीना	(m) sweat
पहचानना	(t) to recognize
पहनना	(t) to wear
पहनाना	(t) to dress (someone)
पहरेदार	(m) sentry, watchman
पहलवान	(m) wrestler
पहले-पहल	(adv.) for the first time

पहले दरज़े का	(adj.) first-class
पहलू	(m) side(of body, arguement)
पहलू (m) बदलना	(t) to shift one's body from one side to other while lying down
पहाड़	(m) mountain, fig. something very difficult
पहुंचाना	(t) to take home, deliver, bring, see off
पहेली	(f) riddle, puzzle
पांव	(m) foot
:पांव (m) पेट में डालना	(t) to curl up
पागुर	(m) rumination
:पागुर (m) करना	(t) to ruminate, chew the cud
पाठ	(m) recitation
X - का :पाठ (m) करना	(t) to recite X
पान-इलायची	(f) betel-leaf with cardamom and other ingredients
पाप	(m) sin
पापड़	(m) a thin crisp cake made of various pulse flours
पाबन्दी	(f) restriction, observance
पायेदार	(adj.) stable
पार	(adv.) across, on the other side

पारखी	(adj.) discriminating, perceptive
पार्ट	(m) part, role
Z - का :पार्ट (m) खेलना	(t) to play the part of Z
पाल (v) देना	(t) to bring up
पालन	(m) bringing up, maintenance
X - का :पालन (m) करना	(t) to maintain, support X, to observe X's rules
X - का :पालन (m)कराना	(t) to make to fulfil or keep X
पाली	(f) contest
:पाली (f) बदना	(t) to challenge
पास (adj.)करना	(t) to pass (an examination)
पास (adj.)हो जाना	(i) to pass (an examination)
पिछलग्गू	(m) a hanger-on
पिद्दी सा	(m/adj.) dwarf-like
	(पिद्दी lit. small bird)
:पिद्दी सा (adj.)लगना	(i) to seem dwarf-like
पिटना	(i) to be beaten
पियक्कड़	(m) drunkard, sot
पिलाना	(t) (lit. to cause to drink), to offer something to drink, to nurse
पीछा	(m) rear, back part

:पीछा (m) करना	(t) to chase
Z - से :पीछा (m) छुड़ाना	(t) to escape (from Z), free oneself
के पीछे	(pp) behind, because of
पीटना	(t) to beat, to strike
पीठ	(f) back
पीढ़ी	(f) generation
पीनक	(f) stupor, drowsiness (from drugs)
पीला	(adj.) yellow
पीसना	(t) to grind
पुकारना	(t) to call out, to call
पुत्र	(m) son
पुत्र-कामना	(f) desire that there be a son
पुन्न	(m) merit accruing from good deeds (coll. of पुण्य)
पुर	(m) a leather bucket
:पुर (m) चलाना	(m) to draw water up from a well by means of a winch device pulled by oxen
पुराण	(m) one of a number of more or less ancient Hindu books containing mythological narratives for the most part
पुरोहित	(m) priest
पुरौती	(f) satisfaction, compensation

पुरुष	(m) a man
पूंछ	(f) tail
पूड़ी (पूरी)	(f) a kind of bread
पूरा	(adj.) complete, full
:पूरा (adj.) करना	(t) to fulfil
:पूरा (adj.) पड़ना	(i) to suffice
पूरी (पूड़ी)	(f) a flat whole wheat cake fried in fat so as to puff up, unleavened cake fried in ghee
पूरी (f.adj.) करना	(t) to pay (fees)
पूर्ण	(adj.) full, complete
पूर्ति	(f) accomplishment, completion
पूर्व-निश्चित	(adj.) fore-ordained, predestined
पृथक्	(adj.) separate
पृष्ठ	(m) page
पेच	(m) screw
पेचीदा	(adj.) intricate
पेट	(m) stomach
(पेश करना)	(t) to present, set before, bring forward
पेशक़ब्ज़ (पेशकब्ज)	(m) a small curved dagger
पैतरा	(m) the preparatory attitudes and

	movements of a swordsman or wrestler
:पैतरा (m) बदलना	(t) to maneuver (in fighting)
पैदा (adj.) करना	(t) to create, make, produce
पैदा (adj.) होना	(i) to be born
पैबस्त	(adj.) saturated. absorbed
पैर	(m) foot
पोंछना	(t) to wipe
पोता	(m) a son's son, as in नाती-पोते तक until your grand-children's time
पोतड़ा	(m) diaper
:पोतड़ों का रईस	(m) a person with inherited wealth, born wealthy
पौ-बारह	(m) good luck (lit. the ace and the twelve in dice)
प्यास	(f) thirst, eager desire
प्यासा	(adj.) thirsty
प्रकट (adj.)करना	(t) to show
प्रकार	(m) kind, sort
प्रकाश	(m) light
प्रकृति	(f) nature, world
प्रचण्ड	(adj.) terrible
प्रचुर	(adj.) abundant, plentiful

प्रजा	(f) subject, citizen, the common people
प्रतापगढ़	(m) a small town west of Allahabad
प्रति	(adj.) every, each, per
प्रतिकार	(m) revenge
प्रतिक्षण	(adv.) with every moment
प्रतिज्ञा	(f) promise, vow
प्रतिभाशालिनी (m.adj. प्रतिभाशाली)	(adj.) intelligent, brilliant
प्रतिष्ठित	(adj.) celebrated, esteemed
प्रतिवाद	(m) refutation
X - का :प्रतिवाद (m) करना	(t) to refute X
प्रतीक्षा	(f) expectation
X - की :प्रतीक्षा (f) करना	(t) to await, expect
प्रत्येक	(adj.) every, each and every
प्रथम	(adj.) first
प्रथानुसार (प्रथा+अनुसार)	(adj.) according to custom
प्रबन्ध	(m) arrangement
प्रबल	(adj.) powerful, strong, violent
प्रभुत्व	(m) domination
प्रयाग	(m) Allahabad; a railway station in Allahabad

प्रयास	(m) effort
V - ने का :प्रयास (m) करना	(t) to try to, to attempt to V
प्रयोग	(m) uses
X - प्रयोग (m) करना	(t) to use X
प्रयोजन	(m) use, purpose, point
प्रश्न	(m) question
प्रसंग	(m) occasion, incident, anecdote, reference, context, connection
प्रसन्न	(adj.) pleased, happy
प्रसन्नमुख	(adj.) happy, agreeable (lit. having a happy face)
प्रसव	(m) delivery, childbirth
प्रसव-वेदना	(f) pains of childbirth, labor pain
प्रसव-सम्बन्धी	(adj.) pertaining to the delivery of a child
प्रसाद	(m) boon, blessing, gift, offering (of food)
प्रस्ताव	(m) proposal
X - का :प्रस्ताव (m) करना	(t) to propose X
प्रसिद्ध	(adj.) famous
प्राण	(m) animating force, life
प्राणान्तक	(adj.) to the point of almost killing oneself

प्राणी	(m) being, creature
प्रात:काल	(adv./m) early in the morning, early morning
प्राधान्य	(m) preponderance
प्राप्त	(adj.) obtained, gained
:प्राप्त (adj.)करना	(t) to obtain, gain, achieve
:प्राप्त (adj.) होना	(i) to get, to obtain
प्रायश्चित	(m) penance, atonement
प्रेमालिंगन	(m) embrace
प्रेमिका	(f) (a man's) girl-friend, sweetheart
प्रेमी	(m) admirer, lover
प्रेरणा	(f) inspiration

फ

फंसना	(i) to be caught, trapped
फर्क (फ़र्क़)	(m) difference
फ़क़ीर (फकीर)	(m) religious beggar, beggar, ascetic
फजीहत (फ़ज़ीहत)	(f) harassment
X - की :फजीहत (f) करना	(t) to harass X

फटकार	(f) threat, abuse
:फटकार (f) बताना	(t) to scold, chastise
फटकारना	(t) to shake violently
फटकना	(i) to come or go near, to drop in, to keep aloof from
फटना	(i) to tear, to rip
फटा	(adj.) torn, tattered
फटेहाल	(adj.) in bad shape, poor
फबती	(f) remarks
:फबतियां (f.pl.) चुस्त करना	(t) to make sarcastic remarks
फ़रमाना (फरमाना)	(t) to say, command (deferential)
फ़रियाद (फरियाद, फर्याद)	(f) appeal, complaint, cry for help
फूलना	(i) to bloom
फ़लां	(adj.) so and so
फसल	(f) crop
फांकना	(t) to toss grain in to the mouth from the palms of the hand, put something powdered into the mouth
फाका	(m) a day without food
फाग	(m) the Holi festival songs (in फाग गाना to sing these)
फाटक	(m) gate

फाड़ना	(t) to split, to crack, to tear
फ़ायदा (फायदा)	(m) advantage, gain, use, profit
X - का :फ़ायदा (m) उठाना	(t) to take advantage of X
फ़ारसी (फारसी)	(f) Persian
फ़िक्र (फिक्र)	(f) care, worry, concern
X - की :फिक्र (f) करना	(t) to worry about, to be concerned about X
Y - को :फिक्र (f) होना	(i) to be concerned about, to be worried about
फ़िजूल - ख़र्ची (फ़िजूल-खर्ची)	(f) extravagance, dissipation
X - पर फिदा (फ़िदा) (adj.) होना	(i) to be devoted to X, to dote on, be strongly attracted to X
फिरना	(i) to turn, to be turned away, to turn away
फिसल (v) पड़ना	(i) to slip
फिसाद (फ़िसाद)	(m) mischief
फीका	(adj.) tasteless, insipid
फ़ीस (फीस)	(f) charges, cost (from 'fees')
फुटकर	(adj.) various, miscellaneous
फ़ुरती (फुरती, फुर्ती)	(f) quietness, liveliness, swiftness
फुरसत (फ़ुरसत)	(f) free time, time, leisure
फुसफुसा	(adj.) puffed out (by air as a sleeve)

फूंकना	(t) to burn, to spend extravagently
फूट-फूटकर (adv.) रोना	(i) to cry bitterly
फूटना	(i) to be rent, split, explode
फूफा	(m) "uncle" (husband of one's father sister) "the two bullocks we got from uncle"
फूल	(m) flower
:फूल (m) चढ़ाना	(t) to offer flowers
फूल-पौधे (m.pl.) लगाना	(t) to garden
फूलना	(i) to puff, to swell, to flower
:फूलना-फलना	(i) to flower and bear fruit
फूस	(m) dry grass, hay, straw
फेंकना	(t) to throw, toss
फेरना	(t) to turn (away)
फेल (फ़ेल)(adj.) हो (v) जाना	(i) to fail
फैलाना	(t) to spread
फ़ौज (फौज)	(f) army
फ़ौरन (फौरन)	(adv.) at once, immediately

ब

बंगला	(m) a large house with grounds

बंझा	(m) a parasitic plant growing in trees
बंदी	(m) prisoner
बंधन	(m) bond, tie, restriction, captivity, shackle
बंधना	(i) to be tethered, to be tied, to be bound to be restricted, to be tied up
बंधा हुआ	(adj.) fixed, allotted
बकना	(t) to talk nonsense, to rant and rave
बखार	(m) place where grain is stored, silo
बखान	(m) description, praise
X - का बखान (m) करना	(t) to praise, to extol X
बगल	(f) armpit, side, as in बगलें झांक रहे थे (idiom) "they wanted to escape", underarm
:बगल में दबाना	(t) to tuck under the arm
बचना	(i) to recover, to be saved, to be left, to remain, to be left over, to escape, to recover
बचपन	(f) childhood, infancy
बचाकर (adv.) रखना	(t) to put aside (money, etc.)
बचाना	(t) to save, to ward off, to defend
बजना	(i) to be sounded (a bell or musical instrument)
बजरा	(m) house-boat

बज्रपात (वज्रपात)	(m) a stroke of lightning, the fall of a thunderbolt
Y - पर बज्रपात (m) होना	(i) to be stunned, thunderstruck
बज़ाज़ (बजाज)	(m) a cloth merchant
बजा लाना	(i) to carry out work
बटेर	(m) quail
बटोरना	(t) to accumulate, to gather, to rally
बट्टा लगना	(i) to be blemished, damaged
बड़ा बूढ़ा	(m) elder
बढ़ई	(m) carpenter
बढ़ना	(i) to advance, increase, grow, be extended
:बढ़-बढ़कर (adv.) बातें (f.pl) करना	(i) to talk big
बढ़ाना	(t) to extend, to stretch out
बतलाना	(t) to explain
बदतर	(adj.) worse
बदतमीजी (बदतमीज़ी)	(f) bad manners, discourtesy
बदन	(m) body
बदनाम	(adj.) having a bad reputation
बदनामी	(f) slander, defamation
बदमस्त	(adj.) dead drunk

बदमाश	(adj.) a rascal, a scoundrel (a term of abuse)
बदमाशी	(f) misbehavior
:बदमाशी सूझना	(i) to begin to misbehave
बदलना	(i/t) to change, to be changed, to change (something)
बदला	(m) exchange, compensation, return, revenge
Z - का :बदला (m) चुकाना	(t) to take revenge for Z, to compensate for Z
के :बदले	(pp) instead of, in place of
बदहजमी (बदहज़मी)	(f) indigestion
Y - को बदहजमी (f) हो (v) जाना	(i) to get indigestion
बदहवास	(adj.) stupefied, perplexed, distracted
की बदौलत	(pp) because of, due to
बधाई (f) बजाना	(t) to congratulate, celebrate (by playing on some musical instrument)
Z - बनकर	(adv.) as Z
बन्द	(adj.) closed, confined
:बन्द (adj.) होना	(i) to stop, end
बन्दर	(m) monkey
बन्धन	(m) bond, grip, restriction
बन्धु	(m) brother, friend

बरकत	(f) auspiciousness, blessing, profit
बरबाद (adj) करना	(t) to squander
बरसात	(f) the rains, the rainy season
बरात	(f) the procession of a bridegroom's party at the wedding, the bridegroom's party at the wedding
बराबर	(adj./adv./pp) equal, equally, like
X -की बराबरी (f) करना	(t) to be like X, to be equal to
बरामदा	(m) a veranda
बरोंठा	(m) place near the main entrance of a house, porch, veranda (outer or inner)
(बर्दाश्त करना)	(t) to tolerate
X - की बर्दाश्त (f) होना	(i) to tolerate, stand for X
बलपूर्वक	(adv.) forcibly
बलवान	(adj.) potent, strong
:बलवान (adj.) करना	(t) to strengthen
बला	(f) trouble, calamity, woe; in मेरी बला से what do I care
बली	(adj.) strong
बल्कि	(conj.) but, rather, even (more)
बस	(intj./m) all right, that's all; control

Z -के :बस का होना	(i) for Z to be able to (do something) (usually used with the negative)
बसना	(i) to live, to settle
बहना	(i) to flow
बहस	(f) arguement
बहाना	(m) pretense, excuse
बहुमूल्य	(adj.) expensive, costly
बहू	(f) daughter-in-law (of the family or household)
बहू-बेटी	(f) daughters and daughters-in-law
बांधना	(t) to tie, to secure, to bind, to put on
बांभन (ब्राह्मण)	(m) brahman
बांस	(m) bamboo, bamboo stick
बाकी	(adj./f) remaining, left; the remainder
:बाकी (f) देना	(t) to pay off the debt
बाज़ी (बाजी)	(f) game, (one) game (in chess, cards, etc.)
V - ने - की Z - से बाज न आना	(i) to persist in the Z (e.g., attempt) to V
बात (f) करना	(t) to talk, to speak
:बातों-बातों में	(adv.) while talking, in the course of conversation

बादल	(m) cloud
बादशाह	(m) king, emperor
बादशाहत	(m) kingdom
बादशाही	(adj.) royal
बाधा	(f) hinderance, impediment, obstacle, objection
X - में बाधा (f) डालना	(t) to obstruct, to stand in the way of X
बाण	(m) arrow, :बाण चलाना to shoot an arrow
बाप	(m) father
बाबा	(m) father, grandfather
बार	(m/f) time, occasion
:बार-बार	(adv.) again and again, over and over, time and again, repeatedly
बारीक आंखों से	(adv.) closely, perspicaciously (lit. with fine (subtle) eyes)
बारी-बारी से	(adv.) each in turn
बालक	(m) boy
बाल-बच्चे	(m) family
बाल-सभा	(f) council of boys
बालिका	(f) girl
बावरची	(m) cook

बास	(m) habitation, dwelling, place
बाहरी	(adj.) outside
बिकना	(i) to be sold
बिगड़ना	(i) to spoil, to worsen, to go wrong, to be angry, to scold, to show disapproval, to be damaged, to be ruined
X - से : बिगड़ना	(i) to scold X, to show disapproval of X
बिगाड़ू	(m) destroyer, trouble-maker
बिछना	(i) to be spread out
बिछाना	(t) to spread (cloth), to spread out
बिछावन	(m) bedding
बिठाना	(t) to seat, to make sit
बिदा (adj.) होना	(i) to leave
बिना	(adv.) without
बिनोदिनी (विनोदिनी)(m.adj. विनोदी	(adj.) cheerful, fun-loving, merry
बिल्कुल न	(adv.) not at all
बिसात	(f) chess cloth
बिस्तर (m) लगाना	(t) to make a bed
बीघा	(m) 1/5 of an acre
बीच	(adv.) (in the) middle, midst

बीच खेत	(adv.) undoubtedly, clearly
बीज	(m) seed
बीत (v) जाना	(i) to pass (of time), elapse
बीबी	(f) wife, mistress (in addressing her)
बीमार	(adj.) sick, ill
बीसों	(num.adj.) a crowd (not necessarily twenty)
बुजुर्ग (बुज़ुर्ग)	(m) ancestor, elderly person
बुझना	(i) to be extinguished, put out
बुद्धि	(f) wit, wisdom, intelligence
बुद्धि-हीन	(adj.) foolish, unwise
बुद्धू	(m) fool, P.N.
बुद्धू सिंह	(m) P.N.
बुधिया	(f) P.N.
बुनियाद	(f) foundation
:बुनियाद (f) डालना	(t) to lay the foundation
Y - को बुरा (adj.) लगना	(i) to feel bad
बुराई	(f) bad things, wickedness
X - की :बुराई (f) करना	(t) to abuse, to talk ill of X
बुलावा	(m) invitation, call

बूंद	(f) drop
बूढ़ा	(m) old man
बूता	(m) strength, capacity
बृहद्	(adj.) large, huge
बे	(v.p.) term of address to younger persons or inferiors. It can be used contemptuously or abusively. Here, it is used somewhat abusively.
बेअदब	(adj.) ill-mannered, lacking in etiquette
बेकरार	(adj.) impatient
बेकसी	(f) the state of being without a patron, poor, indigent
बेकार	(adj.) useless, worthless
बेग़म (बेगम) साहबा	(f) wife, (Mrs.). The term साहबा is used to indicate respect
बेगाना	(adj.) foreign, alien
बेगार	(m) (forced) laborer; forced labor
बे-गैरत (बे-ग़ैरत)	(adj.) without self-respect, shameless
बेचारा	(adj./m) wretched, poor, helpless; poor thing, poor fellow
बेचारी	(f) poor thing, poor woman
बेचैन	(adj.) uneasy, uncomfortable, restless
बेचैन करने वाला	(adj.) making uneasy, distrubing, gnawing (as of hunger)
बेजा	(adj.) improper, undue
बेड़ा	(m) ship

X - का :बेड़ा (m) पार लगाना	(t) to help out X, (lit. to send X's ship across)
बेढब	(adj.) ill-formed, bad
बेतहाशा	(adv.) without thinking, recklessly
बेदम	(adj.) breathless
बेदर्द	(adj.) unsympathetic, hard-hearted
बेदर्दी	(f) coldness, hard-heartedness, lack of sympathy, unfeelingness
बेफिक्र (बेफ़िक्र)	(adj.) irresponsible, carefree
बेफिक्री (बेफ़िक्री)	(f) without worries, without cares
बेबाक	(adj.) paid off, clear
:बेबाक (adj.) करना	(t) to clear, to pay off a debt
बेभाव की पड़ना	(i) to be soundly beaten
बेमौत मारना	(adv.) to die early, before one's time
बेराह	(adv.) astray
बेलना	(t) to roll out (paapaR, bread, etc.)
बेलाग	(adj.) making no concession, straightforward, pulling no punches
बेवफ़ाई (बेवफाई)	(f) faithlessness, ingratitude
बे-सिर-पैर का	(adj.) without rhyme or reason
बेहोश	(adj.) unconscious, senseless

बैकुंठ	(m) heaven, paradise, the place where Viṣṇu lives
बैठक	(f) get-together, meeting; sitting room
बैठकबाज	(m) a person who spends much of his time in social gatherings; gossip and machination
बैल	(m) ox
बोझ	(m) burden, load
बोटी	(f) a slice of meat
Y - की :बोटी (f) कांपना	(i) to shake all over, to be thoroughly frightened
बोली	(f) voice, speech, language
बौछार	(f) torrent, volley
ब्याना	(t) to give birth (of animals)
ब्याज	(m) interest, profit
ब्याह	(m/t) marriage; to marry
X - का ब्याह करा देना	(t) to arrange a marriage for X

भ

भंग	(f) (bhang) hemp-derived narcotic; leaves or infusion of hemp

X -के भरोसे रहना	(i) to rely on the support of X
भला	(intj.) an emphatic which implies a negative answer to the interrogative clause it relates to, e.g., in भला भूंगी के सिर के बाल बच सकते थे Could the hair of Bhungi's head have been saved?, i.e., no, they would have pulled it all out
भलीमानस (m) भलामानस	(int./f) good woman

भंगिन	(f) woman of the sweeper caste (in India, the sweepers are a very low, untouchable caste). Untouchability has now been made illegal in India.
भक्त	(m) devotee, worshipper, follower
भद्दा	(adj.) ugly
भद्र	(m) refined, genteel
X - में भनक पड़ जाना	(i) to reach X (of sounds), to be overheard by X
भयंकर	(adj.) dangerous, frightening, fearful, terrible, critical
भय	(m) fear, fright
भयभीत	(adj.) afraid
Y - को भय (m) होना	(i) to be frightened
भरना	(i/t) to fill
भरपेट	(adv.) satisfaction, full of food (lit. full stomach)
Z - से भरा (adj.) होना	(i) to be filled with (full of) Z
भरोसा	(m) confidence, trust, support, help
X - के भरोसे रहना	(i) to rely on the support of X
	(intj.) an emphatic which implies a negative answer to the interrogative clause it relates to, e.g., in भला भूंगी के सिर के बाल बच सकते थे Could the hair of Bhungi's head have been saved?, i.e., no, they would have pulled it all out
भलीमानस भलामानस	(intj./f) good woman

भवन	(m) a large building, palace
भांड़	(m) clown, jester
(की) भांति	(pp) like, as
भांति-भांति	(adj.) all sorts of, all kinds of
भांपना	(t) to guess, divine
भाई-चारा	(m) fraternal association or feeling
भाग	(m) division, section, share, part, portion
भागना	(i) to steal away, to run away, to run
भाग खड़ा होना	(i) to get up and run away
भाग्य	(m) luck, fate, fortune; as in भाग्य का बली मंगल lucky Mangal
भाग्य को रोना	(i) to bemoan one's fate
भाग्यवान	(adj.) lucky, fortunate
भात	(m) boiled rice
भारतवासी	(m) Indian, a person living in India
भारी	(adj.) heavy
भाव	(m) manner, tone, mood, emotion, countenance, intention, purpose, sentiment, feeling
भाव	(m) price
भावज	(f) sister-in-law

भावना	(f) sentiment, feeling, wish, desire notion, emotion
भाषा	(f) language
भिखारी	(m) a beggar
भिड़ना	(i) to clash, skirmish
भिनकना	(i) to buzz, hum
भींगना	(i) to be wet, drenched
भीख	(f) alms
भीड़	(f) crowd, assemblage
भीतर	(adv.) inside
भीत	(adj.) terrified
भूंगी	(f) P.N.
भूख	(f) hunger
भूखों मर जाना	(i) to die of starvation, to be starving, to be very hungry
भूगोल	(m) geography
भूत	(m) ghost
Y - पर :भूत सवार होना	(i) to be possessed
भूनना	(t) to roast, bake (on embers)
भूमण्डल	(m) the earth
भूलकर भी---न	(adv.) never again (even unconsciously)

भूलना	(i) to be forgotten, to forget
भूल (v) जाना	(i) to forget
भूसा	(m) hay, straw, husks
भूसी	(f) chaff
भेंट	(m) meeting, vist, interview; gift
X - Z - की (:भेंट करना)	(t) to dedicate X to Z
भेद	(m) discrimination, distinction, difference
भेदभाव	(m) discrimination
भैंस	(f) she-buffalo
भैया	(m) brother
भैरो	(m) P.N.
भोंकना	(t) to pierce, gore, stab
भोंपू	(m) horn, siren
भोग	(m) pleasure, luxury
भोगना	(t) to experience, enjoy, suffer
भोज	(m) feast
भोजन	(m) food
:भोजन (m) करना	(t) to eat, to eat a meal

भोर	(m) morning, dawn
भोला-भाला	(adj.) innocent
भौंरा	(m) a large black bee
भ्रम	(m) delusion, misconception

म

मंगल	(m) P.N.
मंगाना	(t) to order, to send for
मंडराना	(i) to hover, to hang over
मंजूर	(adj.) accepted, agreed
मकान	(m) house
मक्खी	(f) a fly
:मक्खी (f) मारना	(t) to kill flies, to remain idle, to do nothing
मचना	(i) to be happening, शोर मचना and with a few other (than शोर subjects); to be made (noise), to be produced (noise)
मछली	(f) fish
मज़दूरी (मजदूरी)	(f) employment, work
मज़बूत (मजबूत)	(adj.) strong

मज़बूर (मजबूर)	(adj.) compelled, imposed upon, helpless
V - ने पर :मजबूर (adj.) करना	(t) to force (X) to V
मजलिस	(f) gathering, assembly, party, meeting
:मजलिस (f) सजाना	(t) to organize a party
मज़ा (मजा)	(m) pleasure, flavor, taste
X -का :मजा (m) लेना	(t) to enjoy, to relish X
Z -में :मज़े (m.pl.) लेना	(t) to take pleasure in, enjoy
मजूर (मजदूर)	(m) a laborer, hired man
मटकना	(i) to gesture, to gesticulate (particularly with the eyes)
मटर	(f) peas (usually when growing as a crop)
मण्डली	(f) company, group
मतलब	(m) meaning, concern
मतवाला	(adj.) strong, powerful (lit. intoxicated)
मद	(m) intoxication, delight
मद	(f) item
मदक	(f) intoxicant which is prepared for smoking
मदरिया	(f) a small hookah
मधुशाला	(f) tavern

मध्यवाला	(m) an average man
मन	(m) mind, heart
Y - का- -की ओर :मन (m) जाना	(i) to think of X
:मन में कटना	(i) to feel awkward, ill at ease, to feel annoyed but helpless
मनचला	(adj.) ambitious, bold
मनमुटाव	(m) friction, antagonism
मनहूस	(adj.) ill-omened
मना	(adj.) forbidden
:मना (adj.) करना	(t) to ask or tell not to do something, to forbid, warn
मनाना	(t) to appease, to placate
मनुष्य	(m) a man, a person, human
मनोमालिन्य	(m) malice, ill-will
मनोरंजक	(adj.) attractive, fascinating
मनोरंजन:	(m) entertainment, recreation
Y - का :मनोरंजन (m) होना	(i) to be entertained
मनोवृत्ति	(f) mentality
मनोहर	(adj.) pleasing, captivating
मन्द	(adj.) slow
मन्दिर	(m) temple

मरज़ (मर्ज़, मरज)	(m) disease
मरम्मत	(f) a beating (lit. repair, fixing)
Y - की :मरम्मत (f) होना	(i) to be beaten, to get a beating
मरसिया	(m) an elegy
मर्द	(m) man, husband
मर्यादा	(f) demarcation, tradition, custom, decorum
मलना	(t) to rub
मलाई	(f) cream
मलाल	(m) complaint, displeasure, ill-feeling
मल्लयुद्ध	(m) wrestling, a duel
मवेशी	(m) cattle
मवेशी-खाना	(m) shed or bard for cattle
मशहूर	(adj.) famous
मसलन	(adv.) for instance
मसलहत	(f) good counsel, suitable, or expedient thing to do
मसला	(m) problem, matter
मस्त	(adj.) intoxicated, overcome, engrossed, delighted, overjoyed, happy
:मस्त (adj.) होना	(i) to be happy, overjoyed
मस्तक	(m) head, forehead

मसाला	(m) spice, ingredient
महज़ (महज)	(adv.) merely
महतो	(m) an honorific term for a farmer
महत्व	(m) importance
महत्वपूर्ण	(adj.) important, momentous
महरा	(m) servant that does housework
महरी	(f) a servant who does housework
महल	(m) palace, place
महाजन	(m) money-lender
महानता	(f) greatness, eminence
महाराजिन	(f) woman who cooks (usually a Brahman)
महाशय	(m) gentleman (a term of respect)
महीना	(m) month
महीप	(m) king
महोदय	(m) (a person of great) eminence, prosperity
मांग	(f) part (in the hair)
मांगना	(t) to ask for
मांजना	(t) to scour, to wash (dishes)
मांझा	(m) paste with ground glass or sand in it which is applied to a kite string in order to cut the strings of other kites

	which it is rubbed against
माची	(f) stool
माजूम (माजून)	(m) an inebriating preparation of bhang with sugar and spices
मात	(f) checkmate
:मात (f) होना	(i) to be defeated, to be checkmated
मातम	(m) mourning, grief
X - का :मातम (m) करना	(t) to mourn (for) X
मातहती	(f) supervision, authority
Z - की :मातहती (में)	(adv.) under Z's supervision, as a subordinate of Z's
मातृत्व	(m) maternity, motherhood
माथा	(m) forehead
मादकता	(f) charm, attractiveness, intoxicating quality
मानना	(i/t) to agree, to give in, to accept, to take for granted, to believe
मानुषीय	(adj.) human
मानों (मानो)	(conj.) as if
माफी (माफ़ी)	(f) rent-free (land)
मामला	(m) matter, an (unpleasant) situation, difficulty
मामूल	(m) custom, practice, usage

मामूली	(adj.) ordinary, everyday
माया	(f) illusion
माया-जाल	(m) the net of temptation
माया -मोह (माया और मोह)	(m) illusion and infatuation (technical term in philosophy
मार	(f) beating, blow
मार-काट	(f) violence
:मार (f) खाना	(t) to be beaten, to take a beating, to be beaten up
Y - पर :मार (f) पड़ना	(i) to be beaten
मारे मारे (adv) फिरना	(i) (idiom) to wander around aimlessly
मारना	(t) to attack
मार (v) गिराना	(t) to kill (and leave prostrate)
मार (v) डालना	(t) to kill
:मार (v) बैठना	(i) to strike out at
मार्ग	(m) way, road
माल	(m) money, goods
मालकिन	(f) mistress of the house, lady
माला	(f) garland, series
मालिक	(m) master
मालूम (adj.) होना	(i) to seem, to appear

मिज़ाज (मिजाज)	(m) temperament, nature disposition
:मिज़ाज (m) गरम होना	(i) to get very angry
मिटाना	(t) to erase, to efface, to wipe out
मिट्टी	(f) earth, clay
Z - की :मिट्टी उठेगी	(i) she will be taken to the burning ghat. (lit. Z's earth (clay) will rise)
X - की :मिट्टी (f)(पलीद करना)	(t) to embarrass X, put X in an awkward position, to show X up
Z - की :मिट्टी(f)(पार लगाना)	(t) to prepare Z's funeral, (lit. to transport Z's clay)
मिठाई	(f) sweets, candy
मिडलची	(m) one who has passed the seventh grade (a middle school teaches the grades from fifth to eighth)
मित्र	(m) friend
मिनिट (मिनट)	(m) minute
मिन्नत	(f) plea, pleading
:मिन्नत (f) करना	(t) to entreat
मियां	(voc/m) husband, master; (among men) friend
मिर्जई	(f) a kind of plain shirt
मिलना-मिलाना	(m) participation in social activities
मिलाना	(t) to mix, to cause to meet, introduce
मिसाल	(f) example

मिस्सी	(f) a cosmetic powder rubbed on the gums and lips to darken or blacken them and to show off the teeth to advantage, also thought to have medicinal value
मीनार	(f) tower
मीठा	(adj.) sweet
मुंड़ा (v) लेना	(t) to have shaved oneself
मुंशी	(m) clerk, accountant
मुंह	(m) mouth, face
:मुंह अंधेरे	(adv.) early dawn
मुंह (m) उतरना	(i) to look depressed
मुंह (m) चुराना	(t) to turn (one's face) away, to avoid
मुंहताज	(adj.) in need of, desperate for
मुंहलगा	(adj.) uppity, spoiled
:मुंह (m) लटकाना	(t) (lit. to dangle the face) to look dejected
मुआमला	(m) situation, matter, subject
मुआवजा (मुआवज़ा)	(m) remuneration
मुकदमा (मुक़दमा)	(m) case (in law)
के मुकाबिले (मुक़ाबिले) में	(pp) in comparison with
मुक्त	(adj.) freed, liberated, free
मुक्त-भोग	(m) free love

मुख	(m) face, mouth
मुखिया	(m) leader, chief
मुर्गी	(f) hen
मुटमरदी (मुटमर्दी)	(f) violence, robbery
मुठभेड़	(f) encounter, unexpected meeting
X - से Y - की :मुठभेड़ (f) हो जाना	(i) to run into X
मुट्ठी	(f) fist
मुट्ठी-भर	(adj.) handful
मुड़ना	(i) to turn
मुतालबा	(m) arguement
मुदा	(conj.) but, nevertheless
मुद्रा	(f) (facial) expression, countenance (lit. seal, impression)
मुनाफा (मुनाफ़ा)	(m) profit
मुनासिब	(adj.) proper
मुनि	(m) hermit, saint, ascetic, holy man
मुफ़्त (मुफ़्त)	(adj.) gratis, free
मुफ़्त का	(adj.) free
मुमतहिन	(m) examiner (in school examinations)
मुर्दा	(m) corpse, dead body

मुलाकात	(f) meeting, association
मुलाज़िम (मुलाजिम)	(m) servant, employee
मुलाहिजा	(m) looking attentively, regard
मुलाहिज़ा (मुलाहिजा)(m) करना	(t) to examine closely, to pay regard to, to regard with favor
मुल्तवी (adj.) होना	(i) to be postponed
मुहल्लेवाला	(m) neighbor, a person of a particular street or neighborhood
मुश्किल	(f) difficulty
मुसाफ़िर (मुसाफिर)	(m) pasaenger, traveler
मुसीबत	(f) trouble, sisaster, calamity
मुस्कराना	(i) to smile
मुस्कान	(f) smile, grin
मुहर	(f) impression, seal
मुहरा	(m) chessman
मूंछ	(f) moustache
मुंडन	(m) the hair-cutting ceremony (of a boy)
मूंडना	(t) to shave
मूक	(adj.) speecheless, mute, dumb, silent
मूड़	(m) head, skull (rustic)
मूर्ति	(f) form, image, figure, statue

मूसलाधार	(adj.) (raining) in torrents
मृतक	(m) corpse, cadaver, deceased
मृत्यु	(f) death
मृदुभाषिणी (m.adj. मृदुभाषी)	(adj.) gentle voiced, soft-spoken
मेड़	(m/f) mound between two fields
मेल	(m) friendliness, union
:मेल (m) हो जाना	(i) to be reconciled
मेला	(m) fair, carnival
मेवे	(m.pl.) fruits and nuts
मेहतर	(m) sweeper

:मेहनत (f) करना	(t) to work hard
मेहनत	(f) hard work
:मेहनत-मजूरी	(f) hard work
मेहनती	(adj.) hardworking, industrious
मेहमान	(m) guest
मेहराब	(f) archway
मेहरिया	(f) woman
मैकू	(m) P.N.
मैत्री	(f) friendship

मैयत	(f) corpse, dead body
मोटा	(adj.) strong, husky, fat, plump, healthy
:मोटा-ताजा	(adj.) healthy, robust
मोटेराम शास्त्री	(m) a typical name -- and an ironic one -- and title of a brahman priest (शास्त्री)
मोती	(f) pearl
मोरचा	(m) front lines
मोह	(m) infatuation, attachment (a philosophical term)
मोहिनी	(f/adj.) enchantment, fascination; enchanting, fascinating
मौक़ा (मौका)	(m) opportunity
मौज़ूद	(adj.) present, on hand, in attendance
मौत	(f) death
मौन	(m) silence
मौरूसी	(adj.) heriditary
मौलिक	(adj.) basic, original, fundamantal
मौसम (मौसिम)	(m) season, weather

य

यहां तक (कि)	(adv.) to the point (extent) that (he went) so far as to
या	(conj.) or, (or) whether
यात्रा	(f) journey
याद	(f) memory, recollection
Y - को^{X} -की :याद (f) आना	(i) (for X) to come to one's mind, to remember X
:याद (f) दिलाना	(t) to remind
(याद रखना)	(t) to remember
यार	(m) friend, pal, buddy
(याद कर (v) लेना)	(t) to memorize, learn by heart
युक्ति	(f) scheme, device, tactic
युवक	(m) a young man, a youth
युवती	(f/adj.) a young woman; young (fem.)
यों (यूं)	(adv.) although, but, thus, in this way, like this,
यों तो	(adv.) otherwise, at other times
यों ही	(adv.) already, in this way, thus, as (it) is
के योग्य	(pp) fit for, deserving of

X - के :योग्य (adj.) होना	(i) to be suitable for X, to deserve X
यौवन	(m) youth

र

रंक	(m) a penniless man
रंग	(m) color, manner, attitude, feeling
:रंग (m) उड़ना	(i) to fade (of a color)
X - पर रंग (m) चढ़ाना	(t) to dye, to color X, to influence X
रंग (m) जमाना	(t) to make an impression, to make an effect
रंग-ढंग	(m) manner, appearance
रंगना	(t) to color, cover with writing, to dye
रंज	(m) grief, sorrow
Y - को :रंज (m) होना	(i) to be sorry, to grieve
रईस	(m) aristocrat, a rich man, a nobleman
पोतड़ो का :रईस	(m) a person with inherited wealth, a born wealthy man
रकम (रक़म)	(f) sum, amount
रक्त	(m) blood
रक्षा	(f) protection

X -की :रक्षा (f) करना	(t) to guard, to protect X
रखना	(t) to keep, to hold, to put
रखवाला	(m) watchman
रगड़कर	(adv.) to the limit, to the bone
रगड़ना	(t) to rub, to scrub
रगेदना	(i) to pursue, to go after
रचना	(f) creation, composition
रचना	(t) to make, to create
रट	(f) repetition
:रट लगाये जाना	(i) to go on repeating something
रटना	(t) to repeat, to learn by rote
रटन्त	(f) rote learning
रमणी	(f) young lady, beautiful young woman, woman
रस	(m) pleasure, juice, essence, flavor, taste
रसिक	(m) admirer, connoisseur
रसिक-वृन्द	(m) group of admirers
रसीद	(m) receipt, acknowledgement of a sum
डंडे (m.pl.) (:रसीद करना)	(t) to beat with a stick repeatedly
रसेदार तरकारी	(f) non-dry cooked vegetables, curried vegatables (lit. juicy vegetables)

5

राज (राज्य)	(m) regime, realm, kingdom
राजकर्मचारी	(m) a high official
राजनीति	(f) politics
राजनीतिक	(adj.) political
राजभक्ति	(f) loyalty to the king
X -पर राजी (राज़ी)(adj.) होना	(i) to agree to X
राज्य (राज)	(m) reign, realm, regime
:राज्य-व्यवस्था	(f) system of government
रान	(f) thigh
राब	(f) syrup, molasses
राम-राम (m) करना	(t) to greet, to salute (i.e., to say राम राम)
राम-राम (m) होना	(i) to exchange greetings (to be exchanged (of greetings))
रायता	(m) a salad made with curds
रावण	(m) P.N., the demon king of Lanka (in the Ramayana)
राष्ट्र	(m) country, nation
के रास्ते	(pp) along, by means of
राह	(f) road, way
अपनी :राह (f) लेना	(i) to be on one's way, move on
रियासत	(f) estate, property, rule, government

रिवाज	(m) custom
री	(voc.pc.) (m रे) a term of address used for people younger than oneself and to inferiors
रीति	(f) way, tradition, custom
रीति-व्यवहार	(m) traditional practice, customary observance
रुद्र-रूप	(m) terrible appearance or expression (from Rudra, the terrible aspect of Shriva)
रूठना	(i) to sulk
Z -से :रूठना	(i) to be angry (with Z)
Z -पर :रूठना	(i) to sulk (because of Z)
रूप	(m) beauty
Z -का :रूप (m) (धारण कर (v) लेना)	(t) to assume the form of Z
रूप-रेखा	(f) appearance
रूपवती (m.adj रूपवान्)	(adj.) beautiful
रे	(voc.pc.) usually used in addressing inferiors
रेखा	(f) line
रेती	(f) hillock; a muhalla in Gorakhpur
रेशम	(m/f) silk
रेशमी	(adj.) made of silk
रोकना	(t) to stop, to block
रोक-टोक	(f) restriction, limit

रोग	(m) affliction, disease, malady
रोगी	(adj.) sick
रोज़ (रोज)	(m) day (twenty-four hours)
रोज़गार (रोजगार)	(m) trade, business, profession
रोज़ा (रोजा)	(m) fase (of Muslims)
रोजाना (रोज़ाना)	(adv.) daily
रोना-धोना	(m) weeping, etc. (रोना to weep, weeping, plus धोना , lit. to wash)
रोटी	(f) bread
रोब	(m) capacity to inspire awe, dignity
:रोब के साथ	(adv.) authoritatively
X -पर :रोब (m) जमाना	(t) to threaten, bully X, to advise X authoritatively
रोम	(m) fine hair on the body, pore
रोयें-रोयें से	(adv.) from every hair(रोयां)or pore (रोमा, lit. hair of the body)
रोशनी	(f) light
रोष	(m) wrath
रौनक	(f) liveliness, brilliance

ल

लकड़ी	(f) wood

लक्ष्मी	(f) P.N.; Ladshmi, the goddess of wealth
लगभग	(adv.) approximately
लगनेवाला	(adj.) sharp, wounding
लगातार	(adv.) consecutively, in a row
लग्गा	(m) a long bamboo pole
लघुता	(f) smallness, insignificance
लचर	(adj.) weak, loose
लच्छन	(m) sign
Z -से लजाना	(i) to be ashamed of Z, to be embarrassed because of Z
लज्जा	(f) shame
Y -को :लज्जा (f) आना	(i) to feel shy, to feel ashamed, embarrassed
लज्जास्पद	(adj.) shameful
लटकना	(i) to hang, dangle
लटका	(m) trick, gimmick
लटकाना	(t) to dangle, hang
लट्ठमार	(adj.) harsh, blunt, strong
लड़कपन	(m) childhood, puerility
लड़कीवाला	(m) a member of the bride's party
लड़ना	(i) to fight

लड़ाई	(f) fight, contest
लताड़	(f) abuse, railing
लताड़ना	(t) to scold, to abuse
लती	(adj.) addicted
Z- से लथपथ (adj.) होना	(i) to be covered with Z
लद से	(adv.) with a crash
Z -से लदना	(i) to be laden with Z, to be buried under Z
लद्दू घोड़ा	(m) small pack-horse
लपकना	(i) to stride, rush forth
लम्ब	(m) a perpendicular
लम्बा	(adj.) long, tall
(लय होना)	(i) to be absorbed
ललचना	(i) to be tempted
लहर	(f) wave, convulsion due to poison
लाख	(num.) 100,000
लाज़िम (लाजिम)	(adj.) necessary, obligatory
लाड़ला	(m) dear, darling
लात	(f) kick, leg, foot
लापता (adj.) होना	(i) to disappear, (lit. to be without an address or a trace)

लाभ	(m) profit
X -से :लाभ (m) उठाना	(t) to exploit X, to profit from, to take advantage of X
X -का :लाभ (m) उठाना	(t) to exploit, take advantage of X
के लायक (लायक़)	(adj.) worthy (of), worth
लाल	(adj.) red
लालच	(m) greed, avarice
लालटेन	(m) lantern
लालसा	(f) desire, with
लाला	(m) a respectful term for a Kayastha
लाश	(f) corpse, body, carcass
लिख (v) डालना	(t) to dash off, write (quickly), scribble off
लिप्त	(adj.) absorbed, indulged
लिबास	(m) dress, clothing
लिहाज़ (लिहाज)	(m) regard, deference
Z -का :लिहाज़ (m) करना	(t) to show deference to Z
लुटना	(i) to be robbed, undone, lost
लुप्त	(adj.) disappeared, extinct
:लुप्त (adj.) हो (v) जाना	(i) to fade away, disappear
लू	(f) the hot summer wind

लूटना	(t) to rob, to plunder, to grab
लेटना	(i) to lie down
लोक-प्रेम	(m) philanthropy, altruism
लोटा	(m) a small metal pot for holding liquids
लोहा	(m) iron
लौंडा	(m) servant boy, urchin
लौंडी	(f) maid, servant girl, slave girl
लौ	(f) devotion, flame
X - से :लौ (f) लगाना	(t) to devote oneself to X
लौटना	(i) to return

व

वंचित	(adj.) deprived
वक्त (वक़्त)	(m) time, occasion
वकील (वक़ील)	(m) attorney, lawyer
वजीर (वज़ीर)	(m) minister; queen (in chess)
वधिक	(m) butcher, slaughterer
वरना	(conj.) otherwise
वर्ग	(m) class, group

Z -के लिए वर्जित (adj.) होना	(i) to be forbidden to Z, to be prohibited to Z
वर्णन	(m) description
वर्ष	(m) year
वर्षा	(f) the rains
वली	(m) saint
वल्लाह	(intj.) by Allah!
वश	(m) authority
के वश में	(adv.) under (someone's) thumb
वसूल (adj.) होना	(i) to be procured, to be realized, to be obtained
वसूली	(f) collection of debts or dues
वाक्य	(m) sentence
वाणी	(f) speech
वातावरण	(m) atmosphere
वाद-विवाद	(m) discussion, debate, arguement
वादा (वायदा)	(m) promise
वापसी	(f) return
वास	(m) habitation, dwelling place
वार्षिक	(adj.) annual
विकास	(m) growth, expansion, development

विग्रह	(m) fight, struggle
विचार	(m) opinion, thought, mind, conscience, notion
X - पर :विचार (m) करना	(t) to consider X
विचारवान्	(adj.) sensible, thoughtful
विचार-शक्ति	(f) mental power
विचारशील	(adj.) rational, thoughtful
विचार-शून्य	(adj.) without sense, dullwitted
विचित्र	(adj.) peculiar, strange, unique, weird
विजय	(f) victory, triumph
विजयी	(adj.) victorious
विद्वान्	(m) scholar
विद्रोह	(m) rebellion
विद्रोहमय	(adj.) resentful, rebellious
विद्या	(f) knowledge, science
विद्यालय	(m) college
विद्युत्-प्रवाह	(m) electric current
विधवा	(f) widow
विधि	(f) fate, rule, precept
विनम्र	(adj.) humble, modest, decent

विनय	(f) modesty, decorum, good behavior, meekness
विनयशील	(adj.) humble, modest, polite
विनिमय	(m) exchange
विनोद	(m) humor, fun, amusement, entertainment
के विनोदार्थ	(pp) for the amusement of
विपत्ति	(f) misfortune, calamity, bad days
विभाग	(m) part, portion, section
विरक्त	(adj.) indifferent
विरक्ति	(f) indifference
विरह	(m) separation
के विरुद्ध	(pp) contrary to, against
विलास	(m) luxury, material comfort
विलासिता	(f) pleasure, luxury
विलासी	(adj.) pleasure-loving, hedonistic
विवश	(adj.) helpless, compelled
विवशता	(f) helplessness
विवाह	(m) marriage, wedding
विविध	(adj.) various
विवेक	(m) discretion, judgement, discrimination

विशाल	(adj.) large, great, extensive
विशेष	(adj.) special, particular
विशेषकर	(adv.) especially, particularly
विश्राम	(m) rest, repose
Y -को :विश्वास(m) आना	(i) to believe
X - के ऊपर :विश्वास(m) करना	(t) to trust, to have confidence in X, to rely on X
X - पर :विश्वास (m) दिलाना	(t) to assure X
X - को :विश्वास (m) होना	(i) to have confidence in X
विष	(m) poison
विषय	(m) subject, topic, affair
Z - के :विषय में	(pp) about Z, regarding Z
विषय-वासना	(m) sensual pleasure
विषाद	(m) sorrow, melancholy
विषैला	(adj.) poisonous
विस्तर (बिस्तर)	(m) bed, bedding
विस्तार	(m) extent, breadth
वीरता	(f) manliness, bravery, courage
वीरान	(adj.) deserted
वीराना	(m) desolate place

वृतान्त	(m) incident, story, tale, description
वेतन	(m) salary, pay
वेष-भूषा	(f) attire, clothing
वैश्या	(f) prostitute, harlot
वैधव्य	(m) widowhood
वैभव	(m) magnificence, granduer, wealth
वैमनस्य	(m) enmity, dislike
वैरी	(m) enemy
वैशाख	(m) the second Hindu month (April-May)
व्यक्तिगत	(adj.) individual, personal
व्यतीत	(adj.) gone, past
:व्यतीत (adj.) होना	(i) to pass (of time)
व्यथा	(f) agony, pain, anguish
व्यर्थ	(adj.) useless, futile, vain
व्यवसाय	(m) occupation, vocation
—व्यवसायी	(m) businessman
व्यवस्था	(f) plan, order, arrangement, system
व्यवहार	(m) behavior, conduct, treatment
व्यवहारी (adj.) लोग	(m) the people who observe the traditional customs

व्यसन	(m) (bad) habit, addiction
V - ने का :व्यसन (m) पालना	(t) to cultivate or take up the habit of V-ing
व्याप्त	(adj.) permeated by, penetrated by
व्यावहारिक	(adj.) practical
व्यूह	(m) array
व्यूह-रचना	(m) tactics, strategy

श

शंका	(f) doubt, suspicion
:शंका (f) करना	(t) to doubt, to express a doubt
शक्ति	(f) power, strength
शत्रु	(m) adversary, enemy
शब्द	(m) word, noise, sound
Z - की (शरण आ (v) पड़ना)	(i) to find shelter with Z
शराब	(f) wine, liquor
शरारत	(f) mischief
शरीक	(adj.) participating
:शरीक (adj.) करना	(t) to include

:शरीक (adj.) होना	(i) to participate
शर्त (f) लगाना	(t) to bet
शर्बत	(m) a sweet drink, sherbet
Y - को शर्म (f) आना	(i) to be ashamed
शह	(m) a move in chess, check
शहसवार	(m) a skilled horseman
शान	(f) splendor
:शान (f) जमाना	(t) to state impressively and authoritatively, to show off
शान्त (adj.) करना	(t) to satisfy, to pacify
शान्त (adj.) हो (v) जाना	(i) to be quieted, pacified
शान्ति	(f) peace, calm
शान्तिपूर्वक	(adv.) peacefully
शामत	(f) adversity, bad luck
शामिल (adj.) होना	(i) to join, to be present
शायद ही	(adv.) scarcely, hardly
शालीनता	(f) deference, humility
शासन	(m) authority, rule
X - पर :शासन (m) करना	(t) to govern X, to rule over X
शासनकाल	(m) period of rule or authority

शासन-विभाग	(m) government machinery
शाहेरूम	(m) some (particular) king, (lit. king of Rome)
शिकन	(f) wrinkle, line, crease
शिकार	(m) hunting, prey
शिकार (m) खेलना	(t) to hunt (sport)
शिकायत	(f) complaint
X -की :शिकायत (f) करना	(t) to complain about X
शिक्षा	(f) education
शिखा	(f) topknot
शिशु	(m) baby, child
शीघ्र	(adv.) soon, immediately, early
शुद्ध	(adj.) pure
शुभ	(adj.) auspicious
(शुरू करना)	(t) to begin
शूर	(m) warrior, champion
श्रृंगार	(m) adornment (a term usually used for women), ornament, cosmetic
शेर	(m) a couplet of (Urdu) poetry
शैतान	(m) P.N.; Satan, nasty fellow
शोक	(m) anguish, mourning

शोकमय	(adj.) anguished, grief-stricken
शोर	(m) outcry, tumult
:शोर-गुल	(m) fracas, noise
:शोर (m) मचाना	(t) to make an outcry
शौक़ (शौक)	(m) inclination, fondness
श्याम	(adj.) dark, black
श्रद्धा	(f) faith, reverence
श्रेष्ठता	(f) supremacy
श्वान-भाषा	(f) dog's language

स

संकट	(m) distress, danger
संकोच	(m) hesitation, shyness
:संकोच (m) करना	(t) to hesitate (to)
संक्षेप में	(adv.) briefly
संगी	(m) friend, companion
संगठित	(adj.) organized
संग्राम	(m) battle, fight, contest
संग्राम-क्षेत्र	(m) battle-field

संघर्ष	(m) conflict
संचित	(adj.) collected, saved
:संचित (adj.) करना	(t) to save, to hoard
संतोष	(m) contentment
:संतोष(m) करना	(t) to be contented, satisfied
संध्या	(f) twilight, evening, dusk
संभलकर	(adv.) carefully, cautiously
संभलना	(t) to be careful, alert
संभव	(adj.) possible
संभालना	(t) to get (something) ready, to take care of, to hold back
संयम	(m) abstinence, restraint, moderation
संयोग	(m) accident, unforseen good luck
संयोग की बात	as it happened, it so happened
संसार	(m) world, this world, worldly existence
संस्कार	(m) sacrament, consecration, refinement
नये :संस्कार (m) ग्रहण करना	(t) to be reborn (lit. to acquire new संस्कार)
सकुचाना	(i) to hesitate, to be shy
सकोरा	(m) an earthenware bowl or cup
सखि (=सखी)	(f) (girl) friend

सचमुच	(adv.) really
सच्चा	(adj.) true
सजल	(adj.) full of tears (lit. with water)
सजना	(i) to be arranged, to be decorated, ornamented
सजा (सज़ा)	(f) punishment
सज्जन	(m) good person, person, gentleman
सज्जनता	(f) gentlemanliness
सड़ना	(i) to rot, spoil
सताना	(t) to irritate, to bother
सत्कार	(m) hospitable reception, welcome
X -का सत्कार (m) करना	(t) to receive X, to welcome X
सत्य	(m) truth
सत्य बनना	(i) to become true, to be realized
सत्रहवां	(adj.) seventeenth
सदा	(adv.) forever, always
सदैव	(adv.) always
सद्गुण	(m) good quality
सन	(m) a kind of flax
सनद	(f) proof, testimony
सन्देह	(m) suspicion, doubt

सन्ध्या	(f) evening, twilight, dusk
सन्नाटा	(m) stillness
सपूत	(m) a good son
सप्ताह	(m) week
सफर (सफ़र) (m) करना	(t) to travel
सफल	(adj.) successful
सफलता	(f) success
सफ़ाई (सफाई)	(f) cleverness, dexterity; cleanliness, innocence, purity
:सफ़ाई (f) देना	(t) to prove one's innocence
सफ़ाचट (सफाचट)	(adj.) completely clean or blank
सफाया	(m) destruction, killing
X -का सफाया (सफ़ाया) (m) कर (v) डालना	(t) to do away with X
सफेद (सफ़ेद) झूठ	(adj.) (lit. white lie) a complete lie
सबक (सबक़)	(m) lesson, moral
सब-के-सब	(adj.) all
सबूत	(m) proof, evidence
सबेरे (सवेरे)	(adv.) in the morning, at dawn
सब्र	(m) patience
सभ्य	(adj.) cultured

सभ्यता	(f) civilization, way of life; पुरानी सभ्यता the old order
Z - के समकक्ष (adj.) होना	(i) to be in the same class as Z, to be equal to Z
समझ	(f) understanding
X - को Z समझना	(i) to consider X (as) Z, to think X (to be) Z
समझाना	(t) to console, advise
समझाना-बुझाना	(t) to straighten out, to teach
समतल	(adj.) level, even
समर्थ	(adj.) strong, capable
समर्थन	(m) support, corroboration
X - का :समर्थन (m) करना	(t) to second, to corroberate, to attest, uphold X
समस्या	(f) problem
समाचार-पत्र	(m) newspaper
समाज	(m) society
समाधि	(f) trance, concentration, meditation
समाप्त	(adj.) completed
:समाप्त (adj.) हो जाना	(i) to be completed, come to an end
के समीप	(pp) near
समीपतर	(adj.) closer, nearer

समूह	(m) group, crowd
सम्पत्ति	(f) property, possessions
सम्पन्न	(adj.) prosperous
सम्पादक	(m) editor
सम्पूर्णतः	(adv.) entirely, wholly, completely
सम्पूर्ण रूप से	(adv.) entirely, wholly, completely
सम्प्रदाय	(m) sect, school, tradition
सम्मान	(m) respect, honor
X - का सम्मान (m) करना	(t) to show respect to X
सरकना	(i) to slide, slip
सरकार	(m/f) (usually as a form of address) a term of great respect, your Lordship, sir
सरगना	(m) ring-leader, chief
सरपट	(adv.) the galloping of a horse
:सरपट भाग (v) निकलना	(i) to gallop away
सरलता	(f) simplicity, innocence, sincerity
सरसों	(f) mustard seed
सरासर	(adv.) completely, entirely
सरूर	(m) intoxication, elevation
:सरूर में आना	(i) to become intoxicated, to get high

सरोकार	(m) business, concern
सर्वत्र	(adv.) everywhere
सर्वप्रिय	(adj.) favorite (lit. dear to all)
सर्वश्रेष्ठ	(adj.) foremost
सलाम (m) करना	(t) to salute, greet
X - से सलाह (f) करना	(t) to consult X, to confer with X
सवाद (स्वाद)	(m) taste
सवा दो	(num.) 2¼
सवार	(m) rider
X - पर :सवार (adj.) होना	(i) to get into or on X, to ride X
सवाल	(m) question
सशंक	(adj.) apprehensive
ससुराल	(f) in-law's house
सहज	(adj.) easy, simple
:सहज बुद्धि	(f) intuition
सहनशील	(adj.) forbearing
सहना	(t) to tolerate, endure, to bear, to stand
सहलाना	(t) to pat, to pet, tickle; fig. to be good to, overgentle with
सहवर्गी	(m) fellow, co-member

सहसा	(adv.) suddenly
सहानुभूति	(f) sympathy, warmth
सहायक	(m) supporter, assistant
सहेली	(f) (female) friend, companion
सहिष्णुता	(f) forbearance, tolerance
सांकेतिक	(adj.) allusive, symbolic
:सांकेतिक भाषा	(f) sign-language
सांड़	(m) bull
सांझ	(f) evening
सांवला	(adj.) dark, tawny
साक्षी	(f/m) the act of witness; a witness
साग	(m) vegetable, (something that grows wild and does not have to be paid for); here, something of little value
सागर	(m) sea, ocean
साड़ी	(f) sari
साढ़े	(adj.) with one half more, e.g. साढ़े ना nine and a half, 9:30
X -के साथ दगा (दग़ा) करना	(t) to deceive, to betray X
(साथ लेना)	(t) to get to, join in
साथ वाला	(m) companion
साथी	(m/f) companion, colleague

सादा	(adj.) simple
सादी-ब्याह	(m) marriage ceremony and related activities (सादी coll. of शादी)
साधन	(m) means
साधु	(m) mendicant, holy man, saint, ascetic
सानना	(t) to mix
सानी	(m) fodder
सानी-पानी	(m) fodder and water
सान्त्वना (f) देना	(t) to sympathize with, to console
साप्ताहिक	(adj.) weekly
साफ (साफ़)	(adj.) clean
:साफ-साफ लिखना	(t) to write very clearly or neatly
:साफ़-सुथरा	(adj.) neat and clean
साबक़ा (साबका)	(m) situation
Y - को -Z का :साबक़ा (m) पड़ना	(i) to find oneself in a Z situation
सामंजस्य	(m) propriety, congruity, symmetry
सामने	(adv.) before, in front of
सामर्थ्य	(f) ability, power
सामाजिक	(adj.) social
साम्राज्य	(m) empire

सायत	(f) proper (auspicious) time, hour
:सायत (f) बताना	(t) to decide a particular time according to astrological calculations
साया	(m) shadow, shade
सारा	(adj.) all
साल	(m) year
:साल-भर	(adv.) all year
Z - को :साल (m) लगना	(i) (for Y) to take Z a year (to V)
साला	(m) brother-in-law (wife's brother)
सालाना	(adj/m) yearly; annual income; anything annual
साहस	(m) courage, strength, nerve, temerity
V - ने का :साहस (m) होना	(i) to ahve the courage to V
साहित्य-क्षेत्र	(m) literary field
साहु	(m) (with जी used as a term of address) shopkeeper
सिकुड़ना	(i) to shrink, to be cramped
सिकोड़ना	(t) to draw together, contract, compress
सिखाना	(t) to instruct, to teach
सिट्टी	(f) senses, wits
Y -की सिट्टी-पिट्टी (f) भूलना	(t) to lose one's wits, to be speechless

सितारा	(m) star
सिद्ध (adj.)करना	(t) to prove
सिद्धान्त	(m) principle
सिद्धि	(f) success, power, skill, the supernatural result obtained through yogic practice
सिपाही	(m) a watchman, messenger, the servant who along with his other duties is usually the one sent to deliver messages
सिफ़र (सिफर)	(m) zero
सिर	(m) head
:सिर (m) खपाना	(t) to toil, to do work which one dislikes
:सिर (m) चढ़ाना	(t) to spoil
:सिर झुकाकर	(adv.) humbly, politely, respectfully
:सिर (m) झुकाना	(t) to bow the head, to bend the head, to lower the head
:सिर (m) धुनना	(i) to grieve, to tear one's hair
:सिर-मगज़न (सिर-मगजन)	(m) mental effort
सिरहाना	(m) pillow
Z -के :सिरहाने बैठना	(i) to sit by Z's side
सिलसिला	(m) state of affairs, arrangement
के सिवा (सिवाय)	(pp) except (for), apart from, besides

सिवाना	(m) border, boundary
के सिवाय (सिवा)	(pp) except (for), apart from, besides
सिंहासन	(m) throne
सिंही, सिंहनी, सिंहिनी	(f) lioness
सींग	(m) horn (of an animal)
:सींग (m) घुसेड़ना	(t) to gore
:सींग (m) चलाना	(t) to attack with the horns
:सींग (m) चुभा (v) देना	(t) to pierce with the horns
:सींग (m) मारना	(t) to attack with the horns
:सींग (m) मिलाना	(t) to lock horns
सींचना	(t) to irrigate
सीधा	(adj.) straight, plain
सीधापन	(m) simplicity
सीधे मुंह	(adv.) in a normal way, decently
:सीधे मुंह बोलना	(i) to speak politely, decently
सुख	(m) joy, pleasure
सुख-चैन	(m) comfort, happiness
सुखद	(adj.) pleasant, pleasing
सुखी	(adj.) happy
सुझाना	(t) to suggest

सुदूर	(adj.) distant, very far
सुदृढ़	(adj.) firm, resolute
सुध	(f) memory, consciousness, recollection, care
सुधार	(m) reform
सुधारना	(t) to improve, to correct
सुधि	(f) remembrance, awareness
Y - को X -की सुधि (f) होना	(i) to be aware of, to think of X
सुपर-रायल	(adj.) "super-royal", very large
सुपुर्द	(m) charge, care
X - को Z -के (सुपुर्द करना)	(t) to entrust X to Z
सुबासित (सुवासित)	(adj.) fragrant, sweet-smelling
सुरमा	(m) powered antimony used as a cosmetic for the eyes
सुराज	(m) (coll. for स्वराज्य), self-government, independence
सुरेश	(m) P.N.
सुर्ख (सुर्ख़)	(adj.) red, scarlet
सुलझाना	(t) to unravel, to disentangle, to solve
सुला (v) देना	(t) to put to sleep
सुस्ती	(f) laziness

सुहाग	(m) good fortune, in particular the happy state of a woman whose husband is alive
सूंघना	(t) to sniff, nuzzle
सूअरि (= सूअरी)	(f) sow
सूक्ति	(f) good saying, proverbial wisdom
सूख (v) जाना	(i) to dry up
सूखे साग	(m pl) cooked vegetables without juice (lit. dry vegetables)
Y - को X -:सूझना	(i) to think of X (lit. to be impressed by, to be struck, to conceive of X, to perceive (with a negative)
सूट	(m) suit, dress
सूती	(adj.) cotton
सूद	(m) interest, profit
सूद-:ब्याज	(m) interest (on a loan)
सूना	(adj.) desolate
सूनापन	(m) loneliness, emptiness
सूरत	(f) face, appearance, looks
सूरमा	(m) warrior
सेंदुर	(m) vermilion
सेना	(f) army
सेर	(m) a unit of weight, approximately 2 pounds

सेवक	(m) servant, your servant (the speaker)
सेवा	(f) service
X - की :सेवा (f) करना	(t) to serve X
सेवा-समिति	(f) group of volunteers for social service work
सैकड़ा	(adj./m) a hundred
सैकड़ों	(adj.) hundreds of
सैनिक	(m) soldier
सैर (f) करना	(t) to stroll, to walk, to go for a walk
सैर-सपाटा	(m) a pleasure trip, stroll, trip
सोंठ	(m/f) dry ginger
सोचना	(t) to think, wonder
सोता	(m) sleep, complete silence
सोना	(i) to sleep
सोना	(m) gold
सोलहों आने का	(adj.) 16 annas worth, i.e., total, complete
सौतेली	(adj.) step; in सौतेली मां step-mother
सौभाग्य	(m) good luck, good fortune
सौर-गृह	(m) room where delivery takes place
सौहार्द	(m) cordiality, friendship

स्टाक	(m) stock, merchandise
स्तम्भित	(adj.) stunned, petrified
स्थान	(m) place, position
स्थायी	(adj.) permanent
स्थिर (adj.) करना	(t) to fix, to decide (on)
स्थूल	(adj.) fat, big, bulky, coarse
स्नान	(m) bath
:स्नान (m) करना	(t) to bathe
स्नेह	(m) affection, love
स्पष्ट	(adj.) frank, clear
स्फूर्तिवर्द्धक	(adj.) stimulating
स्मृति	(f) memory
स्वच्छन्दता	(f) independence, absence of restraint
स्वतन्त्र	(adj.) unrestrained, free, independent
स्वतन्त्रता	(f) independence
स्वप्न	(m) dream
स्वभाव	(m) nature, disposition, character
स्वभावत:	(adv.) naturally
स्वयंसेवक	(m) volunteer social worker
स्वर	(m) voice, tone of voice

स्वराज्य	(m) self-government
स्वर्ग	(m) heaven, paradise
स्वर्गीय	(adj.) the late, the deceased, (lit. one who has gone to heaven)
स्वस्थ	(adj.) robust, strong, healthy
स्वांग	(m) impersonation
X - का स्वांग (m) भरना	(t) to impersonate X, to play the role of X
स्वागत	(m) welcome
X - का स्वागत (m) करना	(t) to welcome X
स्वाद	(m) (good) taste, relish, appetite
स्वाधीन	(adj.) free, independent
स्वाधीनता	(f) liberty, freedom
स्वामिनी	(f) mistress
स्वामी	(m) lord, master
स्वार्थी	(adj.) selfish
स्वीकार करना	(t) to accept

ह

हंस	(m) swan, goose
हंसी	(f) laughter, joke

Z - से :हंसी (f) करना	(t) to joke with Z
:हंसी में उड़ जाना	(i) to be laughed off, to be not taken seriously
हक़ (हक)	(m) right, authority
हक़ीम (हकीम)	(m) doctor (Unani)
हज़म (हजम) (adj.) करना	(t) to digest
हज़रत (हजरत)	(m) ~~the fellow~~, an honorific word used before the names of prophets and religious leaders of Islam; a more general term of deference
हज़ार (हजार)	(num.) thousand
हज़ारों (हजारों)	(indef.num.) thousands of
हटा(v) लेना	(t) to turn away, to remove
हड्डी	(f) bone
हड़बड़ाना	(i) to be agitated, to be precipitate, to hurry; हड़बड़ा कर भीतर से निकला came rushing at
हत्या	(f) murdering, slaying
X - की हत्या (f) करना	(t) to slay X, murder X
हथेली	(f) palm of the hand
हद	(f) limit, boundary
हमदर्दी	(f) sympathy
हर	(adj.) each, every
:हरगिज़ नहीं	(adv.) never, certainly not

हरज (हर्ज़)	(m) loss
हरदम	(adv.) every moment
हरम सरा	(m) harem, seraglio; title of a story
हरामख़ोर (हरामखोर)	(adj./m) one who lives off others (a free-loader), a lazy person (a term of abuse)
हर्फ़ (हर्फ)	(m) word, letter
हर्ष	(m) joy, happiness, delight
हल	(m) plow
हल	(m) solution
(:हल करना)	(t) to solve
हलक (हलक़)	(m) throat
हलका	(adj.) light, cheap, gentle
हलचल	(f) tumult
हलवा (हलुआ, हलुवा)	(m) various wheat dishes; in India usually cream of wheat sweetened with butter and sugar
हल्दी	(f) turmeric
हवा	(f) air
X - की हवा (f) बांधना	(t) to talk up X, to boast, to fabricate about X
हसरत	(f) grief, regret, strong desire

हसरत-भरा	(adj.) full of regret
हस्ती	(f) existence
हांक (f) लगाना	(t) to shout
हांकना	(t) to drive (animals with a stick)
हांड़ी	(f) a small earthenware pot or jug
हाजिर (हाज़िर)	(adj.) on hand, present
X - की हाज़िरी (हाजिरी)(f) लेना	(t) to take the attendance of X (e.g., a class)
हाथ	(m) hand, a length measuring from the extended fingertips to the elbow
:हाथ (m) उठाना	(t) to raise a hand, to strike (in certain contexts) to greet
:हाथ-पांव (m.pl.) जोड़ना	(t) to beg
:हाथ-पांव (m.pl.) पटकना	(t) to writhe
:हाथ-पांव (m.pl.) फूलना	(i) to swell
Z - के :हाथ बेचना	(t) to sell to Z
दो-दो :हाथ होना	(i) to exchange a few blows
:हाथों-हाथ बिकना	(t) to be sold quickly, to sell like hot cakes
हाथी	(m) elephant
हादसा	(m) calamity, accident
हानि	(f) loss

हाफ़िज (हाफिज)	(m) protector, guardian
हाय	(intj.) alas, an exclamation indicating regret or pain
:हाय-हाय (f) करना	(t) to bewail, moan
हार	(m) garland
हार	(m) field, meadow
हार	(f) defeat
:हार-जीत	(f) defeat and victory
हारना	(i/t) to lose, to be defeated
हालत	(f) condition, circumstances
हाल में	(adv.) recently
हालांकि	(adv./conj.) although
हाशिया	(m) margin
हास्यरस	(m) humor
हास्यास्पद	(adj.) ridiculous
हाहाकार	(m) lamentation
हिंसक	(adj.) predatory
हिचक	(f) hesitation
हित	(m) benefit, good, welfare
Z - के नाम (हिबा करना)	(t) to allot, to assign, to bequeath to Z

हिमाक़त (हिमाकत)	(f) folly, stupidity
हिम्मत	(f) courage, bravery, spirit
Y - को V ने -की :हिम्मत (f) पड़ना	(i) to dare to V
:हिम्मत (f) हारना	(t) to loss courage, to lose heart, to give up
हिलाना	(t) to shake, to wave, to wiggle back and forth
हिसाब	(m) account, calculation, arithmetic
हिस्सा	(m) portion, part
हीरा	(m) diamond, P.N.
हीला	(m) evasion, pretense
:हीला (m) करना	(t) to pretend
हुक्म (हुकुम, हुक्म)	(m) command, order
हुक्का	(m) hubble-bubble pipe
:हुक्म (m) देना	(t) to command, order
हुजूर (हुज़ूर)	(form of address) term of respect, sir, lord
हृदय	(m) heart
हृष्ट-पुष्ट	(adj.) robust, healthy, husky
हेकड़ी	(f) rudeness
हैसियत	(f) capacity, ability
होकर	(adv.) being, as

हो गुज़रना	(i) to have passed (one after another), to have come and gone
होनहार	(f) luck, fate
होली	(f) the Holi festival, (the color festival)
:होली (f) खेलना	(t) to celebrate Holi
होश	(f) consciousness, sense
होश (m.pl.) उड़ना	(t) to be awed, terrified
हौसला	(m) courage, daring